









#### त्रीजी वृर्गा ॥ — अवस्थ

## ( शायत्रीकृत नामक अञ्चलक )

REPLY, ENTITLED
"A TORMENT TO THE IRRELIGIOUS."

अंतरेक अनेकाएंक उद्यम क्वं अद्याकामं अध्यान्न प्रणाष्ट्र दिकाम् त्यम् द्राम्प्रदर्भाजनाकान्नि क्वेक त्यम् आस्ट्र-

Repared and Published with the Assistance of a Pundit.

By a Person wishing to defend and disseminate Religious principles For the Benefit of his countrymon. Werero Kroson scarnes scarnes 22011

> Sumarhara Chundrica Press. Calcutta 1823

almage all assign to the



### ॥ अधिक्षा ॥

**बिरोके काकविक्वतेक्तामारं योककार**मारं । श्रकामिक मन्द्र: श्रमा: ख्रव्ह भ्रूब्द भर्मनार ॥ अपू-. इते अंकालने भारमान मामारान हात्रुक्षावक आनाव आ-में अहार कार्य करते में है। में होतार निष्टा होने की में भी कार्य करते में हैं। में की में में में में में में श्चर्माद्वाहने त्याञ्चल ॥ अभिञ्जालि श्चरानि अञ्चानि विविद्यात्रिकः। अभिक्रमुक्ताविक्याति अक्कानि क्रुकानिक ॥ अवस्थितिक कान्यानि आस्त्रानिक ब्ह्या अवार्ष । सार्ड्डमार क्रेडकंग्रेस अधारकार्जर मान्यवान् ॥ विस्माकामकामकाका धारमाका म्बर्ग । बुर्ग. । वुर्ममाञक्ष्यक्वे रत्यारंदर्र ८ मैक्टिंग ॥ कम् बेद्धाक्तास्त्रा मैट्टिनैका विशासिक। मैकार्जकार्तकाश्वका दुर्मास्य अर्थारेका रिका॥ त्यावीर त्याची कृभाविद्व विश्विः भाष्ट्रियाम्ब्रक्त । नानेनी धानेनी ज्य 



## प्रा व्रम्मांग सर्दः )

स्वाह संदृ द्वे स्ट्राम्य स्था ।। स्वाह त्याह सर्थी स्थान स्वाह मी स्वाह त्याह स्थान स्थान स्थान । स्वाह संदृ वर्ग स्थान स्थान स्थान ।। (भाष ते सुरंप स्थाल अञ्चर्र)

খ্যোবেত্র ভাষা ॥

कु मार्ग हम्, विक्र विश्व मार्ग , वार्मि त्यंत्र कुर लक्षा एम । विश्वक मार्क्य वार्मि त्यंत्र कुर लक्षा एम । विश्वक मार्क्य वार्मि क्षेत्र कार्य क्षेत्र वार्मि क्षेत्र कार्य ।



# ( Amagania ? )

## N अक्रकातित भूमिका ।।

हित्र सारक्षत्व अधाम त्यिलित्व वैर्पेअर्थ्यायमा दगकी दाविक्रम करिंगाहितन अपील जिला विविध्य कुर्धित बाडांब दुब्धं खांग्रध्य न्यास्क्रमा स्था के माद्रांत्रम् विग्रामीमारं मुध्यत व्यात्रव डेडेव धानम मुक्तिमारी तिथिमाम अथन इंडीय समिन्द्र समितायां मूर्य वातांव समी भक्षित देव के का कुमाने ब्राह्मार त्राक्ते विश्वी अवस्था कामात्र अवस्था हिल्ले नाहता ज्यान्य काविवादरंग। यहावं सहाविश्वसीक चयर बाहाद कर देखांक अवत्व हेलांग कामा-- हां उ द्वांत क्षेत्रमा क्षेत्र बाद्रावक क्रि. अर्गोभर्यकामकम अक्टी सम्बन्धि

### ॥ अभीत्रक्षात्रमायगान्त्रक्षेत्र व्यव्यक्षा

आवववधीयकार्त जालिक अञ्चक्रकार्त माछ-शिष्टमान व्यक्तिवासम्मान्न स्वत्यस्थितं अग्रेग कार्द्रमहिष्मान धर्मियासम्मान सम्मान्न अग्रेग अग्रेम किर्मान धर्मियासमान सम्मान्न अग्रेग अग्रेम किर्मिक्त अग्रेग अग्रेम किर्मान सम्मान्न स्वत्यस्थितं अग्रेग अग्रेम किर्मान सम्मान्न सम्मान्न सम्मान्न सम्मान्न स्वत्यस्थितं अग्रेग अग्रेम किर्मान सम्मान्न सम्मान्य सम्मान्न सम्मान्न सम्मान्न सम्मान्य सम्मान्य सम्मान्न सम्मान्य सम्मान्य सम्मान्न सम्मान्य स

सार्थेको आक्नी विचा क्यांको क्या इंद्रवक मा । भेठोळ वरम उरमाराजका अवोक्ष वरमश्रिशाला उरमा क्यांज व्यक्तिव क्यांमा क्यांजिक अव्यक्तिकाम द्वांज ज्योक्ति क्यांपिक उर्वेद्रवेद्राचित्रकाम द्वांज ज्योक्ति क्यार स्वाप्तिक उर्वेद्रवेद्रवेद्राच क्यांजिक ইনামীকা শ্লুছান্ধি শ্লুপ্তিত সঞ্জিবতক গভাৱ-গান্তিক অনেক সন্ধুন সভ্সন্তানদিশের দেহা-भूद हुड वर्शवेर कभी वित्मधार्द्ध अन्यव्याहरू जिल्लाम्बना जाहान देशका नामकि वर्षा र्येज्यापना त्याक क्षेत्रक हमेश्वेष बंदम कार्क्ष्मेक दिवाङ् अधाषङ अम्मूक अनि बाँन छीन-क्ष्रमार्थे व्यास्क्रमां अप्रेसलल नाउ रहेगारी क्षित्रके निर्मात अनाव त्यन म्हानी क्षेत्र चिभाम, रक्ष मिभाम, रक्ष अक्षमाम्, सुद्ध गुरू कड दायेक दुष्डू या येक्सब्रेक वास्त्रीएक चड्डाम वार्षेत्र वार्केट कार्डिक इंद्रिंग स्म शास्त्रित वर्गासेत्विक स्था नेनवार्क अस् ल्या लारांड वेडर्ज अपक्रमार्ज्य विमर्थन काविश वाजामान वार्यमान वास्त्रमान वास्त्रमान वास्त्रमान भेडान <u>विकल्</u> अर्थका अर्थित असीवर्ध अस मुकाम अल्लाक अनाताम अमेजिमक ३ वान-क्क इड्रेड्डएइन, क्राशंब प्रियंब उज्ञान्न अमा हारे अद्वर्ताएकवेन, जिल्लाक्षेत्र गर, यह न्य ভাক্তি প্রাণাজন দেখিভোষ্ট, যে, থাবরীবন প্রশ্ন व्यक्तिक दिलाम अनुमार विभागाम न्या भूल्य भिरा रामाखाको, भिरा कार क्की ग्राही-धान, वाहाङ्गर्मा स्वतन, स्त्रामह ध्रुको, भूभभन्न दहे खर, भ, भारत रहेर, अधाकिकामधी, ता बार्यं काम कम्ब स्मान स्मार सम साहमणे त्नाक् अख्यम् शर्मनेका भवादिश्या भवास्था पिछने प्रवाशने, धायह मरवाम्रास्त नेमूने विके aes एमग्यिका बाक्रियाक्षेत्र कान्य सत्मारक्षमाने व्यन्ते वासाम कर्तम सक्कोंग वेसे निमा क्ली अकारिक भाद्रे लकने, शंध र किवा नाम कार धाराश्चा, किवा वर्गत ह्यांदेड अपिछक्त दिवारान किया गर्जा में जिल्ला अधिका प्रतित अस्त्रीक, किया अर्भार्भन छन् निका-लंब दुर्गत मार्केष्ठ अध्वत अद्भ क्ष्य अद्भा-मार्थ नामप्रशास्त्रेक्ट, यागः मामानामावड, धुकुतिक, द्राष्ट्रिक, क्रिक, ररेकिए, अइस्क श्रुराज्य अनास्य **धर्म कर्म, बुखन्नामः अस** 

रवित अणि अपाछतं विदेश विविध शिक्सित कार्यक्र दियों स्टर्यात अग्रुवस्य वास्त्रसम्बद्ध अप्यापन अप्यापन कार्यक्रित १४ रेरेट्डिक्ट्य, यक्क्स्स, सूक्त कार्योत वर्यक्रित गार्थिक व क्षां जिल्कावस्थ अप्याप भूतित भूवानीमिक्सित. उत्तर व्याहरू ।

मान क्ष्याच्या कामान प्रांतान भारति कामान कामान

असे व्यक्ति अरुष्य क्यंप्तं क्यंप्तं क्यंप्तं क्यंप्तं स्पितां अव्यक्ति प्रमच्यं अत्यक्तं क्यंप्तं अर्थ्यस्य इतिक वर्षे अर्थान्यं वास्तं

अर्वकालक अर्के उपनिष् भूमी पूर गीन जिले-शिम्पाक जिलाक विकास देवींग कर अंगम भारे -ज्ञाम करूने अविनिष्ठाकार अवस्थित द्वर्वानि -वाद्ये, कालक्षकाक्ष्य क्रास्ट्रेड क्रेंचा कार्य भर्मेन राष्ट्रित ब्राइविक्रानंब काटलर्ग विक्रंग अस र्डकार नाम न्यांबाक्याम बाक क्रेम्पन मा रहेरून, अन अवस्थात्म धरवी स्टान दिंश अमार्क्किश्व कर्मात क्यांत्रीक्र रहेक मानाम प्राश्वाकाम डेंग्ज़ाकाम , अक्कान कावितक नहें नक डेज्बनाम विकास किनाम्चिक लिक करी-म अधिका- मिंग्यासिक्सांबर क्षि कालामाय लाक्केक्रापर्वे वाध्मेष्ठ म्हेर्स्य क्राक्र में-अने भूगुंड दर्गिगाइन भिन क्रमा है। का-धाव अरे आवार्ग निगम, नवस्क भन्न सर्कक शुष्ट अवश्राणनार्थ नरत्र , निष्ठु प्रभुवर्जातः अ - " ्रीर क्ष्मार्के भ कवम अंगलेंगे अश में (यवित्याक्तिमान कावासन विक्रम कि व्यक्त उर क्षिक्त हैं इंदे देखवा भवामिका भवश्व

'आध्राष्ट्रमार्भा विक्रिजीमा प्राव धरकावाम দোষে প্রিপ্তুক্তি ও সুরামার চিয়েতে চিয়িত। विशेष्ट्रांक पर्कत्र कर । सम्भोनीक्ट्सोकी क्लानी मीर्येशकी नामित्रीति। त्रम्भे त्रेशकांक तर्र त्रक क्षरकं अएक वास्त्र वास्त्रकं अस्त्र व्यक्तिपुष्ट । क्षिक्र अन्यकि वन्त्रीय गांता क्ष्ट्रेक वैत्रीय प्रधा-(ब वाक्नामार-क बोवदालक मेन्ड कानामें सरे-(तक, क्ष्मू अद्भव प्राच्य कारकेव क्रमां के बिता-करंभ र्रं या तम महाउन्नेक (कार्यामुन्नीयोगांग-व्यार् विकासर्ग मकः वदं । एकरे अस्त्रं भाग उपल्य कारा है कार कराल हिर्मा करात रे निर्वे रावे जासासित क्रांसिक क्रांक क्रे गार्थ, ता, प्रहींव, श्रांक वाहक क्यावेदीत्रक अंत्रमेशामामांता तैकियांक अक्षाक्रि कार्क उ लक्षण दमारंग राष्ट्रामाकामृत क्रिकार लर्जिक् क्षेत्रकाति व्याप्तिकारा व्याप्तक द्वेत्रम् त्रीम भक्दानम्हाम् अन्त्रम् क्वाहेगाह्यः, जस्य न्यः, जर्भवात काजवेयां कर्णकात्म संमात्रांत (वर्षि अपा अन्तर्भ अन्य प्रक्रिक स्त्री अप क्रवत् अप्तर्भ क्रिक्ट क्षेत्र क्षेत्रक क्षेत्रक विकास अपूर्ण अप्तर्भ क्षेत्रक व्यवस्था अप्तर्भ क्षेत्रक स्वापने क्षेत्रक क्षेत्रक व्यवस्था क्षित्रक व्यवस्था अप्तर्भ क्षेत्रक स्वीतर्भ स्वीतर्भ क्षेत्रक स्वीतर्भ स्वीत्रक स्वीतर्भ स्वीत्रक स्वीतर्भ स्वीत्रक स्वीतर्भ स्वीत्रक स्वीतर्भ स्वीत्रक स्वीतर्भ स्वीत्रक स्वीत्र

्वित व्यान्तर्भ, मुक्षाञ्चः बन्न प्रद्रवित्राव निवाह-वने जियंत्रहम द्यारम्हि अमुमानि क्यम अवकी भविमार्थ । विषाभडमार्थि होरिक्ष्म , व्यक्ट-विक रार्ड द्राजा ने द्रमानक प्रधारा हो व भाकी, लर्कि देशकां व्यक्तः मिर्धे वर्षे क्रास्ट्राह्ट कान्त्रनांद्राष्ट्रके अगोभर्षेक्षामा-क्रमा क्रमा कामा विनिष्ठ वहेनाम व्याम कार्त्वा अपादिं गरिनः चिन्त्वन् नापन् त्रानिनाव विकास । भन्म तकने भन्नामा वकः भवा अस्प्रिक: 1) - वेर स्मारक्त अञ्चलका प्रवासीनिक अवव नारं खन्याम दीमाइना अन्हार वास्त्र र्यान्त वालिंगेनाम वामग्रीमाम देशार्थेन क्रियमालकक अभवति धन्न वर्षकार्य उ वाहार्य

क्रीब्राइएम । अधीअ०५ ल्याकाञ्चि पिर्हा प्राप्त ट्रिक्टरांब देखें बेंगंग लाग्राबंध सकाम क्लेने. काताञ्चा अस्त वाजारकाक बरमे, ए।तन्तु, कारा-क शक्य गुन्धां नाभांक्य अन्तरामाने हारुक्रीक-कर्ने, टाप्नेंग भाम ३ दायागायाम् इंज्याने यथा-. मेळ ज्यानेकृ अकुंग नामीनायं हाकातावं श्वावा राज्यापिताक प्रताव स्ट्राह्मी अंस्ट व्रकार लाककाराहासन अन्ते अन्तिम क्षेत्रकर ज्योज् दुञ्चालाभं चर्चेक्वं समाप सर्गिष-भाषाव उद्याणि अर्वेबर शिक्षे वैपीयण्यालयाः वराक्षिक मिरावं कार्मेक् लाम्निकरक राज्य संस्था-वार स्टब्स्ड मिंगम भमन्त केंग्रेंबर अभाग लक्ष्मीई कक्ष्मी इंग क्रिया क्षायमान अंतर्मा-भिष्ट राम्या अवस्थार्यात्वेच टार्मिमारं विक माम हिन्दू हा का अर्थ स्थात का अराद का अराद लिश्व कार क्रियाम द्वामना विश्व विख्या भक्ते भक्तांग्रामिला स्थाप वामहिस्तं

७ अभागाउँ विद्या ति, ज्यानकार्य प्रभावि वाकात्म श्रामिकार्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य अस्ति स्ट्राम्य स्ट्राम्य राज्य स्ट्राम्य अस्ति स्ट्राम्य स्ट्राम्य राज्य स्ट्राम्य अस्ति स्ट्राम्य स्ट्राम्य राज्य विद्यास्य साम्युक्त साम्युक्त स्ट्राम्य राज्य विद्यास्य साम्युक्त साम्युक्त साम्युक्त स्ट्राम्य



जीवाक्यां अन्यूनं ताकारिक अक्ति हिल्किने

বিশ্বর তাং

বি, সা, প, এ,

বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষৎ

প্রভক্তানার

Rommohun Roy's 15. পাষণ্ড পীডন [বামমোহন বাধেব 'চাবি প্ৰয়েশ্ব উত্তৰ' পুস্থকেব প্ৰছান্তব] ১৮২৩ সন। PASHANDAPIRAN (Counter Reply to Rommohun "REPLY TO THE FOUR QUERIES") A D 1823

### **এ**এক্ষঃ। শরণং।



**ধর্মকং** স্থাপনাকাজ্জি দিগের পুকাশিত পুশ 🚉 🍕 করিয়া নর্যপীড়াপ্রাত্ত হইয়া পণ্ডি-**ভাতিমানী** ভাক্তভুজ্ঞানী, স্বানুচরজীবগণ ম-**নোরঞ্না**র্থ স্বীয়বিদ্যাপুভাবে পুথম্তঃ অগ-🙀 ্রাদোষ স্বীকার করিয়া পশ্যুৎ দোষাকর রা নির্দোবে দোবপুক্ষেপপূর্বক তদেবে ার্থ অপূর্ববৃদ্ধিসৃষ্টি করিতেছেন, যেন-ক্তি, পূথনতঃ মহাপক্ষদ্রদে নিমগ্ন হ-🐩 ে সুশরীরে লিগু পঙ্কের কণিকা, কর শীরা স্থানে২ <u>প</u>্রক্ষেপ করিয়া অত্যন্ন সম্ল সলিল করণকপুক্ষালন করিতে যত্ন করে।

### ধর্মদ জাপনাকাজ্জির পুথন পুশা।

ইদানীস্তন ভাকতভ্জানি পণ্ডিচাভিমানি **ব্যক্তিবিশেষে**রা,এবং তদনুৰপখ্ভিনানিতৎ সংসর্গি পড্ডরিকা বলিকাবৎ পতানুগতিক **ज्यानक श**निवाकिता, कि निगृष भाषावावाकन করিয়া স্মূজাতীয় ধর্ম কর্ম পরিত্যাগপূর্বক বিলাতীয় **বর্ম কমে** পুবৃত্ত হইতেছেন,এতাদৃশ সাধু সদাশয় বিশিষ্টসন্তান সকলের সহিত সং সর্গ, যোগবাশিষ্ঠ বচনানুসারে ভদুলোফের অব-শ্য অকর্ত্তব্য কি না ॥ যথা সংসারবিষ্য্রাস-**ङ**्रुऋत्ङायीठिवारिनः । कर्यवुक्ताउग्नुहेः তংত্যজে দন্ত্যজংযথা।। 👩 🛚 ।।

ভাক্তত্ত্জানির উত্তর ৷ কিতাক্তত্ত্ত্জানী কি অভাকতত্ত্জানী ফি তাঁহার সংস্থা কি ভাঁছার অসংস্থা বেকোনব্যক্তি সুস্লাতীয় ধর্ম কর্ম পরিত্যাণ পূর্বক বিলাতীয় ধর্ম কর্মে পুর্ত্ত্বেন্তাঁহাদেরসহিত্তসংস্গতদুলোকের

অর্থাৎ স্বর্মানুষ্ঠায়ি ব্যক্তিদের যোগবাশিষ্ঠ অকর্ব্য। কিছু এক ভাক্তব্দ্ধানী 🛭 এক ভাক্তকন্মী উভয়েই সৃন্ধর্মের লক্ষাণশের একা• শাও অনুষ্ঠান নাকরিয়া পরধ্যানুষ্ঠানেই বহু কালক্ষেপ করে আর যদি তাহারমধ্যে ঐ ভাক্ত ক্মী সেই ভাক্ততভ্জানিকে আপন অপেক্ষা-কৃত নিশিতে জানিয়া তাহার সংদর্গে পাপজ্ঞান করে তবে সেভাক্তকমীরি নিন্দাকেবলহাস্যান্ন-দের নিনিত্তে এবং পাপের নিনিত্তে হয় কি না যেহেতু তত্ত্বজ্ঞান ওকর্মানুষ্ঠান এই দুইকে যদি সমানৰূপে দ্বীকার করাবায় আর ঐ দুইয়ের অনুধানে পুরৃত্ত দুইব্যক্তি বৃষ্ধমপালন নাকরে তবে দূইব্যক্তিকেই ভল্যৰূপে স্থৰ্মচ্যুত পাপী कहायाईँदिक তाहाटा यमि अमुहेरम्र अकवाकि অন্যব্যক্তিকে স্বধর্মাচ্যুত কহিয়া নিন্দা ও তা-হার প্লানিকরে তবে এইন্ধপ হয় যেমন এক সন্ধ অন্য অন্ধকে অন্ধ কহিয়া এবং এক থঞ্জ অন্য

খঞ্জকে খঞ্জকহিয়া নিন্দা ওব্যক্ষ করিতে পুরুত্ত হয় পক্ষপাতরহিত ব্যক্তিনকলে ঐ ব্যক্ষকর্ত্তা অন্ধকে ও খঞ্জকে লজ্জাহীন এবং মদোষ দর্শনে অপারফ জ্ঞান করিবেন কিনা।

ধর্মসংস্থাপনাকাডিক্ষর পুত্রুত্তর। দ্দোষ স্কারে সূতরাং সজ্জনেরা, অজোধ ও অনুভর হয়েন। ভাক্ত তত্ত্বজ্ঞানি শাবু **দৃধর্মে-**র লক্ষাংশের একাংশেরো অনুষ্ঠান করে না কি-ভু বাহে লোক পুতারণার্থ জ্ঞানির ন্যায় ব্যব-হার করে, অর্থাৎ ভণ্ডতত্ত্বজ্ঞানী, যেমন, ভণ্ড-তপদী, ভাক্তকমি শবেুরো সেই ৰূপ মর্থ। কি আশ্র্য্য, পণ্ডিতাভিমানী দ্য়ং ভাক্ত তবুজ্ঞা-নী, অথচ ভাক্তশয়ের অর্থ জানেন না, যে ছেভু, हेरानी उन कर्षिपरिशंद मक्का वन्सनाहि, निका পূজা হোমাদি, পিত্মাতৃ কৃত্য, যাত্ৰা মহোৎ-সব, জপ,যজ্ঞ, দান, ধ্যান, অতিথি সেবা পু-ভৃতি, শুতি মৃতি বিহিত নিত্য নৈমিত্তিক, কাম্য কর্ম্য, সর্বদা দর্শন ও শুবণ করিতেছেন, তথাপি

সুয়ং পুক্ত লক্ষণাকান্ত ভাক্তভ্জানী হইয়া **সম্পূ**ৰ্ণ কিয়। অসম্পূৰ্ণ কৰ্মিদকলকে কোন্শাস্ত্ৰ দৃষ্টিতে নিরপরাথে তাক্তক্মী কহিয়া নিনদা ক-রেন, উভ্যাের নিন্দায় কেবল নিন্দাক্ত্রী পা-পী হয়েন, এদং নহে, যাঁহারা, শ্রোতা তাঁহা-রাও তদ্ধপ, অতএব অপক্ষপাতি ভদুলোকেরা, তাঁহাকেই অন্ধ, বধির, পরনিন্দক, ও পরদেখী ক্ছিবেন কি না। কিয়া ভেঁহ, ভাক্তশব্রে অর্থ অবগত আছেন,কিম্বু, বুঝি,খন্য ভদুলোক নক-লকেও আপনার সমান দোষী করিবার বাঞ্জায় অপবাদ দিতেছেন, দুষ্টের স্বভাব এইৰপইবটে, किन्नु, युगमन्द्रमु अस्म अभवाम यथार्थवाम स्ट्रेत्व না,কোন্ চোর, তিরমূত ও তাড়িত হইলে ভদু-লোকের অপবাদ নাজনায়,তাহাতে কি তাহার চৌর্যদোষখণ্ডন ও ভদুলোকের চৌর্য্যাবধারণ হ-য়,বেচোর,সেচোরই, যেনাপু,নেসাপুই,তাহার जनाथी कनाह श्यना। यहि वन, नायार्क्डि अरनरे যক্তাদি কর্মা, নিদ্ধ হয়, সন্যায়ার্জিতধনে কর্মা, নিন্ধ হয় না অত এব অন্যায়ান্তিত ধনদার। কর্মকরণ পুযুক্তধর্মস স্থাপনাকাণ্ডিকরা, কর্ম করিলেও ভা-ক্তকন্মী´ হয়েন, দেও, অশাব্ৰ,যেহেন্ড, নীনা॰-সাদর্শনে লিপ্লাসূত্রে ভৃতীয়বর্ণকে শুক্ত,এতদ্বিব-য়ের পূর্বপক্ষ করিয়া পশাৎ অন্যায়ার্ক্তিত ধনে ও कर्च, त्रिक इय़, এই निकास कदियाहिन। यथा নিয়মাতিকনঃ পুরবস্যনকতোরিভি। অস্যচার্থ এবং বিবৃতো গুৰুণা । यहा দুব্যার্চ্জন নিয়মা-না॰ কত্বৰ্থত্ব তদানিয়মাজ্জি তেনৈব দুবেএণ কত্ত সিদ্ধি নিয়মাতি কমাৰ্জিতেন দুব্যেণনকত সি-দ্বিত্রিতি নপুক্ষস্য নিয়মাতি ক্রম দোষঃ পূর্ব-পক্ষে मिकारि अर्द्धन नियममा भूकशार्थश्र তদতি ক্ৰমেণাৰ্জ্জিতেনাপি দুব্যেণ কন্ত সিদ্ধি র্ভবতি পুরুষদৈ।ব নিয়মাতিক্রম দোষ ইতি। অর্থাৎ ধনাজ্জনির শাজীয় যে ২ নিয়ন, সে, যজ্ঞার্থ, কি পুক্ষার্থ , যদি, ধনাজ্জ নের শান্ত্রী-র নিয়ম সকল, যজ্ঞার্থহয়, তবে নিয়মার্চ্জি ত

ধনেই যজ্ঞসিদ্ধি হুইতে পারে নিয়মাতিক্রমা-क्किंउधरन यद्धिमिक्ष ह्य ना व्यउ वद भूक्रदात নিয়মাতিক্রন নিমিত্ত দোষাভাব এইপূর্বপক্ষে-রঅনন্তর সিদ্ধান্ত করিয়াছেন, ধনাৰ্জ্জনেরশা-ন্ত্রীয় নিয়ম সকল, পুৰুষার্থ হয়, অতএব নিয়-মাতিকমাজ্জিত ধনেও যজ্ঞ সিদ্ধি হয়, কিন্তু পুৰুষেরনিয়নাতিক্রমনিনিত্ত দোষভাগিতানাত্র, ফলতঃ নিয়মাতিকমার্জ্জিতথনে পুৰুষের স্বত্বজ্জ জন্ম না এবং তৎপুঞাদিরো তদ্ধন, দায়পদা-র্থ হয়না এনত নহে, অতএব অর্জকের নিয়মা-তিক্রন নিমিত্ত দোষের প্রায়শ্তি কহিয়াছেন मनु । यथा । यम्गर्हिए जनार्ब्ह्यं अर्थ कर्माना नुष्क्रना ধনং। তস্যোৎসর্গেণ শুধ্যন্তি জ্বপ্যেন তপসৈ-বচ ৷ অর্থাৎ গর্হিত কর্মে ফলতঃ অসৎপুতিগু-इ कृषिवानिक्यामित्र मात्रा द्वाञ्चन, य धन व्यर्कन করেন, সেই ধনের উৎসর্গে এবং জপেও তপং স্যায় ভেঁহ, শুদ্ধ হয়েন। এব ব্ৰাহ্মণভিন্নজাতিরো গর্হিত কর্মের গারা ধনার্জনে এইক্প পুায়শিত

ছইবেক, যেহেতু, একত্র নির্দ্দিষ্টঃ শান্তার্থোৎ-ন্যবাপি তথা বাধকাভাবাৎ ৷ অর্থাৎ একস্থানে নির্দিষ্ট যে শাস্তর্থ,তাহা অন্যস্থানেওগ্রাহ্য হয় যদি,বাধক নাথাকে,এইন্যায় আছে ৷চোর্য্যধনে এবং চোরনিকটে প্রাপ্তথনে স্বত্বজন্মে না, যেহেন্তু লোক ব্যবহার বিৰুদ্ধ এব শাস্ত্র বিৰুদ্ধ। অত এব চোর হইতে যাজনাদিশারা ও ধনপুহণ ক.. রেন, যে, ব্রাহ্মণ, ভাঁহারো দণ্ড বিধান করিয়া চোরের চৌর্যগ্রনে এবং ব্রাহ্মণের যাজনাদি প্রাণ ও চৌর ধনে স্থাভাব সিদ্ধ করিয়াছেন মনু। यथा। (यान्छ। नाम्निता रुखान्नि 🐈 उ दुान्नाता थन< । याजनावाभारतनाभि यथा रखन खरेथव--সঃ। অর্থাৎ যে, ব্রাহ্মণ, চোরছইতে যাজনও অধ্যাপনার দ্বারা ও ধনগুহণ করেন, ভঁহ, চো-রের ন্যায় দণ্ড ভাগী হয়েন।

পরস্থ, যে, ব্যক্তি, স্বয়ং নিরম্বর পরধর্মানু-ধ্বাননাত্রে নিরভ, অথচ, স্বধর্মানুধ্বানের সাব-কাশ সময়ে মৃতিশাক্ত পুমাণানুসারে সাময়ি-

ক ধর্ম ওরাজকৃত ধর্মেরঅনুষ্ঠানকর্তাকে নিরস্তর পর্ধর্মানুষ্ঠাতা কহিয়ানিন্দাকরেন, সে, সুবর্ম চ্যুত সজ্জননিন্দক পাপিষ্ঠের কি,গতি হইবেক ! यथा। मृजिः। निव्ववर्षाविदतास्वन यस मान्शि-**(का** ভবে**९। माश्रि य**द्भिन **म**्द्रत्कृत क्रिया द्वाङ कृष्ण यः। व्यर्थार मुश्यान् श्रीयम्बद्धान वा, म्थ्याः-नुक्षात्मत्र नावकात्मनमस्य अन्। त्यः नामश्चिक्यर्य ওরাজকৃতধর্ম তাহাও অতিযরপূর্বক পুতিপালন कतिरवन । व्यथवा, खराख मूर्व्हनः व्यर्था ९ मृद्धन সম্বস্থ হউক, যদি, পূর্বোক্তভা কলক্ষণাকান্ত এক ভাক্ততন্ত্ৰানী ও এক ভাক্তকৰা উভয়েই সৃদ্ ধর্মাদির অনুধানাদিতেতুল্যবূপ অন্ধ,থঞ্জ,বধির, ওবান্ন,হয়,কিছু,তাহারমধ্যেঐ ভাক্তত্ত্জানী দুব্যগুণবশতঃ কিয়া চিত্তবিকারবলতঃ কছেন, যে, আমি,পদাচকুদ্ রোচন্দ্রসূর্য দর্শন করিতেছি किया ममुम्बद्धत পुवृख हायन, किया रिववाणी শুবণ করিয়া অন্য২ ব্যক্তিকে উপদেশ করেন, অথবা অত্যুদ্ধ বৃক্ষ শিথরস্থকলগুদ্ণকরিতে অ-

ভূলি মাত্রের হারা ভূমিস্পর্ল পূর্বক উদ্ব্রিছ হয়েন, তবে ঐ অকিঞ্চন ভাক্তকমী ঐঅন্ধ, ২প্ত,বধির,ওবামন,ভাক্তভু**ক্তা**নিকেউপহা**স** ও ব্যক্ত করিতে পারেন, কি, না, এবং অপক্ষ পাতি মহাশয়েরাও ঐ নিলজ্ঞ পুতারক দুরা-শয়'ক কি শবু উদ্বারণ, না করিতে পারেন। ভাক্তভ্জানির **উত্তর। যোগবাশি**ঠে**ভাক্তভ্** জ্ঞানির বিষয়ে যাহালিথিয়াছেন, তাহা যথার্থ বটে,যেব্যক্তিসংসারসুথেআসক্ত হইয়াআমি বু-ক্ষজানীইহাকহে সেকর্মবুক্ষউভয়ভুষ্ট অতএব ত্যৱ্যহয়। সেইৰপভাক্তকৰ্মিরপুতিও দেখিতে हि। मनुः। मृद्ाञ्च मृदु अम्पद् अमृदु नि अशामनः । শৃদু বিদ্যাগমঃ কশি জ্বলন্তম্পিপাতয়ে**ে।** অর্থাৎ শুদুের অন্নগ্রহণ শুদুেরসহিতসম্পত্ শূদ্রাসনেবসা এবংশূদুহইতে কোনবিদ্যাশিক্ষা করা ইহাতেজ্বন্ত বুদ্ধণওপতিতহ্যেন । উদি-তেজগতীনাথেयःকুর্য্যাদ্ভবাবনং । **সপাপি**ই: कथरतुर्जिभूबशाभिकनार्मनर । व्यर्थार मूर्यगाह-

মেরপর যেব্যক্তিদন্ত ধাবন করে সেপাগি৪কছে যে আমিবিফুপূজাকরি।অতিঃ। আসনেপাদমা-রোপ্যযোভুজ্কেরান্ধণঃ কৃচিৎ। মুথেনচারমশ্রাতি जूनाः (गामाः मजकरैनः । अर्थाः जामत्तर्रे পরে পারাথিয়া যেব্রাহ্মণ ভোজনকরে এবং হস্ত-বিনাকেবলগবাদিরন্যায়মুথেরদ্বারা ভোজনকরে সেভোজনগোমাৎ সাহার ত্রন্যহয়। উদ্বত্যবান **ছন্তেন যন্তোয়ংপিবতিহিজঃ।|সুরাপানেনত্ল্য**ণ স্যা মনুরাহপুজাপতিঃ। অর্থাৎ বামহস্তকরণক পাত্রউঠাইয়া জলপানকরিলেসুরাপানতুন্যহয় ইহামনুকহিয়াছেনঅত এবজ্ঞানসাধনেকোনঅং শেৰুটিহইলে সেসাধকত্যজ্যহয় এমত্যেজ্ঞান करत अथ्रवकर्यानुष्ठात मह्मु २ अः म न्यर्य চু,তহ্ইয়াও আপনাকেপবিত্র ও অন্যকেত্যজ্ঞ জ্বানে সেমৃথ্মচ্যুতপ্তস্দােষদর্শনে অন্ধকে কি, কৃছিতেপারাযায়॥

ধর্মসংস্থাপনাকান্দির প্রত্যুত্তর।পণ্ডিতাতি-মানির লিখিতবচনসকল,ভাকতভৃজ্ঞানিত্বপুকা- শক যোগবাশিষ্ঠবচনের ন্যায় ভাক্তকর্মিত্ব বো-ধকপুনাণনহে, কেবল অসম্বন্ধ পুলাপ দারা বা-গাড়ম্বরমাত্র, মনুব্চনে শ্দুামশব্বে, শ্দুের আমা-ল, যেহেতু, পদ্ধানগুহ্ণ, অসম্ভব, আমাল গুহ্ণে অনংপুতিগুছ মাত্র । অসং পুতিগুছের ও সুরা পানাদির মহদৈবমাপুযুক্ত সুরাপান জবনীগন-নাদি নিনিত্ত পাতিত্যও শ্দুান্নপুহণ নিনিত্ত পাতিত্য উভয়ের বিস্তর বৈলক্ষণ্য, যেমন, অ-শুনেধাদি যাগের পুস্তকাধ্যায়ন জন্যকল ও অ-भूरमशानियाश क्रवा बनाक्न উভয়ের **বৈলক্ষ**ণ্য এবং, পুতিমা**সলভ্য আত্মজন্ম নক্ষত্তে ও পুষ্যা** নক্ষত্রে গঙ্গাস্থানে ত্রিকোটিকুলে,জার এবং অক্তি দুরু পার্য মহামহা বাক্ণীতে গঞ্চারানে ত্রিকো-**টি कुलाब्बात अञ्चात উद्घारत्रत्र मरुदेशनक्षण अ-**वः (यमन, मनकानिय(४त । गवानिय(४त ११)-পের অভ্যন্ত তারতম্য।

भृष्त्रणक् भारत्, याजकाष् यज्ञभानदारिकाश न-यक्ष, धर्मानः शासनाकारिक दिशत्र भारतः कः, শুরুযালক এব ১. শুদ্রের সহিত ব্রাহ্মণের একা 🗝 সনে উপরেশনে পাপশুবণে ব্রাহ্মণের বহুত্ব-আপনার একত্ব পুযুক্ত বিশিষ্ট শ্দেরা, আ-পনিই পৃথক্ আসনে উপবিষ্ট হয়েন ৷ অধিকস্তু मृमुयाबनाहि कत्रात (य जकन, रहायमु जिल्हाह) নে, তাবং অসংশূদু অন্তঃজাদিপর, বেহেত্ চারিবর্ণ, চারিযুগেই পুসিদ্ধ আছেন, ভাঁহারদি-গের ক্রিয়াকর্ম, ষট্কর্মশালী ব্রাহ্মণ সকল, চি-রকাল করিয়া আসিতেছেন, এবং অদ্যাববি न १ मृत्याकी अञम् पुराकी विश्वामा शत शत । র তুল্যৰূপে মান্যমানকতা কুটম্বতাও আহার ব্যবহার সর্বদেশেই হইতেছে,কিন্তু, অন্ত্যজ্ঞবা-জিব্যুক্ষণের সহিত এতাদৃশব্যবহার বিশিষ্ট্রা-হ্মণ দূরে থাকুন, সংশ্দেরাওকরেন না, সতএব ভাঁহারা, কেবল অন্ত্যজবর্ণ যাজন দারাপতিত ও অব্যবহার্য্য হৃইয়া সর্বত্র আছেন, ইহা সর্ব বাদিসমত। এবং ব্রাহ্মণের শূদুমাত্রের সহিত একাসনেউপবেশন,পাতিত্যদ্ধনক নছে,যেছে-

তুক, শস্ত্যজ জাতি বৈশ্ব হুইলে সে ওবিশ্পবিত্র কারক হয় এবং তীর্থ গণ, আল্পপাক্ষয়ার্থ ভাহারদিগের সঙ্কবাশা করেন। যথাপানে । অন্তঃজাঃ শুপচান্তাশ্ জবনাদ্যা স্তথৈবচা যদিতে বিষ্ণুভক্তাশ্, বিশৃং পৰিত্ৰয়ন্তি বৈ । স্থাণ্ড জব-मा नि मुंপচপর্য্যস্ত অস্থ্যন্ত জাতি সকল, বিষ্ণুভ জ হ্ইলে, তাহারা ও বিশ্পবিত্রকারক হয়। বুন্ধ रैववरर्ख। नहा वाश्विष्ठ ठोर्थानि रैवकवरणर्भनर्भ-নে। পাপিদত্তানি পাপানি তেষা॰ নশ্যন্তি সঙ্ক-जः। यथ । ९ जीर्थगानता, रेवकातत्र म्यम् न अस्म-ন সর্বদাবাশ্বাকরেন,যেহেভূ, বৈঞ্বের স্পর্শনা-ত্রেই তীর্থগণের পাপিকতৃ কদক্ত,যে,সকলপাপ, তাহা নষ্ট হয়।

কোন্ ব্ৰাহ্মণ, শূদুক্ইতে বিদ্যাত্যাস করেন, কেবল অনুপনীতকালে শূদুশিক্ষকস্থানে বৰ্ণমান লাদি শিক্ষা দেখিতেছি ও দেখিতেছেন, কিন্তু এতব্বিবয়েমনু,বিশেষ কহিয়াছেন। যথা। শু- ু ৰিধানঃ শ্ভাৎবিদ্যা মাদ্দীতা বরাদপি । অত্যাদপি পবংধর্মং জীরত্নং দুযু লাদপি ॥ অর্থাৎ শুদ্ধান্তি হইয়াশ্দুহইতেও উত্তাবিদ্যা
এবং অভ্যত্ম হইতে ও পরমধর্ম এবং কুৎসিত
কুল হইতেও জীরত্ম গুহণ করিবেক।

উ'দতে জগতীনাথে ইত্যাদি বচনেব এ-**ভাৎপর্য। নছে. (य, সূর্ব্যোদ্যানন্তর দত্তধাবন** कर्त्त', विकुशृज्ञानि स्तर्भकार्य अनिकारी इश्न. হেছেতু, দম্ভধাবন,স্থান,ওআচন্ন,তাবৎকর্মে-র ক ত্ সংস্থারক্প অঙ্গ, তাখার যথোক্তকাল ওমজাদির বৈখণে অন্ধিকারিকৃত কর্মের न्। या या विकास मा अविकास विकास विका কর্ত্তারকৃত,দৈব ওপৈত্র কর্ম্ম, গমিল্ক হয়না এব• भूजिमिन कर्जवा सक्तावनस्नामि विकृशृक्षामि কম্ম, যথাকথঞ্চিদ্ৰপে কৃত হইলেও সিদ্ধ হয়। বস্তুতঃ উদিতে জগতীনাথেইত্যাদিচনের তাৎ প্ৰব্যাৰ্থ এই, যে, অশান্তীয় দন্তপাৰনাদি ক র্ছ'- স্বস্পূর্ণ সধিকারী,একারণ, অস্স্পূর্ণক্ষ

পু1% হয়, ৷ অতএব তীর্থনাদিতে সংযত-रुखं भाषाहि वाङ्गित मम्मूर्गकन, वामः य**उ**रुखं পাদাদিব্যক্তির সমস্প্ক্র, শাস্ত্রে কথিত ইং श्च । यथा । ग्राप्तर । यमा इरखोर भारतीर सनरेनु-ব সুমংযতং ৷ বিদ্যা তপশু কীর্ত্তিশু সতীর্থক্ল ম্পুতে ৷ হর্থাৎ যে, ব্যক্তির হস্ত পাদও মনঃ, নংযত, ফলতঃ অনৎ পুতিগুছাদি, অগম্য দে-শগননামি, ও পরস্ত্রী লোভাদি হইতে নিবৃত্ত হয় এবং যেঁহ, বিদ্বান্ তপদ্বী ও বশদ্বী, ভেঁহ, তীর্থের সম্পূর্ণকলভাগী হয়েন, অন্য, অসম্পূর্ণ-ফলভাগী হয়,এবং কর্মের আরম্ভেকর্ত্তারশুদ্ধ্য र्थ मज ७ ७९ भार्टन दादशाता मृष्ट स्टेर्डएह । যথা। অপবিত্রঃপরিত্রোবা সর্বাবস্থাস্থতো পি वा । यः ऋत्रद शुख्री काक्न• न वाञ्चा छ। छत्रः **मृ**• চিঃ। অর্থাৎ কি, পবিত্র, কি অপবিত্র, কি, স-র্বাবস্থাপু, যে, পুগুরীকাক্ষ বিষ্ণুর মারণ করে त्म, बाजः मुक्त 'अ विशः मुक्त हम्न अवः कर्यारि 'अ পূৰ্বাবধি বুক্ষাদিরো কর্ম বৈগুণ্যসমাধানার্থ ম-

জ্রপাঠের ব্যবহার, **লোকপরম্পরা দ্রুত আ**ছে ও चारानि (बारक मृष्ठेक्वेरङ्ग्हा यथा। यसनाकः **কৃতংকর্ম** জান**তা বা পুজানতা। সাঙ্গং**ভবত্ত-उৎসর্ব শুীহরের্নামানুকীর্ত্তনাৎ।অজ্ঞানাৎ यहि-বা নোহাৎ পুচ্যবেতাপুরেষু যং। মরণা দেব-তহিয়োঃ সম্পূর্ণ স্যা দিতি শ্রুতিঃ। অর্থাৎ জ-জ্ঞানতঃ কিয়াজ্ঞানতঃ যে ২ কর্ম অঙ্গ রহিত কৃত হইয়াছে, সে সকল কর্মা, শ্রীহরির নামা -नुकीर्द्धान वाक महिक इंडेक् । এव॰ अहे याद्ध (य ২ কর্ম অজ্ঞান পুযুক্ত কিমা নোহ পুযুক্ত অস-স্পূর্ণ হইয়াছে,সেই সকল কর্ম্ম, সেই বিঞুর স্ব-द्रग भाविहे मञ्जूर्ग इयु, नु कि ७ वहे भुकात ।

পুায়শিত রিশেষ ব্যতিরেকে কেবল মুখের
দুারাকে, তোজন করে, এবং কোন বিশিষ্ট লোক, আসনাক্ত পাদ পূর্বক ভোজন এবং দক্ষিগহস্ত স্পর্শ বিনা বামহস্তে জলপাত্রপৃহণকরিয়া
জলপান করেন,পরস্থু,ভোজনাসনোপরিচরণরক্ষগপুর্বক ভোজন ও বামহস্তকরণক জলাধারধা

রণ পূর্বক জলপান,ধনি ভাক্ততত্ত্বজ্ঞানি দিগের প্রায়ঃ হয়না, কারণ,ভাঁহারা, দিব্য কাষ্ঠাসনে উপবেশন ও ভূমিতলে চরণ বিন্যাস পূর্বক িন্যকাষ্টাধারোপরি দিব্যপাত্র বিশেষ**হ অন্ন** खाजन এবং দক্ষিণহস্ত पाता शात्राभूईक मित्र পান পাত্র করণক দিব্য জল পান, প্রায়ঃকরেন কিন্তু, নির্ধন ও অনুধন ভাক্ত তত্ত্বজ্ঞানিদিণেরধন ব্যয়ে অসামর্থ্য পুষুক্ত সুত্রনা অগত্যা প্রায়ঃ নাংস বিশেষের ও পেয় বিশেষের অনুকল্প-ষীকার কহিতে হয়। সে,বাহাহউক, অত্রিব-চনে তাদৃশঅমের গোমাংস ভল্যত্ব ওতাদৃশ জলের সুরাত্তল্যত্ব কীর্ত্তন,যেম্বন, ভর্পণস্থলেসুব-র্ণরজতের তিল পুতি নিধিত্ব কথনদারা তিলক ল্যত্ব কীর্ত্তন । যথা । তিলানামপ্য ভাবেত্ত সুবর্ণ রজতাদ্বিতং । অর্থাৎ তিলের অভাবে मृवर्गतक उपुक जनकत्र गक उभाग कतिरहरू। বস্তুতঃ ইত্যাদি দোষে শান্তে প্রায়শিত বিশেষের প্রায়ঃ বিশেষ ৰূপে অকথন পুরুক

ইত্যাদিদোৰ, অতি কৃষু কিয়া ততি নহান্ **হউ**হ্, কিছু, যদি, ভারতভ্জোনি মহাশার **रिश्वत्र सद्धाः भाष्त्रजी ७ भाष्त्रजीत ख**व कवजाः **দির বংস্থার লোপ না হই**ত,তবে ক্রিকিলের পু 🎜 रेजािक (कार्यंत्र जेरलंश ७ इ.तिएउन ना অতএব জ্ঞান সাধনের একাংশে রা অনুঠান, कि श्रमारि, कि जुरम, कि बाश कमाविध कि श्रम काला ७ करतन ना, अथह कथान् हात्तत कार्क **ক্ষুদ্র দোবে তিল পুনাণকে তাল পু**নাণ করিয়া नित्रभतात्व अशृर्व ज्ञानित शर्य तकार्थ कर्मि সকলকে স্বৰ্মচুতে ও পতিত বলিয়া নিন্দ। क्रान, अञाम्म श्रामानात्यक स्थमं हु। क পতিত দুরাশয় দিগের পুতি অপক্ষপাতি মহা-শয়েরা, মূথে স্পষ্ট কোন উক্তি না কৰুন, কিম্বু मान मान । कि कति वन मा।।

ভাক্ত ভ্জানির উত্তর ৷ যে ব্যক্তি স্বয়ং এবং পিতা ও পিতানহ তিন পুক্ষ ক্রমশঃ স্লেছ্র দাসত্বরে সে যদি দ্বিতীয় ব্যক্তি যে

নিজ শ্লেছের চাকরি করিয়াছে ভাহাকে স্বধন্ম চ্যুত ও ভাল্য কছে তবে তাহাকে কি কহি । যদি এক ব্যক্তি যবনের কৃত মিনি প্রায় নিত্য দভে ধর্মা করে ও যবনের চোধান গোলাব ও আতর এ নকল জলীয্দুব্য সর্বদা আহারাদি काल ও यमा नमाय महीत मुक्का करत किन्तू অন্যকে কছে যে তুমি যবন স্পর্শ করিয়া থাক অভএব তুমি স্বধর্মানুত ত্যক্তা হও এক্স বং कारका 🖓 करायाया। ও এक व्यक्ति निष्ण यवन ও শ্লেণ্টের নিকট যাবনিক বিদ্যার অভ্যা**স করে** ও ন্রু নহাভারতাদির বচনকে সমাচার চিন্দু কা ও সমাচাৰ দপ্ল গ্ৰাহা সেব্যক্তির জ্ঞাতসা-রে অনেক শ্লেছ্ লইয়াথাকে তাহাতে ছাপা ক রায় কিন্তু অন্যকে কছে যে তুমি যবন শাস্ত্র পড়িয়াছ ও শাস্ত্রের অর্থকে ছাপা করা ইয়াছ সুতরা॰ স্বধর্ম চ্যুত ভ্যঙ্ক্যহণ্ড তবে তাহাকে কি ব্রাহ্মণকে দেখিয়াগানোত্বাননাকরেওস্তক্তমা

সন পুদাৰ না করিয়া আপনার আসনে বস<del>া</del> ইয়া সেইবাুন্ধণের পাতিত্য জন্মায় কিন্তু সে, थाना भृदुक करह (य जूनि तुक्षनक भारत) ना-তাব তাহাকেই বা কি কছি। আর যদি এক ব্যক্তি বহু কাল স্লে**ছ,সেবা ও শ্লেদ্ধক শাস্ত্র অ**-ধ্যাপনা করিয়া এবং ন্যায় দর্শনের অর্থ ভাষা তে রচনাপূর্বক সেুহুকে তাহা বিক্স ক**রি**তে পা রে সে আদ্যুলন করিয়া অন্যকে কছেবেতুনিস্লে দুের সংসর্গ কর ও দর্শনের অর্থ ভাষায় বিবরণ করিয়া শ্লেদৃকে দেও অতএব তৃমি স্বধর্মচ্যুত **হও** তবে সে ব্যক্তিকে কি কহা উচিত হয়। বি-শেষতঃ দুই স্বধর্ম চ্যুতের মধ্যে একজন আপ-নার জটি স্বীকার ও আপনাকে সাপরাধ অহী কার করে ও দ্বিতীয় ব্যক্তি আপনাকে পবিত্র জান নিয়া অন্যকে প্রাগন্ত্য পূর্বক ষধর্ম রাহিত্য দো-ৰ দেখাইয়া ভ্যন্ত্যকহে তবে ঐ দ্বিতীয় ব্যক্তির পুতি কি শব্ পুয়োগ কৰ্ম্ব হয়।।

**ধর্ম স**ংস্থাপনাকাদিকর পুর্/ভর। ভাক্ত**ভ্**-জ্ঞানির জ্ঞানিত্ব সংস্থাপন এবং দুরাচারের স-দাচারত্ব পুমাণ, এইসকল উত্মন্ত পুলাপ দারা ह्य ना। जिन शुक्रवत्र ज्ञालका कि, य, स्यः ল্লেদ্বের দানত্ব করে, তাহাকেও সুধর্ম চ্যুত কি জাত্যন্তরো কহিলে কহা যায়, যদি পণ্ডিতাভি মানির মম্বাদি বচন, শুক পক্ষির ন্যায় শুক্ত কিয়া পঠিত,না হইত এব' দাস শংযুর অর্থ,কর্ণকুহরে পুবেশ করিত, তবে, ইদানীন্তন দেশাধিপতি দিগের রাজকীয় ব্যাপারে নিযুক্ত ব্যক্তি সকল কে সেছের দাস বলিয়া নিন্দা করিতেন না। মি তাক্ষরাতে নারদ, দাসের বিবরণ করিয়াছেন। यथा। শু प्रवकः शक्षविधः सारत्व मृत्हे। सनीविजिः । চত्তर्विधः कर्यक्त (खरा॰, मामा जि शक्षकाः। শিষ্যান্তে বাসিভৃতকাশ্তর্থ স্তৃধিকর্মকৃত্ 1 এ-তে কর্মকরাঃজ্ঞেয়া দাসস্তুগৃহজাদয়ঃ।কর্মাপি **হিবিধং জ্ঞেয় মশুভ॰ শুভ মেবচ। অশুভং দাস** 

কর্মোক্তং শুভং কর্মক্তাংমৃতং। পৃহদ্বারা শু চি স্থাব করে শোধন। গুস্ক স্পর্ন দ্বিষ্ত্র পুহণোজধনং। অশু ভ॰ কর্ম বিজ্ঞে ষ্বং শুভ মন্দভঃপরং। গৃহজাত তথা কীতে। बद्धा माश्रामूशागठः। यनाकावज्ञ उरु मारिजः স্বানিনাচ য়ঃ ৷ মোক্ষিতো নহত শুৰ্ণা ঘূদ্ধ প্ৰাণ্ডঃ পণেজিভঃ । তবাহমিভূগপণতঃ পুৰুজ্যাৰ্দিভঃ ক্তঃ। ভক্তদাসশু বিজ্ঞেয় স্তথৈব বড়বা ছাতঃ। বিকেতা চাল্লনঃ শাস্ত্রে দাসাঃ পঞ্*দশ* ফুতাঃ । অর্থাৎ শাস্ত্রেশুমুষক পঞ্পুকার দৃষ্ট হয়, শি-या, अरहवाभी, जृठक, अधिकर्माकृर । नाम-তাহার নধ্যে পুথন চারি পুকার, কর্মকর, গভিন যেদাস, তাহারা, গৃহজাত পুতৃতি পঞ্চশ পু-কার হয়। শিষ্য শন্বে, বেদ বিদ্যার্থী , অস্তে বাসি শব্, শিল্প শিক্ষাথী ,যে, বেতনার্থে কর্ম করে তাহার নাম ভৃতক, অধিকর্মকৃত্ **শ**ে কমাকর দিগের অধি গ্রাতা, অর্থাৎ ভূতকেরা याहात आद्धानूसात कमा कात । कमा ७ मूरे

পুকার, শুভ ও অশুভ, কমা কর দিগের শুভক-स्, हात हिराद अनु छ । स्, । ग्र्याद, अनु -চিহান, অর্থাৎ উদ্বিষ্ট পুক্ষেপ, মূত্রত্যাগাদি স্থা-ন, রথ্যা, অর্থাৎ অপকৃষ্টস্থান বিশেষ, অবস্কুর অর্থাৎ গৃহের মার্জিত ধূলি পুভৃতির সঞ্য়স্থান, এই সকল স্থানের শোধন এবং গুছ অঙ্কের স্পর্শন উচ্ছিষ্টনার্জন বিষ্ঠা মূত্রের গুছণ ও ত্যাগ ইত্যাদি, অশুভকর্ম, এতডিন,শুভকর্ম। গৃহ জাত, ক্রীত,শ্বু, পৈতৃক, অনাকালভূত, আহ্-ভ অর্থাৎ ধন গুহুণার্থ উত্তনর্ণের নিক ট স্থানী याहात्क वन्नक निग्नाह्न। त्माक्रिक व्यर्थाए अन माठनार्थ (य न्युः, উखनार्णत मानज् त्रीकः। র করিয়াছে, যুদ্ধপুাগ্ধ, পণেজিত, স্বয়ংসীকৃত দাস্য, ভক্তদাস, বড়বাহ্বত, অর্থাৎ দাসীলোভে সুয়ংস্বীকৃত দাস্য, আত্ম বিকেতা, এই পঞ্চশ शुकात नाम । अञ्भव अहे मकन (परी भार মান শাজ সত্বেওইদানীন্তন রাজকীয়ব্যাপারে মিযুক্ত লোক সকলকেভূতক কিয়া স্থিকর্মক্-

ত্না কহিয়া শ্লেচের দাস শহু পুয়োগকর্তাকে অপূর্ব পণ্ডিত কহা যায় কি না। নগরান্ত বা-পীই মেচ্ব পুক্ত দাস হইবেন, যেহেন্ত, তেঁ**হ** নিজ অপূর্ব ধর্ম সংহিতাতে,সে যদি, যে,নিজে *শ্লেচে*ুর চাকরি করিয়াছে তাহাকে স্থর্মচ্যুত**ও** ত্যজ্য কহে এই বাক্যের দ্বারা আপনিই আপনা-র শ্লেচ্ছাসত্ত্ব ব্যক্ত করিয়াছেন, অতএব নগরাস্ত বাসী,নিজে,জ্ঞানী, অকিঞ্চনকর্মিলোকেরাভাঁ৷ হাকে কি কহিতে পারেন, কিন্তু, শাস্ত্রে ও ভাঁ-शाब सिह् मानव नस्रव श्य, जाशाब वाबन कि ৰূপে করা যায়। যথা নারদঃ। বর্ণানা পুাতি-लार्मान मामञ्च न विधीय्रा । मुध्य जाशिरा-ন্যত্র দারবদাসতা মতা । অর্থাৎ অধ্য উত্ত-মের দাস হইতে পারে উত্তমঅধ্নের দাস হই-তে পারেটনা, যেমন, বান্ধণ, শূদুাদির কন্যাবি-বাহ্ করিতে পারেন, শূদু,ব্রাহ্মণাদির কন্যা বি• বাহ্ করিতে পারেনা,কিন্তু, মুধুর্ম ত্যাগিলোক আপনা হইতে অধ্নেরো দাস হইতে পারেএ-

ই বচনে নারদ, সামান্যতঃ সুব্যু ত্যাগিমা-ত্রের পুতি স্বাপেক্ষা অধননাত্রেরদানত্ব বিধান করিয়াছেন,কিন্তু,দ্বর্ম ত্যা**গিরঅপরাধিত্বপুযু**-ক্তদণ্ডাধিকারি রাজারদাসত্ই যুক্তিসি**দ। অত**• এব স্বর্ম চ্যুত যতির পুতি যাজ্ঞবন্ধু ক**হিয়া-**্ছেন। যথা। পুরুজ্ঞাবসিতো রাজ্ঞোদাস আং-'নরণান্তিকঃ। অর্থাৎ সল্ল্যাস ধর্ম চ্যুত যতিকে <sup>্</sup>রাজা, আপনার দাস করিবেন, যাব**্তাহার** মৃত্যু ना হয় । অতএবকলির স্থর্মচু**তভাক্ত** ভুজ্ঞানি দিগেরকলির স্লেচ্রাজের দাসত্বইউ-চিত হয়॥

জবনের কৃত নিশী কি, গোলাব আতরই
বা কি, রোগশান্তির নিমিত্ত অতক্ষ্যও ভক্ষ্যইয় আপেয়ও পেয়, এবং অস্পৃশ্যও স্পৃশ্য হয়
যেহেত্ত, শান্তে তাহার বিধি দৃষ্ট হইতেছে। যথা সুমভুঃ। লশুন পলাও গ্রান কৃষ্টী শুদার
স্তিকালা ভোল্যাল মধুমাণসমূলরেতোগমেধ্যা
ভক্ষ্য ভক্ষণে গায়ব্যাই সহস্বে মুদ্ধি সম্পাতা

শবনয়েৎ উপবাসশ্এতানি ব্যাধিতস্য তিষ ক্ **ক্রিয়াথা মপুতি সিদ্ধা**নি ভবস্তি য়ানিচান্যান্যের• বিধানি তেবুপ্যদোষ ইতি। রশুন, পলাণ্ড জ র্থাৎ পেয়াজ, গৃঞ্জন অর্থাৎ গালর, ফুদ্রী অর্থাৎ পানা, পুেত শুদ্ধান্ন, সূতিকান্ন, অভোৱ্যান্ন, ন্ ধু, মা॰স,মূত্র, রেতঃ, অনেধ্য অর্থাৎ অশুদ্ধ, অ ভক্ষ্য, এই সকল দুব্যের ভক্ষণে অপ্তাধিক সহ-সু গায়ত্রী করণক মন্তকে জল বিন্দু পু:ক্ষপ ও উপবাস করিবেক, কিন্তু, ব্যাধিত ব্যক্তির ভি-ৰক্ কিয়াতে এই সকল দুব্য, অনিধিক হয় এবং এই পুকার খন্য যে২ দুব্য ভাহাতেও দোব:-ভাব, যাহারা, জবনীনর্কীর নৃত্যদর্শন সন্যে গোলাব আতর ব্যহার করেন, তাহারা কার্য্যা. নুরোধে সময় ক্রমে জবন স্পর্ল করিলে যেক্প শুৰাৰ্থ হস্তপাদাদি পুক্ষালন বস্ত্ৰ ত্যাগ ও বিষ্ণু ম্মরণাদির ব্যবহার আছে তাহাতে ও সেইক্প করিয়া থাকেন। যদি, কোন সভ্যবাদী দিব্যচ-ক্ষু:মনুষ্য, ভোলনকালে ও কোন ব্যক্তিকে গো

লাব আতর ব্যবহার করিতে দেখিয়া **থাকেন** তবে ভাঁহাকে রোগী বিনা ভাঁহার কি বোধ হয়। দন্তরোগ শান্তির নিনিত্ত বৈদ্যকশা**ন্তেও** নিশী লিথিয়ার্ছেন, যাহার নাম মঞ্জন লোক পু-সিদ্ধ এব• ব্ৰাহ্মণাদি কৃত গোলাব **আতর,বারাণ**: স্যাদি হইতে এতদেশেও আসিয়াথাকে <mark>তাহা</mark> ও কি ভেঁচ, না দেখিয়াছেন ও না শুনিয়াছেন, িন্দু পরের প্লানির নিমিত্ত **শুক্ত মশত ন্যায় এই** ন্তপ্রি কি পরের প্লানি করিতে হয়, রোগাদিব্য-তিরেকে যে কেহ, ঐ সকল নিবিদ্ধ দুব্যব্যব-হার করেন, তেহ্**, ভাক্তেন্ত জ্ঞানি হইতেও ন**ং রাধন মতএব ভদুলোকের অস্পৃশ্য ও **অসম্ভা**-য্য হয়েন, নগরান্তবাসি নহাশয়কে জবস্পশ করিয়া থাক বলিয়া কোন্ভদুলোকে নিন্দা করিয়া থাকেন, যদি, কেহ করেন, সেও অনু-চিত,যেহেত্ত, অত্যন্ন পাপৈ বিপদঃ শুচীনাৎ পাপাত্মনা॰ পাপশতেন কিয়া । অর্থাৎ শুচি ব্যক্তির অত্যন্ন পাপেই বিপদ্ হয় ৷ পাপামার

भाउर शारभक्ष अभूति बला नाम द्वां वृष्क हमना, कि बानि, कि ए विश्वाह, भवत्म मुद्दे बार निक्का कि बानि, कि ए विश्वाह, भवत्म मुद्दे बार निक्का कि कि से कि बाम कि कि से कि से

যে ব্যক্তি, বাল্যঅবধিমহোরাত্র জবন নাত্রের **সহিত আলাপ পরিচয় একাসনে সহ্বাস ও খন্য২ ভাব**ণ্যুবহার করিতেছেন ভেঁহ, **সু**তরাণ **আত্ম বন্মন্যতে জগ**ৎ ইহারন্যায় অন্য ব্যক্তি-কেও জবনজ্ঞান করিতে পারেন,সে যাহা হউক, ত হার এই ৰূপ জবনজ্ঞানে পরমা প্রায়ত হ ইলাম, বুদ্ধিলাম, যে, ভাক্ততভ্ৰজ্ঞানিপণ্ডি-তাভিমানির বহুকালে বহু পরিশুমে এক্ষণে ভাক্ত তব্জ্ঞানের ফল,সম্পূর্ণ হইবার উপক্রম হইতেছে, ভাল, ভাল,ইশুর মঙ্গল কলন,কমে সর্বত্রই জবনজ্ঞান হুইবেক, যেমন, যথার্থ তত্ত্ব জ্ঞানের ফল,বুক্ষমাত্রে তদ্গত মানস পুযুক্ত বু-व्यक्तानी, वृक्ता **७३ वृक्तमग्र मर्जन करत्रन, ७**व९ व्या পনিও বুক্ষস্বৰূপ ত্ব পাুণু হয়েন,তেমন,ভাক্তত-স্বৃজ্ঞানের ফল, জবন মাত্রে তদ্গতচিত্ততা পুযু ক ভাকতভ্,জানী,বুকাওই জবননয় দশনক-রেন এবং আপনি ও জবন জাতি পুাণ্ড হয়েন, যে, নিতান্ত তদ্গতচিত্ত হয়, সে, স্বপ্নেও তাহা-क्टि मर्भन करत अवर अक क्षृमुकी वित्नव, অন্য এক ক্ষূদু কীটবিশেষে তদ্গতচিত্ত হইয়া তৎ কীট জাতি প্ৰাপ্ত হয়, ইহা, মীমভাগবতেও লোকেও দৃষ্ট হইতেছে, অতএব মৃত্যুকালে ভ-গবদ্ধীতাওকহিতেছেন ৷ যথা ৷ অন্তকালেচ মামে ব মারন্ মুক্ত্রা কলেবর । যঃপুয়াতি সমভাবং ষাতি নাস্ত্রসংশয়ঃ! य॰য়॰চাপি মরন্ ভাবং ভ্যমভ্যন্তে কলেবরং। তংত মেবৈতি কৌন্তেয় সদা তদ্ভাব ভাবিভঃ৷তমাৎ সর্বেবু কালেষু মা **बनुमाद यूप्रह। मयऽभिंठ मत्नावृष्ट्वि मीरम देवसा**-

ना नःभग्नः। वर्थाः (इ वर्द्ध्न , वहकात । व জীব, কেবল আমাকে মরণ করতঃ দেহ ত্যাগ করে, সে, মন্ডাব পুাও হয়, ইহানিশুয়। যে২ ভা ব মরণ করতঃ জীব, অন্তকালে শরীর ভ্যাগ ক রে সর<sup>্</sup>দা সেই ভাবে ভাবিত হইয়া সেই ভাব· প্রাও হয়। অতএব ভনি, সকল কালে সামাকে মারণ কর ও যুদ্ধও কর, যে, আমাতে মনঃ ও বুৰি সমর্পণ করে, সে, নিশুয় আমাকেই পায়। যথাৰ্থ তত্ত্বজ্ঞানির যে বুন্ধ স্বৰূপত্ব প্ৰাপ্তি ও বুক্ষাওকে বুক্ষময় দর্শন, ভাহার শু.তি পুমাণ নগরাভবাসির পুণ্যপু্তাপে সম্পুতি মেছেরাও বিশিষ্ট বৈশিষ্ট্য ৰূপেজ্ঞাত আছেন, পণ্ডিতাতি নানির ন্যায়ধর্মসংস্থাপনাকাতিক্ষদিগের একপ বাণ্ডা নাই, যে আমি অনেক শুতি জানি এই পু: কারে সর্বসাধারণ লোকের নিকটে আপনার নান পুকাশ কি ৰূপে হইবেক, সামান্য জা-তির নিকটে অগত্যা মমাদিবচন পুকাশ কর-ণেই ধর্ম সংস্থাপনাকাঞ্চিরা, যে পুকার কুপ্তি-

ত ও দুঃথিত আছেন, তাহা, কি কহিতেপারেন বিষয় ব্যাপারের নিমিক্ত জাবনি কাদিবিদ্যা-ভ্যাস, তত্তজ্জাতি ব্যতিরেকে তাহা, কি ৰূপে হইতে পারে। ধর্মসংস্থাপনাকাডিক্ষদিগের সর্ব-জন গোচর সমাচার পত্তে মম্বাদি বচন সহিত পুলুচভষ্টয় পুকাশ করণ, পণ্ডিতাভিমানির বে-माञ्ज भुकात्मत्र नाम् द्वापृष्टिश्य वाशार्थ नत्त्र, কিন্তু, সকলের অনর্থের মূলীভূত ব্যক্তি বিশে-ৰকে জ্ঞাত হইয়া সকলের তত্স•সর্গ পরিত্যা-গাৰ্থ ও লগতের ম**ললা**র্থ, তাহা ক্রমে হইতেছে ও হইবেক, তবে যে, স্লেদ্ধে বোধে উদ্দেশ্যতার অভাবে ও পাপের আশঙ্কা, সে অবোধমাত্র, নহাপুণ্ডজনক কর্মেও কি অল্লােষ ক্ষতিকর হয়। এবং জাবনিক বিদ্যা অভ্যাস করিয়াছ বলিয়ানগরান্তবাসিমহাশয়কে, কে, নিন্দা করে, ইত্যাদি বিষয় লিখনে লিপি পরিস্কারক ভউা-ছার্য্য মহাশয়দিগের হস্তবেদনানাত্ৰএকি দুব্য ভণ বশতঃ, কি চিত্তবিকার নিমিত্ত, তাহা জানি তে ইচ্যুকরি 💩

रिस्वार अभागज, क्लाहिलागज, अ अलागज অভিমান্য, মান্য, ও সামান্য, কোন্যুগে না ছিলেন ও না আছেন, কোন্যুগেই বা যে লোক যদ্রপ, ভাঁহার তদ্রপ সমান না হইয়াছে ও না হুইতেছে, দৈবাৎ সমাগত, সতিসান্য নারদাদি র কোন্সানে গাত্রোত্রান পূর্বক অভ্যর্থনা পূথ-ক আসন পুদান পান্য অর্ঘ্য আচমনীয় করণক পূজানাহইয়াছে, কদাচিদাগত নান্য রাজপুরো: হিত বশিষ্ঠধৌন্য পুভৃত্তির দশরথ যুধিষ্ঠির পু-ভূতির নিকটে কি বিশিষ্ট সমাদর না হইয়াছে, এ বংসদাগত সামান্য ব্যক্তিরো সর্বকালেই কি উ-ভ্রমের কি অধমের নিকটে যথোচিত সামান্যা দ-রের কি কুত্রাপি অভাবআছে। যো যত্র সততং যাতি ভুষ্কেচাপি নিরম্বরং।সতত্র লঘুতাংযাঙ্কি यि भक्तमत्ना ज्वर। वर्षार (यदाकि, यश्न-নে সভত গমনাগনন করেন, নেব্যক্তির দেস্থানে

লঘু সমাদর অবশ্যই হয়, যদ্যপি,ভেঁছ,ইন্দু ত্ল্যওহয়েন,কিন্তু,তাহাতে না ভাঁহার উত্তন্ তার অল্পতা, না সম্বন্ধ ক ব্যক্তির দোষ ভাগি-তা হয়, দৈবাৎ আবাহিত ইন্দ্রাদিদেবভারে। বোড়ংশাপচারে পূলা হয়, পুতিনিয়ত সালগা ম শিলারো গন্ধ পুত্র মাত্রেই পূজ। হয়, দেখ, সা ক্ষাৎ বৃহ্মণ্য দেব ত্রীত্রীকৃষ্ণ, যুর্বিধিরের যজ্ঞে ব্যুন স্থাদিগের পাদপুক্ষালনোদক দানার্থ নিযুক্ত ছিলেন, তাহাতে কি ভাঁহার অনুভনতা ও অ-মান্যতা হইয়াছে, কি যুধিঙ্কির, নিন্দি ত ও পা**পী** স্ইয়াছেন, এই সকল দৃষ্টিতে কার্য্য ব**শতঃ কি** ষা সম্পুতি বশতঃ নিয়ত গন্নগন্ন কারি অতি বিশিষ্ট ব্ৰাহ্মণেরো সতত সমাগমন পুযুক नभारतित जात्रज्ञाम् मृमु ७ वाञ्चालत किकाल জ্বন্যতা ও দোব ভাগিতা সম্ভব হয়, শূদুস্থা-নেব্ৰান্ধণের আগমনে শূদু কর্ত্ক গাতোত্বান পূর্বক স্বতন্তাসন পুদান বিনা একাসনে সংহাপবেসনে ব্রাহ্মণের পতিভ্য বিধায়ক যেবচন,তাহার এই

তাৎপর্য্য, যুক্তি সিদ্ধ হয় কিনা,যে, স্বস্থানে দৈ বাৎ সমাগত বিশিষ্টব্ৰাহ্মণ দৰ্শনে এইৰূপ বিশে য সম্বর্জনার অকরণে শূদু, পাতিভা জন্মান ও ব্রাহ্মণ, পতিতহয়েন। পরস্তু, জাতিব্রাহ্মণ, কর্মা मृ(मुत्र (रायकालन मृ पुनिन्तामात्रा रुयना अव॰ अ॰ मर का न्मृनु चाहि, या, मर्वादाया ज्रात्व दुाः হ্মণ পণ্ডিতাদিকেদেখিয়া অভ্যুত্বান ও ভিন্নাসন भुरान ना करत्र अव १ यूग धर्म भुयू क विषय वहाः পারে নিযুক্ত অহরহ অবিরত সনাগত দিছের পুতি পৌনঃপুন্য গাত্রোহ্বানা সম্ভবেও তাহারা পুয়োজনাধীন স্তস্তাসনে উপবেশন করেন এবং ভাবৎ ধনিমানি বিশিষ্ট শৃদু গৃহে পুতিনি-য়ত ওকর্মোপলক্ষ্য বাহ্মণ শ্দের প্থক্পৃথক্ আসনহইয়াথাকে, তাহা, ভাকতব্বজ্ঞানিরজ্ঞা-নের বিষয় কি, যেহেভুক, স্বয়ং দুচার ও স্বদেশে বিদেশে অব্যবহার্য্য এপুযুক্ত ভদুলোকের বাটা-তে ও সভাতে ভাঁছার গমনের পুসক্তি কি, এবং পণ্ডিতাভিমানির পূর্বোক্ত মনুপদ্মপুরাণ্ড বুক্ বৈবর্ত্ত পুরাণের বচন জানিবারি বা সম্ভাবনা কি, সূতরাণ দুব্যগুণ বশতঃ, যাহা, চিত্তমধ্যে উদয় হয়, তাহাই অনর্গল জল্লন করেন।

স্ববিদ্যাহ্জিত ধনদারা অবশ্য পোষ্য কুটুত্ব ভরণ ও ধনসাধ্য सथर्यानुश्रामंत्र উদেশে বি-দ্যাভ্যাস কালে তৎ পুতিবন্ধক অবশ্যপো-য্য পরিবার পোষণনিমিত্ত দুশিভানিরাকরণার্থ মনুবচন পুমাণে অগত্যা কিয়ৎকাল অল্প ায়াস সংখ্য দেশভাষা খ্যাপনে কি পাপ হয়। যথা-মনু:। বৃদ্ধে চ নাতাপি তরৌ সাধী ভার্য্যা সূতঃ শিশুঃ ৷ অপ্যকার্য্য শতং কৃত্বা ভর্ত্তব্যা মনুরবুং বীং যা অৰ্থাং বৃদ্ধনাতা ও বৃদ্ধপিতা সাধীতা র্য্যা এবং শিশুসন্তান এই সকলকে শতসহসু অসৎকর্ম স্বীকার করিয়াও ভরণ করিবেক, ই-হা, মনু, কহিয়াছেন। অতএব মাত্পোষণপার দার্য্যেও দোষাভাব, জীমূত বাহ্নাদির গুছে উক্ত আছে, তাহা, যদ্যপি, দৃষ্ট, না **হয়,** তথাপি মুত হুইতে পারিবেক ও ভাষা পরিচেচ্ছেদুব্যাদি

**পদার্থের নিরূপণ,** ভাহার ভাষা বিরুয়ে *ন*্যায় দর্শনের ভাষা বিকয় কিৰূপে হইতেপারে, তা হাতেই বা কি পাপ 🛭 ষদ্যপি পণ্ডিতাভিনানি-র মতে ভাষা পরিচ্ছেও ন্যায়দর্শন হয়, তবে তাহার ভাষা পুকাশের ও সর্বসাধারণ লো-কের নিকটে তাহার বিক্রয়ের এই অভিপ্রায় **क्विन वाद ना क्विन, य, जानुबनावक्ष**क, शु-তারক, নাস্তিক পথগননে উদ্যত অজ্ঞান নিবিড় তিমিরা বৃত নয়ন জনগণের নাস্তিক পথ পুস্থান নিরাকরণার্থ ও মুদ্যুকরণের ব্যয়ার্থ তাহার ভা-ৰারচন ওবিক্য় করণ, যেহেত্তু,গোতমমুনি, দুঃ খ পক্ষনিমণ্ন জগদুদ্ধরণ ও নাস্তিক মতথণ্ডন নি মিত্ত ন্যায় দশ নের পুকাশ করিয়াছেন, শ্লেচ্ সংসর্গের উত্তর, ২৮ পৃঠে ১৩ পঞ্জিতে পূর্বেই ক রিরাছি, কিছু শ্লেচ্ নিকটে ভাষারচিত বেদান্তদর্শ त्तद्र शुरात जात्रक अवर्याहु । उक्रिया ठाँ शाक নন্দাকরিয়াথাকেন সে তাহারদিগের অনুচিত, বেহেৰ,পুরাণে মুত্রিত বেন তন্য গলাব্রাটিকা

অর্থাৎ পঙ্কাযমূনাও সরস্বতীর সঙ্কম হয় যে পুয়াগেতাহাতে দখায়নান হইয়া নূত্তগ্ৰ করিয়াছেন,যে পুণ্যবান্, তাঁহার কেবল গন্ধায় নূত্রত্যাগ, কি আশুর্য। অর্থসহিতবেদমাতা গায়ত্রীই শ্লেচুছ্তে সমর্পণ করিয়াছেন, যে স-চ্ছন সংসন্তান, ভাঁহার ভাষারচিতবেদান্ত দ र्मम, (मुह निकार ममर्था, कान्विरित । या १३ **দোষাকর শশ**ধরের, মাসবিশেষের তিথিবি -**भारत उपल्लं**क निर्फारित स्राप्ताय समर्भागत्र नगात्र, মুয়ৎ পুক্ত খ্যাত মুধর্ম চ্যুতব্যক্তি, তদ্বোষ পুকাশক অধর্ম চ্যুত ব্যক্তি সকলে স্বীয় সুধর্ম-हुउ ज रहाव समर्शन कतिरा यहानि जाहारक स्-**थर्या**ठू । ज कहिला कनिहरक कनिहरू कथरनत्र न गाः য় সুৰূপকথন দোষ নাছয় তথাপি তাঁহার সু-**थर्मा**हृ/**उद् । ए**। स्वित्र नाथरन निष्क्र नाथनरहाय जन বশ্যই হইবেক॥

ভাক্তভুজ্ঞানির উত্তর ৷ যদি পর্যাসংস্থাপনা-কাৰ্কী কহেন যে পূৰ্ব্বাক্ত বচন কসল অৰ্থাৎ শৃদ্যন্ন গুহণইত্যাদি দোষে জ্বলন্ত ব্ৰাহ্মণও পতি-ত হয় ও সূর্যোদয়ানন্তর মুথ পুক্ষালন করিলে সে পাপিষ্ঠের পূজাধিকার থাকেনা। আর আস-নে পা রাথিয়া ভোজন করিলে গোমা**ণ্স ভোজন** হ্য় আর বাম হত্তে পাত্র উঠাইয়া জলপান ক-রিলে সুরাপান হয় । এসকল নিন্দার্থবাদমাত্র। हेरात তा९ भर्य। भरे भूरा म गुरु ना कि कति (वक ना ভবে ধর্মসংস্থাপনাকাশ্দীযোগবাশিঙেরএই ব-চন যে সংসার বিষয়ে আসক্ত হইয়াকাপনা-क वुक्त कानी करह (म व्यस्त का ब्राज्य का ब्राज्य হয় তাহাকে নিন্দার্থ বাদ না কহিয়া কি পুকারে यथार्थ वाम कहिएं भारतन। मःमाद्रद्वः विवयः আসক হওয়া এবং আপনাকে বৃদ্ধজ্ঞানী অঞ্চী-कात कता ज्ञाननिष्ठेत कान्य निविष रुप्त रेरा-किनना ७ रे वहत्तव जार नर्या रुष्न वक्षा यहि क-हिन (य भूईर वहनाक निन्हार्थ बाह ना कहिला ভাছার নিজের নিভার হয় না আর'বোগবালি ঠের বচনকে যথার্থবাদ না মানিলে জ্ঞানিদের পুতি নিন্দা করিবার উপায় দেখেন না তবে ভি-নি ধর্মসিং স্থাপনাকাল্ফী সুতরাং আনরা কি কহিতে পারি।

ধর্মন॰ স্থাপনাক্টিকর পুতুऽভর। পণ্ডিতা-जिमानी जाकउद्देखानी, धर्मनः शाननाकाणकः **क्तित्रत्र निन्ताकत्रवार्थ, मृतुावः मृतुप्रम्पक** है-जगिम भूरबीक वहन मकनत्क, रय,निन्मार्थ वाम কহিয়াছেন, সে যথার্থ,কিন্তু যেমন, ভাক্ততত্ত্ব क्टानी, जाभनात्र यथार्थवाहरक निन्हार्थवाह ज्हा-ন করিয়াত্মাপনাকে আপনিই অনিন্দিত জ্ঞান করিয়াছেন, তেমনধর্মন ছাপনাকাভিক্ষরা,অ-ত্যন্ননিন্দাবাদেওযত্যন্ত পাপবোধে আপনাকে অনিন্দিত জ্ঞান করেননা,বেহেতু,গোমূত্র মাত্রেণ পয়ো বিনষ্ট• তক্তেণ গোমূত্রগতেন কিয়া ৷ অর্থাৎ গোমূত্রকণিকামাত্র স্পর্শেই দুঞ্চ, দুষ্ট হয়, কিছু গোন্ৰ বৰ্ষণেও ভক্ৰের পূৰে ও বেভাব পরেও

সেইভাব, অতএব তাঁহারা ২৯ পৃষ্ঠে২পদ্জিতে পূর্বেই আত্মনিন্দা দোষের পরিহ্রণ করিয়া-ह्न, भावत निन्तावाद व्याभनात यथार्थवाद कि व्ययथार्थवाम स्य वद्रक (नहे यथार्थवान, व्यशृई. না, হইয়া অতিপূর্ব ইহয়। সে যাহা হউক্, গণ্ডিতাভিমানির এবিবেচনাকরা কর্ত্তব্য, যে (क) न् वहनं निन्तार्थवार 'अ (कान् वहन वा यथा-र्थवार इट्रेंट भारत, रायवहरन भाभ वित्मव ड প্রায়শিত্তবিশেষ এবং নরক বিশেষ, উক্ত,নাই কেবল কর্তার ভয় পুদর্শন মাত্র, সেইসেই বচন निन्दार्थवार रुग्न । यथा । अङ्जाद्वादर्भनाञ्चानि প্রায়শ্রিণবদন্তি যে । প্রায়শ্রিভিবেৎ পৃতত্তৎ পাপ•তেষুগছৃতি ৷ অর্থাৎধর্মশাস্তানভিজ্ঞলো-ক, প্রায়শিত্তোপদেশক হইলে পাপী কদাচিৎ পাপমুক্ত হইবেক,কিন্তু তেঁহ,তৎপাপ ভাগী হই• বেনা বুন্ধ যুেচ সুরাপেচ স্তেয়েচ গুরুতল্পগে ৷ নি ৰ, তিৰিছিতা সভিঃকৃতংঘু নাতিনিযু, তিঃ। অ-र्थाए तुक्त्य मूर्यालात ७७क भन्नामिगानी, हे- হারদিগেরওনিযু তি,মম্বাদি, কহিয়াছেন, কিন্তু কিত্যুের নিষ্ণাত নাই । বহু শবু: পটোলে স্থা দ্ধ-হানিস্ক মূলকে ৷ অর্থাৎ তৃ**তীয়াতে পটোল ভ**• ক্ষণে বহু শত্রু হয় এবং চত্তথী তে মূলকভক্ষণে ধনহানি হয় ইত্যাদি ৷ এবং, কৃশুস্ত নালিকা-শাকং বৃভাক পৃতিকাংতথা।ভক্ষন্পতিত**্য** भा मिलियना स्था दि कः। व्यर्शर् कृणुस्रमाः ক নালিকাশাক ক্ষুদ্বার্ভাকীও পৃতিকাএই সক-লদুব্য ভক্ষণে পতিতহয়, **যদ্যপি তেঁহ, বেদের** পারদশী ব্রাহ্মণ ও হয়েন ৷ এবং যে২ বচন, ক র্ত্তার নরক প্রায়শিভবিশেষ ও ত্যাগাদিরপুতি• পাদক, সেইনেইবচন, যথার্থবাদ হয়। যথা। দ্রীতৈল মাণ্স সম্ভোগীপর্বেতেষু বৈ পুমান্ বিন্যুত্রভোজন'নাম পুয়াতি নরক'মৃত: ৷ অর্থাৎ **এই পঞ্চ**পৰে <u>দ্ৰী</u>সন্ধী তৈলাভ্যনী <mark>মাণ্সভোলী</mark> পুক্ষ,বিধানুত্রভোলন নামক নরকে গমন করে। আচার্য্য পল্লী॰ অসুতা॰ গছুস্ত ওকতল্পাঃ। ছি-प्रानिकः वर्ष सम्य मकामाया जिया ख्या। अ-

ৰ্থাৎ আচাৰ্য্য পত্নীসমন কিয়া কন্যাগমন কংগ্ৰ যে, তাহার নাম গুৰুতল্লগ, তাহার লিক্চেচ্ পূর্বক বধ করিবেন, সকানান্ত্রীরও সেইরূপ দ 🕲 । হীনবর্ণোপভোগ্যা বা ত্যজ্ঞা বধ্যা পিবা ভবেৎ। অর্থাৎ নীচজাতির ভুক্তা যে দ্রী দে প-তির ত্যজ্যাকিয়াবধ্যা হয় ৷ এবং মহাপাতকি পুভৃতি অধিকার করিয়া কহিয়াছেন। ত্যরেদে-শ॰ ক্তযুগে ভেভায়া॰গামমূৎস্ভেৎ। দ্বাপরে **কুলমেকন্তু** কর্ত্তারন্তু কলৌ যুগে। অর্থাৎ সত্য-যুগে মহাপাতকি পুভৃতির দেশ পরিত্যাগ-করিবেক, ত্রেভাযুগেনে গ্রাম, দ্বাপর যুগে পাপি ব্যক্তির কুল এবং কলিযুগে পাপকর্ত্রাকে ত্যাগ করিবেক, যেহেন্ত, পাপির সংসর্গেতভুল্য পাপ হয়,পণ্ডিতাতিমানী মহাশয়, এইসকল বচনকে निन्मार्थवाम कहिरवन, कि यथार्थवाम कहिरवन, व्यवमार्टे यथार्थवाम कहिरवन, वनाथा अक्डन्नर्ग পুভৃতির বধাদি এবং কলিযুগে পাপ কর্ত্তার প রিউ্যাগহইতে পারেনা এবং পাপি রসংসর্গেপ্রা

য়শিত বিধিরে বৈষর্থ্য হয়। এব পূর্বোক্ত অক্তা ত্বাধর্ম শাস্ত্রাণি ইত্যাদিবচন সকলকে ওঅবশ্যই িন্দার্থবাদ কহিবেন, অন্যথা, ধর্ম শাস্তানভি জ্ঞ যাক্তি, প্রায়শিক্তের উপদেশ করিলে পা-পি ব্যক্তির ভৎপাপের প্রায়শিত উপদেশক ব্যক্তিকেও করিতে হয়, ইহা কোন শান্তে কোন निवक्तकर्ता विश्वन नाहे, विरुप्ते वेर्म नः ছাপনাকাৰিক্ষদিগের নিন্দার্থ ভাক্তব্জ্ঞানি র পুকাশিত, শূদায়ংশ দুসম্পকর্ক ইত্যাদি ব-চন সকলকে ভেঁছ, নিন্দার্থবাদ কছিয়াছেন ও এক্ষণেও কহিবেন, কিন্তু ভাকতন্দ্ৰজ্ঞানিদিশে-র পুতি ধর্ম সংস্থাপনাকাতিক্ষদিগের লিখিত, যে, সংসারবিষ্যাসক্তংইত্যাদিতংত্যে দ-স্ত্যজংযথা ইত্যন্ত, যোগবাশিষ্ঠ বচন, তা-স্থাকে ভেঁহ,এক্ষণে যথার্থবাদ কহিবেন কিনা কি ৰানি, ভেঁহ,নিজে পণ্ডিতাভিমানী, যদ্যপি স্বা-নুচর জীবগণের নিকটে অভিমানভঙ্কভয়ে না करहन ७ म बीरवज्ञा छ किक्सिश्य कद्भिरक ना

পারেন, তথাপিঅপক্পাতি মধ্যস্থ মহাক্ষ-য়েরাও কি বোধ করিবেননাএবং ভাক্ততভ্বজ্ঞা-নী কছেন, যে, ধর্মসংস্থাপনাকাভিক্ষর নিখি-ত যোগবাশিষ্ঠ বচনের এইতাৎপর্য্য, যে, সং-मात्र विषय्न जामक रू अग्ना अग्नायक कानी बीकात कत्रा उद्योनित अत्ना निविक अञावसाव অর্থাৎ অন্ত্যন্ধ সংসর্গেরে ন্যায় ভাক্তভন্ত জ্ঞানির সংসর্গ ভদুলোকের অকর্ত্তব্য, সে বচনের এতা-ভ্পর্য্য নহে,এঅপূর্বপাণ্ডিভ্য পুকাশ, কারণ,ভাঁ **হার নতে বুঝি ভ**ক্তল্লগদিগের বিষয়ে যে২ পূ**•** র্বোক্ত বচন,তাহারও এইরূপ তাৎপর্য্য বে শু-ৰ তল্প পুভৃতির বধাদি হইবেনা, কেবল আচা-र्या भन्नी भगनाषिष्ठ निषिक्त, कि आपूर्या, आखा माय क्वालनार्थ कि नारखन्न गथार्था भनाभ ७ क-রিতে হয়, পণ্ডিতাভিমানির,কিপ্মইএই এক্ষণে মধ্যস্থ মহাশয়েরা, এরপ জ্ঞানকরিবেন কি না (य, **१य न: इ। भना का विक्र**व निकछि है जान्त **उन्ह** জ্ঞানির নিস্তার পাওয়াভার ইহাতে ধর্মের নি-

কটে কি লপে নিস্তার পাইবেন এবং ধর্মসংখা পনাকাশ্দিরা, তাঁছার দিগের নিন্দা করিবার এক্ষণে কোন উপায় দেখিতে পান্ কি নাঃ এ-বং অপূর্ব জ্ঞানিসকলকে কোন শন্ধ কহিতে পারেন কিনা, ইছাতে নিক্তর ছইবেননা, স্বরূপ কথনে যদ্যপি নিক্তর ছইতে হয়, তথালি প-রের আরোপিত দোষোৎকীত নি বিশিষ্ট নছা-শয় দিগের অবশ্যই অত্যন্ত উৎসাহ্বৃদ্ধি হই বেক।

ভাকতভ্জানির উত্তর ! বস্তুত যোগবাশি
(ধর যে ল্লোক ধর্মসংস্থাপনাকাশ্দী লিথিয়াছেন

তাহার অর্থবিশেবরূপে সেইবোগবাশিধের ল্লোকান্তরের দারা অবগত হওয়া উচিত তথাচ
যোগবাশিধে ৷ বহির্ব্যাপারসংরস্তোহ্দিসংকলবজ্জিতঃ ৷ কর্তাবহিরকর্তান্তরেবংবিহর রাযব ৷ অর্থাৎ বাহেতে ব্যাপার বিশিপ্ত মনেতে
সংকল্লত্যাগ আর বাহিরেতে আপনারে কন্তা

দেখাইয়া ও মনেতে অকর্ত্তাঞ্চানিয়া হে রামচ-্নুলোক যাত্রা নির্বাহকর অত এব জ্ঞানাবলয়ী অথচ বিষয় ব্যাপারেযুক্তব্যক্তিকে দেখিয়া দুই অনুভব হুইভেপারে একএই যে মনেতে আসক হ্ইয়াব্যাপারকরিতেছেদ্িতীয়এই যে আসক্তি ভ্যাগ পূর্বক ব্যাপার করিতেছে বেহেতু মনের यथार्थ डोर्व भवत्म पुत्रहे कात्नन ठाहार हुड्डन **ও খলব্যক্তিরা বিৰুদ্ধ পক্ষকেই গ্রহণ** করিয়া থাকেন অর্থাৎকহিবেন যে আসক্তি পূর্বকই বি-ষয় করিতেছে আর সজ্জন বিশিষ্ট ব্যক্তির। উ-ত্তম পক্ষকেই পুছণ করিবেন অর্থাৎ কছিবেন যে এব্যক্তি জ্ঞান সাধনে পুরুত্ত হইয়াছে তবে বুঝি য়ে আসক্তি ভ্যাগ পূর্বকই বিষয় করিতে-ছে যেমন জনকাদির রাজ্যশাসন ও শতুদমন ইত্যাদি বিষয় ব্যাপার দেখিয়া দুর্জ্জনেরা তাঁ-স্বারদিপকে বিষয়াসক্তজানিয়ানিন্দা করিত এবং ভগবান্ কৃষ্ণ হইতে অৰ্জুন জ্ঞান প্ৰাপ্ত रुहेशा युष्क **এব॰ রাজ্য করিলে পর দুর্জ্জনেরা** 

ভাঁহাকে রাজ্যার্সক জানিয়া নিন্দিত কপে ব-র্ণন করিত ইহা পূর্বপূর্বও দৃষ্টআছে ৷এউদাহরণ দিবার ইহাতাৎপর্য্য নহে যে জনকাদিরও অ-ব্র্বাদির তুল্য একালের জ্ঞান সাধকেরা হয়েন অথবা ইদানীত্তন জ্ঞানসাধকের বিপক্ষের। তাঁ হাদের মহাবল পরাক্রম বিপ্ঞের্তুল্য হ-শ্বেন তবে এউদাহ্রণের তাৎপর্য্যএই যেসর্বকা लारे मुर्क्ज न ७ मब्बनयाहिन चात्रमुर्व्छानद्व नर्स কালেই শুভাব এই যে কোনব্যক্তির পুতি দোব ও গুণ এই দুইয়েরি আরোপ করিবার সম্ভাবনা থাকিলে সেখানেকেবল দোবেরি আরোপ করে আর সজ্জনের স্ভাব তাহার বিপরীত হয় অ র্থাৎ দোব গুণ দুইয়েরি সম্ভাবনাসত্ত্বে গুণেরি পারোপ করিয়া থাকেন।

ধর্মসংস্থাপনাকান্দিরপুত্যুত্তর । ধর্মসংস্থা-পনাকান্দির লিখিত, যে, সংসার বিষয়াসকং ই-ভ্যাদি যোগবাশিধ বচন, তাহার পুকৃত অর্থই এই, বে, সাংসারিক সুথে আসক্ত, অথচ আপং नारक तुक्क उद्योग करह, व्यर्थाए यंदलाक, मृगक्ति मू-কুসুমরচিত মাল্য চন্দন দিব্য বসন ভূষণ ধারণ স্বাভিল্যিত ভোজন দিব্যা**স্**না সম্ভোগ জন্য সুখে সতত অত্যন্ত অনুরক্ত চিত্ত নিমিত্ত সর্ব-দাই বুক্ষজ্ঞানেরঅনুধানে অসক ও বিরক্ত হয় যেমন, মবযুবকের রতিরসাদ্বাদানে নবযুবতি বৃদ্ধ পতির পুঠি বিরক্তা, ফলতঃ যেমন, নবযুব-কে আসক্ত নবযুবভির বৃদ্ধপভির পুতি মৌধি-ক পুীতি,তেমন,সাংসারিক সুথে আসক্ত ভাক্ত তভ্জানির বুদ্ধজ্ঞানের পুতি নৌখিক পুীডি মাত্র। এবং কর্মকাণ্ডের অকরণার্থ আমি বুন্ধ জ্ঞানী আমার কম্পাতে পুয়োজন কি এই কথা কহিয়ালোক সকলকে প্রভারণা করে এতাদৃশ পাপিষ্ঠ নরাধ্মেরা কথা ও বুন্ধ-হইতে ভুষ্ট ও অন্তাৰের ন্যায় তাল্য অর্থাৎ উভয় বিৰ্দ্ধিত না সুৰ্গ,না বুক্ষ পায়,ক্লীবের ন্যায় পণ্ড হয়,ना পু॰र्स्स ना खीर्स, अख्वर मुख्या॰ লেহাদির সংসর্গের ন্যায় ভাঁহারদিগের রুণ্স-

র্গ ও বিশিষ্টলোকের অকন্ত ব্যংযেছেভু,সা•সারি-ক স্থাসক্তণ বুন্ধজ্ঞোমীতি বাদিনণ। কর্মবুন্ধো-ভয়ুনুষ্ট• ত• ত্যজে দন্ত্যজ•যথা। কুলাণবে এই পুকার পাঠ দেখিতেছি। এবং ভাক্তভৰ,জ্ঞানি মহাশয় ও পূরে আপনার অপুর ধ্যা স্ংহি-ঁ তার ২ পৃষ্ঠের ১৬ পদ্ধিতে যোগবাশিষ্ঠবনের ভাৎপর্যনর্থ লিখিয়াছেন, যেকাঁক্টি সংসা-র সুথে আসক্ত হইয়া ইত্যাদি। অতএব পূর্ব লিখনের বিষারণে যোগবাশিষ্ঠ বচনের পু-न बीत न्यञ त्रकार्थ व्यन्धार्थ कन्नना कतिशी यागवानिष्ठंत वहनाउद्र कथान । नित्रर्थ ना-নাবাক্যোচারণেউন্মত্তপুলাপ এবং তাঁহার ব-স্থুতঃ অবস্থুতঃ হয়? কিনা, যদ্যপি পুলাপের**উত্তর** পুদানে উত্তরকর্ত্তারবাক্য ও তন্ত্রপ হয়,তথাপি প্রথমাবধিই অগত্যাতদোষগীকারে পুলাপেরো শান্তিকরা কর্ত্ব। হয়। সে যাহা হউক্ যেম্ন, যোগবাশিঠের বহির্ব্যাপার সংরম্ভ ইত্যাদি স্নোকের উত্থাপন করিয়া জনকাচ্চুনের দৃষ্টাস্ত

दात्रा वामकि छाग भूवंक वाभनाद्रमिशा देवर য়িক ব্যাপার করণ সুসিদ্ধ করিতেছেন, তেমন তজ্ঞাক বচনান্তরের হার। ঐন্ধনকার্ল্জ্রনের লৌ **কিকাচার দৃষ্টিতে কলির জ্ঞানি মহাশ**য়দিপের লৌকিকাচার কত্তব্য, কি, সন্ধ্যাবন্দনাদি পরি **ত**ाश ७ मादात्मद्र दाद्रा मूथ शुक्रालन कृदि-कर्च, हेउर्गाम लाक विकक्ष कर्च हे कर्ड वर ह-य्वा । निवजुला । शि (वार्याभी गृहङ्ग् य -দাভবেৎ ৷ তথাপি লৌকিকাচার মনসাপি ন **मद्भारः ।** व्यर्थार**, गृहङ्**रयागीयमः **शिनि**वजुलः ও হয়েন তথাপি লৌকিকাচারের লম্বন মনে তেও করিবেননা। যদি কছেন, যে, কর্মিদিগের বিপরীতকর্ম না করিলে কলির ক্তানী হওয়া হয় मा, उत्व (यम्न, बवत्नत्रा, वान्त्रभादि बाजित विश-রীত তাৰৎ কম করে, তেমন, মুক্তকছু হওয়া দ্ভায়মান হইয়া মূৰত্যাগ করাও মলমূৰত্যাঃ গানস্তর জলশৌচ নাকরা, ইত্যাদি কর্মিদিগের বি-भन्नी क कर्य कतिया कनित्र मणूर्ग व्हानी र उया

ভাঁহার দিগের উচিত হয় কি না,? ভাক্ততম্ব জ্ঞানি মহাশয়েরা, এসকল কম্পুরির না করি-য়া থাকেন, কি তাহাতেও বা পরমেশ্রকে সা ক্ষ্যী করেন?। মনের যথার্থভাব পরমেশ্রই জা নেন, এ অভিযথাৰ্থ বটে, গেছেডু, **ভেঁছ, সৰ্ব্য**-ভর্বত্তী ,কিন্তু, মনুষ্যেও বাছচিছে রদ্বারা**নেভাব** বোধকরিতে পারেন। নত্তবা দুইও **শিষ্ট কির্দে** त्वाथ इहेटजह, इखशामामित कान रेवनकथ नाई,जकलाई मुद्रेकि नकलाई निद्रेकन ना एस । অভএব দুষ্টের লক্ষণ যাহাতে মনের যথার্থ ভাব বোধ হয়,তাহা শাল্পে কহিতেছেন ৷ বথা পরাশর:। বাহৈর্বিভাবয়েল্লিকৈ ভাব মন্তর্শ-ত॰নৃণা॰। শ্বরবর্ণেঙ্গিতাশ্বাকারৈ ক্ষুষাচেপ্টিতেনচ। व्यर्थाए मृत्वाधत्वात्कत्रा, वाक्ष्विद्भत्रद्वात्रा पूर्ष्टेह অন্তর্গত ভাব বোধ করিবেন,সেই বাছচিত্র,গদ্ शरम्ब देववर्गः हेक्छि आकात हक्कुः ७ हिहा। এবং কলির জ্ঞানিদিগের অন্তর্গত ভাব যোগ বাশিঙের বচনান্তরের দারাও বোধ হইতেছে ৷

यथा । मर्ख वुक विषया छ मन्त्रा एउ क. नी. যুগে। নানুতি ঠন্তি নৈতেয় শিশোদর পরায়ণাঃ। অর্থাৎ পাপকলিকাল পুবল হইলে সকলে-🗦 মুখে আমি বুন্ধ জানি এইকথানাত্রকহিবেক **হেনৈ**ত্রেয়,কিন্তু কেহ, বুক্ষজ্ঞানের অনু ধান ক **রিবেনা,** থেহেতু, সকললোক শিল্লোদর পরসয়ণ হুইবেক, অর্থাৎ বেশ্যাদেবন প্রস্থাদরপূরণ মা-ত্রকেই দুর্গসাধন করিয়া জানিবেক। এবচনের যথার্থলক্ষণাকান্ত,কলিরজ্ঞানি মহাশয়েরচ্তা-**হা,অপক্ষপাতি মহাশ**য়দিগেরঅগোচরকি,যদি **विरम्य अनुधा**यन ना कित्रया थारकन, ज्ञत किक्षिः মুনোযোগ করিলেই অবগত হইবেন। অতএব পর্মেশ্রকে মনের যথার্থভাবে সাক্ষীকরিয়াসা भाना भनुषात्कहे भुजात्रगाकता अभाषा हेहारज **সর্বান্তর্বতী জগৎসাক্ষী যেপরমেশ্র**,তাঁছাকে কি ৰূপে ভাঁহারা পুতারণা করিতে ইচ্চা করেন,এপু कात पूर्वाथ किवन मेगुरतत विषयना निनाकि বোধ হইতেপারে। এবং কলির জ্ঞানি মহাশ-

য়েরা, বিষয় ব্যাপারে আসক্ত, কি অনাসক্ত, এই দুয়ের হানুভবের সম্ভাবনাকি, পুথন পক্ষেরি বিলক্ষণ সনুভব হইতেছে, দুব্ব নেরা, সজ্জনকে চিরকালই দুর্জ্জন কহিয়া থাকে, তাহাতে কি **मु** ब्ह्लं न्द्र मुर्क्केन व ४ अब्ह्लान व मुक्कन व मृत ह्या छै। ভয় ভৃষ্ট মহাশয়েরাই, চিরকাল সজ্জন নিন্দক যেমন, মননেরাই, ব্রাহ্মণাদির,নিন্দক, ভাক্ততত্ত্ব ख्डानि नरामस्यत्र कि मृत् कि, बनकामित्र देवसञ्चर ক ব্যাপারে নিজ্ঞানঃ কল্পিত নিন্দকের উল্লেখ করিয়া আপনারদিগেরো জ্ঞানিত্ব নিদ্ধ করিতে ইচ্যু করেন, যেনন,সন্থিদানন্দ প্রীক্রীকৃঞ্জের রা-স লীলা দৃষ্টান্ত দিয়া পরদার পন্নেও দোষা-ভাব সিদ্ধ করিয়া থাকেন, ভাল, জিজ্ঞাসা করি? কোন গুণসাগর উত্তনের দৃষ্টান্তে কোন দোবসা-গর অধমের কি,দোব রাশি খণ্ডন হয়, এবং র-ত্নাকর সমুদ্রের সহিত ও সুবাকর চন্দের সহিং ত কি,কূপের ওজেগতিরিক্নের কোন অংশেদৃ-

ষ্টান্ত হয়, আর ইদানীন্তন জ্ঞানি দিগের বিষয়ে জনকাদির দৃষ্টান্ডের এতাৎপর্য্য নহে,যে, এইারা তাঁহার দিগের,তুল্য, এইবাক্যের দ্বারা শিস্তাচ-রণেএই ৰূ**প বোধ হ্**য় কি না? যে, ভাক্তভ্জা-নি মহাশয় দিগের মনে ২ এই ৰূপ অভিমান আছে, যে,সকল লোক, আমারদিশে জনকাদি-র তুল্য জ্ঞান করিয়া থাকেন, এপুকার ভ্রান্ত, কে আছে, যে, ভাকতভুজ্ঞানি মহাশয় দিয়ে জন-কাদির তুল্য জ্ঞান করে, যদ্যপি সম্লোম, সতি নির্মল এব শ্কর, কুশমূলাছারী ওছয়, তথাপি মলিন শ্বেত চামরের এবং অভক্ষ্য ভক্ষক গার্ কোন অংশে কি, কথন তুল্য হুইতে পারে? এবং যথার্থজ্ঞানির বিপক্ষ্য কে আছে, ভাকতভ্যুন্তা-নির বিপক্ষ, সর্বকালেই আছে, কিন্তু, অন্য যুগের ন্যায় ক্ষতিয় রাজা হইলে দুর্বল বিপক্ষ, কি পু-বল বিপক্ষ, তাহা,বিলক্ষণৰূপেই বোধ করিতে ন, এবংসুত্তন ও দুৰ্জ্জন,সৰ্মকালেইআছে, সেসভ্য, किञ् त्य महामयवा, नावहत्क हानी शूब,व्यात्रः

रम्यत्क थीयत्र कन्माबाङ, शक्ष्मा खयत्क बाद्रब, বুন্ধাকে কন্যাপানী, নহাভারতকে উপন্যাস, দেবপুতিমাকে মৃত্তিকা, এবং শালপুামকে শিং লা, বলিয়া উপহাস করিয়াথাকেন, ভাঁহারা, मूबन, किनुर्क्तन, जाहा, ज्ञानिए हेद्दा कति? এ-ব॰ কোন্ দুর্জ্জন, দুখকে ভক্ত, শর্করাকে বালুকা, শ্তে চামরকে অশ্লোম, সুবর্ণকে পিত্তন, পশ্ম পুমুকে তগর, সি•হকে কুক্কুর ও অশ্কে গর্জ-ভ:বলিয়া নিন্দা করে, এব॰ কোন্ সুজনই বাতে-ককে দুষ,বালুকাকে শর্করা, মশু লোমকে শ্বেত চামর, পিত্তলকে, বর্ণ, তগর পুরুকে পদ্ম, কুক্ক্ রকে সি॰হ,ও গর্বভকে অণু, বলিয়া পুর্ণ-ना करत्न, कि हु? कार्यानूरत प्रथवाहकरक कर्नवात्र व्यर्थाए कॅंग्ड़ीरक मानो विवास डेनहा. স করিয়াথাকেন, , ধর্ম সংস্থাপনাকাণ্কিরা, ভাঁ ছারদিণে, ভৃতীয় পুশ্লে যে, আহা তভ্জানী কহিয়াছেন, সেও,সেইকপ উপহাদমাত্র,-,তা शांखरे वृति,कर्गशांत्रमायान खरार्कत्रना

আহ্লাদে গদ্গদ হইয়া ভাকতব্জানিম্ছা-শয়, আপনায় জ্ঞানিত্ব যথাথ করিতেপ্রাণপণ যত্ন করিতেছেন, যেমন, দৈবাৎ বৃহৎ নীলের কু-ঙেপতিত, পরমায়ুর বলে পুনকৃত্বিত, ধূর্ভ <del>স্</del>পা व, जाननात पित्र नीव वर्ग पिथ्या वन्रमम्-গণের নিকটে আপনার পুতি বনদেবতার অনু-পুহ পুকাশ করিয়া পশুর রাজা হইতে বহুযত্ন করিয়াছিল, কিন্তু, যুগসহস্তে শত সহসু যত্নেও কি,কাক,শ্ক্...়গর্জভিগ্রাশ্ব-;এব কুছুরসি ছে,ছ-ইতেপারে, এখনর্থ চেষ্টা মাত্র,যেমন,সেইনীলবর্ণ শৃগাল,পশু গণকে পুতারণা করিয়া কিঞ্ছিৎকা ল পশুর রাজা হইয়া পশাৎ স্বভাব দোষে নই **হ**ইয়াছিল: তেমন, ভাক্তব্জানি মহাশয়ও া স্বানুচর জীবগণের নিকটেকিঞ্চিৎ কাল জ্ঞানিত্ব 🗸 পুকাশ কয়িয়া পশাংশভাব দোবে সেই নীল জযুকের দশা প্রাণ্ড হুইবেন, অথবা, বেমন, চ-টক, খঞ্জনের নৃত্য শিক্ষায় যত্ন করিয়া লাভে হইতে আপনার নৃত্য বিষ্ত হইয়াছিল, তা

হার সেইকপই হইবেক, এবং দুর্মন কিয়া দুজন, দোষও গুণ এই উভয়ের একমাত্রের সং ভাবনা হলেকি কহিয়া থাকেন >

ভাকতভ্বজ্ঞানির উত্তর। ঐ ধর্মসংস্থাপনাকা-ভিক্তরলিখিত বোগবাশিগ্রচনে প্রাপ্ত হইতেছে যে যেব্যক্তিবিষয় সূ থ আসক্ত হয় আর কছে যে আমি বুন্ধকে জানি সুতরা পেত্যজ্ঞ কিন্তু इंश विरवहना कर्लवा (य वुक्कनिष्ठकमानि अमुख ক:হননা যে বুক্ষকে আমি জানি অভএব বে এনত কছে দে অবশ্যই কর্ম্ম বুদ্ধ উভয় ভুষ্ট এবং ভাক্ত কমিরনগ্র অধ্য হয়। কেন্দুডিঃ ি অবিজ্ঞাত• বিল্লানতা• বিজ্ঞাত **মবিলানতা•**,,! অর্থাৎ যাঁহারা বুন্ধের অগোচর স্বপ নিশ্ম ক রিয়াছেন তাঁহারা অবশ্যই কছেন যে বুক্ষরকণ জ্ঞেয় আমাদের নহে আর যাঁহারা বুন্ধকেনালা (मन जाँकामा करहन यतुक्त व्यामार**न**न उद्धा ह-श्चिन । उत्व मुब्ल ने अथला व्यनवामत्मम् रच्छिन

আপনাকে বুদ্ধজ্ঞানী কহিয়া অভিমান কর এ পৃথক্কথা।।

**ধর্ম দ**ংস্থাপনাকা**টি ক্**র পুত্যুত্তর। ভাকত বু জ্ঞানি নহাশয়, পুথনতঃ দ্বীকার করেন, যে, যে ব্যক্তি, বিষয় সুথে আসক্ত অথচ কছে,যে,মা-মি:বুক্ষজ্ঞানী সে সুভরা কর্মবুক্ষো ভয়ভুষ্ট, অত এব সে অন্ত্যজেরন্যায় ত্যজ্য, পশ্যুৎ কছেন,যে ব্যক্তি,বুন্ধকেনালানে সেই কছে,যে,খামি বুন্ধ কে জানি, কিন্তু, যে ব্যক্তি, জানে সে,কদাচ কহে না, তবে দুর্জ্জন ওথলেরা, নিথ্যা অপবাদ দেয়, থে, তুনি, আপনাকে বুক্ষজ্ঞানী কহিয়া থাক?। ভাল জিজ্ঞাদাকরি, এইকপটবাক্যেরদারা এ-ইবোধ হয় কিনা, যে, ভাক্ততন্ত্তানি নহাশয়, আপনাকে আপনি বুক্ষজ্ঞানী কহিতেছেন, **অত**ু এব তেঁহ্গ উভয় ভুষ্টপ্তত্যদ্ধ্য হয়েন কিনা? এবং मिहे जनवार यथार्थवार इस किनारे वर यथार्थ বক্তা দুৰ্জনওথল, কি, যে যথাৰ্থবক্তাকে দুৰ্জ্জন ওখল কহে, সেই, দুর্ক্ত ন ওখলের মধ্যে অতি

পূর্ব হয়? অপক্ষপাতিমহাশয়েরা,যথার্থ বিবে-চনা করিবেন, যদি কছেন, যে,নাজানে সেই কছে, যেজানে, সেকহে না,এবাক্যের এতাৎপর্য্য নছে, যে, আপনাকে বুন্ধজ্ঞানীকহা, কিছু, যথার্থবুন্ধ জ্ঞানির সুৰূপ বর্ণনিমাত্র, তবে সে,কথাস্তর, এ কারণ, অসম্বন্ধ পুলাপ নাত্র, এবং দুর্জ্জন থলে মিথ্যা অপবাদ, দেয়:যে, তুমি আপনাকে বুন্ধ-জ্ঞানী, কহিয়াথাক, এই ক্রোধোক্তিঅনর্থ এব• তেঁহ, যথার্থতভ্জ্ঞানী হইলে ও এই ক্লোধোক্তি করিতেননা । যদিতত্ত্বজ্ঞানিরন্যায় দুইচারিকথা কহিলেই যথার্থ তত্ত্তানী হয়ঃ তবেকে না হ-ইতে পারে? ৷এব॰ চৈত্রে ৎসবসময়ে ইতর লোক সকলকে ও যথার্থ সংন্যাসী কেন নাক্ছা যায়? এবং বেশনাত ধারী হইলেও তাহার সেইৰপ হয়,যেমন,এক মেষপালক, ব্যাঘু হইতে মেষ-গণ রক্ষণার্থ রাত্রিযোগে কৃষ্ণবর্ণকম্বলে সর্বাক্ বেঠিত করিয়া নহিষবেশধারী হইয়া বহুকাল নেবর কা করিত, পশাৎ একসুবুদ্ধিব্যায়ুকত্ ক,

সেই মেষগণের সহিত সেইমেষপালক, ভক্ষিত হ্ইয়াছিল,, সে যাহা হউক্ শন্ দন্উপরন, তিতিক্ষা, সমাধান, শুদ্ধা অমান, ও অদম্ভ-ইত্যাদি সকল বিষয়,জ্ঞানিদিপের সাধনাবস্থায় বরুসাধ্য এবং সিদ্ধাবস্থায় স্বভাবসিদ্ধ হয় তা হা, গীতা ও তাহার টীকাকার শ্রীধরস্বামি কর্তৃ ক,বর্ণিত আছে, কিন্তু, যদি ভাক্ততভ্, জ্ঞানি নহা-শয়ের অপূর্বধর্ম দ•হিতার১১পৃঠে১১পদ্জিতেলিথি চ পুণবওগায়ত্রী এই দুই নিগ্চ শাঙ্কে নশ্পূর্শ। **महमाहिः क्लिब्र**ङ्डानिहिश्यं जाधनावश्राय यञ्ज কলির জ্ঞানিমহাশয়দিণে, ভাক্ততন্ত্রানী ক-हिया निन्ता कता, वर्ष न ज्ाभनाका किक् दिरात **অতি**অনুচিত, অতএব তাঁহারদিণ্টে ভাকতন্ত্র-জ্ঞানিরো অধন কহাবায়না, বেছেত্ত, ভাঁহার দিগেরপুণবাদি নিগৃঢ শাক্তের নিগৃঢ অর্থের অ নুসারে বন্ধ্যা পুথেরন্যায় ভাক্ততভ্,জ্ঞানী অণ **প্রসিদ্ধ হয়। প**রস্থু, পূথনতঃ বেদা**ন্তে বু**ক্ষজিজ্ঞা-

সার অধিকারির লক্ষণ কহিয়াছেন। ব্থা। ইহা-মুত্র কল ভোগ বিরাগ নিত্যা নিত্য বস্তুবিবেক भगामि नादन पर्वेकनम्भ न्युक्षुक्वानि व्यदिकाः ति विष्मप्रानि । व्यर्गाट (यञ्चतः **इंहरनारक ७** পরলোকে ফলভোগ কামনা রহিত এবং এই প দার্থনিত্য, এই পদার্থ অনিত্য, এইৰূপ বস্তু বি-বেচনাকর্ত্তা এবং শন,দম, উপরম, ভিতিকা, नमायान ও শুকा, এই नायन यहेक विनिष्ठ এवर मूनूक् रुखन, (उँर, तुक्क कि का नात अविकाती জ্ঞাননাধ্বের পুকার, ভগবদ্গীতার ত্রয়োদ-नायास्त्र जगवान् ञ्रीक्क,कहिशाहन।यथा। चनानिषु ननिष्ठ ३ निर्हिश्ना काश्वि बार्ब्ड व । चाहार्य्याभामन रनोहर रेड्यं नाचाविनियुदः । ইন্দ্রিয়ার্থেষু বৈরাগ্য মনহন্ধার এবচ। জন্মত্যু জরাব্যাধি দুঃখদোবানুদর্শনং ৷ অসক্তি রনভিত্ব-रः পুথদার গৃহাদিষু।নিত্যঞ্সমত্চিত্তভুনিটা। নিষ্টোপপতিরু ৷ ময়ি চানন্য যোগেন,ভক্তি রব্য-

ভিচারিণী। বিবিক্ত দেশ সেবিত্ব মন্ত্রতি জ্বর্ নসংসদি ৷ অধ্যায়জ্ঞান নিত্যত্বং ভৰ্জা-नार्थमर्भनः । এতজ্জानमिष्ठि (পुक्ति सञ्चानः रम्राज्यारनाया । व्यर्थार (यवाकि, उद्धान जायः ক হয়েন, ভেঁহ, অভিমান, দম্ভ, ওহিণ্যা, পরি-क्रागकतित्वनःक्रमाः भीनः अनत्नासः कत्वः व् ইবেন: এব শুচী,ছিরচিত ওস হত, হইট্ন আ চার্য্যের উপাসনাকরিবেনাইন্দ্রিয়ের বিষয়সবরে নৈরাগ্য বিশিষ্ট গুনিরহকার, হইবেন এব পুদঃ शूनः बन्ना, मृजुर, बन्ना, नानावराधि, ७ नानापुः ४, এইক্পে সংসারের নানাদোষদর্শন করিবেন।জী পুত্র গৃহাদিতে শ্রীতিত্যাগ ও পুঞাদির সুখেও দুঃখে সুখদঃখ ত্যাগ, করিবেন এবং ইষ্টও অনিষ্ট উভয়েতেই সমভাব হুইবেন। বুক্করপমামা তে অনন্চিত্তে অচলাভক্তি, শুদ্ধ নিভূত স্থান নে বসতি, প্রাক্ত জন সভাতে অরতি, অধ্যা ছাজ্ঞানে নিত্যত্বজ্ঞান, এবং তত্ত্ত্তানের অর্থ-म भ न, कतिरवन, अहे मक्ल खारनत शुकात, हेरात

বিপরীত, জ্ঞান বিরোধী যে: মান ও মন্ত্রপুভূতি তাহা সর্বথা ত্যজ্য। এবং ভগবদ্পীতার দ্িতীয়া-ধ্যা য় তত্বজ্ঞানির লক্ষণ, এইক্স ক্থিত আ-ছে ৷ যথা ৷ দুঃথেৰুনুদ্গুমনাঃ সুখেৰুবিগতস্পু হঃ বীতরাগভয়কোবঃ স্থিতবী মূনি ক্চাতে। অ-র্যাৎ দুঃথেতে অনুদৃশ্বচিত্ত, সুথেতে ওনিস্পৃহ, বিৰয়ানুরাণ শূন্য ভাভয়, অজোব, এবং মুনি অর্থাৎ মৌনশীল, যেননুষ্য, তাঁছার না-म इंडिपी, पर्याट ज्लु द्धानी । এবং वृक्त्या -श्वित शुकात ७ जगवम्गी जात अहेल माव्या-रम् जनवान् औक्क कहिमाहिन । यथा। সিন্ধি স্পান্তো যথা বুন্ধ তথাগ্ৰোতিনিবোধমে। अभाष्ट्रित कोल्डिय निश्चा ब्हानमा यानता। तुः क्ता विশुक्तया यूटका श्वताचानः नियनारः। ग-द्वानीन् विषयान् उरक्ता द्वाग (इरवी व्रुप्तनरह ।वि. বিক্ত সেবী লঘাশী যতবাক্কায় নানস:। ধ্যান বোগপ রো নিত্য বৈরাগ্য সমুগাশ্রিতঃ অহ্ কার বল দর্পং কাম কোষণ পরিগৃহ । বিমূচ্যনি-

ম জঃশান্তো বুকত্রায় কলতে। অর্থাৎ ছে জ্জু ন,ষষজাতীর কর্মের দার। সিদ্ধি প্রাণ্ড হইন য়া বুজোপাসকের যেৰূপে বুন্ধ পান্তি হয়, ভাছা শুবণকর, জ্ঞানের বে উৎকৃষ্টানিধা ভাষা,ভোমা-(क न'क्लिथ कहि,नाडिक तुकियुक श्रेया जा. चिकरेषर्यायनयस्य निन्ता दूषि कतिया भुवना-দি পঞ্চেন্দ্রির শব্বাদি পঞ্চবিষ য় এব॰ তাহাতে রাগও দ্ব, ত্যাগ করিবে ন, পশাৎ শুদ্ধদেশ-বাসী, লম্বাশী, সংযতবাক্য,সংযতকায়, সংয়ত-নানস, বুক্ষধ্যানেতৎপর, এবং সর্বদাবৈরাপ্যা-ৰলম্বী, হইয়া অহন্ধার,বল,দর্গ,কাম-ক্রোধওপুতি-গুহাদি,ত্যাগ করিয়া নততা শ্ন্যুশান্তিরসেপ রিপূর্ণ হইলেবুক্ষাহ্ণ অর্থাৎ অমি বুক্ষ এইরপনিশু ল মতি হইয়াছিরহইবার যোগ্য হয়েন। অভএব এই নকল দূঢতর শাস্ত্রপুমাণের অনুসারে কলির জ্ঞানি নহাশয়েরা, ভাক্ত,কি অভাক্ত, হয়েন? অপক্পাতি নহাশয়দিগের কিবোধহয়? ভাকই বোধ হইবেক, বেংছভ, ভাঁহারা, আপনারদিগের না অধিকারাবস্থা, নাসাধনাবস্থা, নাসিদ্ধাবস্থা, এক অবস্থাও মীকার করিতে পারিবেননা, একি দুরবস্থা, যদ।পি পর্যেশ্রকে সাক্ষীকরা১এই **এক** পুকার পুভারণার, উপায়,তাঁহারদিগের স্বাছে ভাহাতেই পুথমাবস্থায় অবোধ লোক দিশের নয়নে ধূলি পুক্ষেপ করেন, তথাপি অপক্ষ পাতি সুবোধলোক দিগের নিকটে কিবলে পুভারণা করিবেন,পূর্বেও শ্রীওফগোপেশ্র পুভৃতি অনেক পুতারক ছিল,তাহারদিগের পুতারণাইবা কোন্ সুবোধলোক দিগের অবোধ হইয়াছিল তাহার দিগের নিকটে এঁ হারা,কোন্কীটস্যকীট,হইবেন अव॰ लाजाय अजाञ्जिल शुमान मार्काद्रालाहेवा ना॰ ধনাবছার স্বীকার কিরুপেকরিবেন,যদ্য**পিলপক্** পাতি নহাশয়েরা: কহেন,যে, ভাঁহারা,কি আন্ধি লব্জ কেবলাঞ্জলি দিয়াছেন, না অনেককাল দিয়া-ছেন, তথাপি সিদ্ধাবস্থায় মুনিশব্ শুব্বে অব-শ্যই মৌনী হইবেন, কিছু, তাহাতে অপক্ষপাতি মহাশয়েরা,নৌন সমত লক্ষণ, এইবচন দৃষ্টি-

তে নিশ্বাবস্থায়তাঁহার দিগের স্বীকার করা বোদ ধ করিবেননা, যেহেন্ত, অন্ধপালকেন্তর স্ববলের আবিপত্য,কদাচ সম্ভব হয়না,তবে যে, তাঁহা

রা, বুক্ষত্ব প্রান্তিষকণ অত্যুদ্ধ ফলের গুহণেচ্যুয় অতি সুগম বোধে পুনঃপুনঃ হন্তেন্তোলন করেন তাহাতে কেবল হাস্যাম্পদ হওয়া এবং উভয় ভুষ্টভারদৃদ্ভা করা বিনাকিবোধহইতেপারে? 1

ভাক্ততভ্জ্জানির উত্তর।কোনএক বৈঞ্চৰ যে আপনবৈঞ্বধ্যেরি লক্ষাংশের একাংশ অনুষ্ঠান ক্রেনা ওবিপরীত ধ্যানুষ্ঠান করিয়া থাকে সে যদি কোন শাক্তের স্বধ্যমানুষ্ঠানে তুটি দেখিয়া তাহাকে ভাকশাক্ত কহে ও ব্যঙ্ককরে এবং কোন বুক্ষনিটের মধ্যানুটানে তুটি দেখিয়া ভাহাকে ভাক্তভৰ্জ্ঞানী ও নিন্দিত কংহ কি खु जाभनारक जाक रिक्य ना मानिता शय नः इाপनाकाण्को এব॰ সর্বজনহিতৈথী বলিয়া অ ভিমান করে তাহকে বিজ্ঞব্যক্তিরা নিন্দকের ম-ব্যে অভিশয়নিন্দিত করিয়াজানিবেন কিনা?।

ধর্ম সংস্থাপনাক। ভিন্দর পুত্রভর।

পুথনতঃ,ধর্মাসংস্থাপনাকাভিক দিগের পূর্বোক লিং:নানুসারে ভাক্তবৈশ্বও ভাক্তশাক্ত **খগুরের**• ন্যায় অধীক, দৃতীয়তঃ কি বৈশ্ব, কিশাক্ত, বে লোন উপাসক, যদি নানাবেশধারি নটের ন্যায়ও মায়াবিরাক্ষসের ন্যায়ঃকোনব্যস্তিকে বংল বামাচারী, কখন ভোগী,ৰখনযোগী,ৰখনবা বু হ জ্ঞানী, দেখিয়া অন্ধুশাষ্যতের হারা মতহত্তি मृत्थ्रात मर्भमाखित्रम्<mark>राञ्च, मृद्ध्यत्यत्र स्रोड्</mark>डन्। स्रा ভির নিন্ত প্রিয় বচনের দারা উপদেশ নাক-রিয়া অপ্রিয় ভয়পুদর্শন বচনের দারা **উপদেশ** क्रावन कर सम्भाजित अनुमाहत सम्भान्धा-নেতঃত থ্যাক্ষ, ভাষে সেইবৈশ্ব আদি উপা ज्ञात्कद्भा स्थार्थ रेवक्षवाहि अव १ १ म म श्रामा-কাশ্দী,ওসর্জনহিতৈষীনাহইয়া ভাক্তবৈশ্বা-দিও নিন্দকের মধ্যে অতিশয় নিন্দিত কিৰূপে হ্যেন?এব থেমন,কলিরজ্ঞানি মহাশয়ের',যথা-র্থতত্ত্বজানী না ক্ইয়া আপনারদিণ্টেযথার্থতত্ত্ব

क्छानी केत्रिया मार्यान्य किन्न देवस्यां विकास **जरकता, जाक रे**क्कवाकि ना इहेता जाशनात्राहे 📭 जाक रेवकवारि किंबली मानिए भारतन 🤉 **এবং অভাক্তউগাসক** দিগের অতিদান করা সর্বথা অসম্ভব, বেহেন্ত, ভাতদিগেরই অভিনান **चारक्त जूरा ७ जीवनदन अवः यहः नि** दिक्यः-দি পঞ্চোপাসক, আপনার২ উপাসনার সর্ব অ-ৰুষ্ঠান করিতে অশক হয়েন, তথাপিপাপক্ষয় ध्वाक शाधि, डाँश्विम्श्व व्यवसाय वाउ বেহেত্ত, বিষ্ণু পুভৃতি পঞ্দেবতারনাম জন্ম মাত্রেই সর্বপাপক্ষয় ও অন্তে মোক্ষ প্রাতি হয়। यथाकाभीथर७। উमानामामृडः भीडः (यरन् व्यगञीजला । नका व बननी खनार म शिरदरकु बु न भ्रव উমেতি गुष्कद्र भञ्ज या इनि न मनूया রেং ।নমরেং চিত্রগুর তং কৃত পাপন্সি ব্রিজ। **অর্থাৎ হেঅগস্ত্য, যেব্যক্তি, এই জগতীতলে** উমানাম্বৰ্গ অমৃত পান্করিয়াছেন, ভেঁহ, ক-शान बननीत खन्मानकत्त्रनना।(य्वाकि, मर्बरा

উমা এই যুদ্রকর মজ মরণ করেন, ভেঁহ, পাগী হ্ইলেও চিত্র ওওঁ হোকে মারণ করেন না 1বুল্ব বৈবর্ত্তে। শিবেতিশবুমুদার্য্য লভেৎ সর্বশিবংন इः। পাগঘো মোফদো नृ गाः, मिव खन পুकी-র্ত্তিতঃ। শিবেভিচ শিব॰ নাম যস্য বাচি **পু**বর্ত্ত-তে ৷ কোটিলন্মাৰ্ল্জতংপাপংতস্যনশ্যতিনি-निज्: । अर्थाए सिव 4 है सन् उहादन कदिया भनुष्यः अर्थकन्यान जाजनः श्रामः (यर् ख, निय, मः নূষ্য**হিংশর পাপনাশ ও** মোক দান করেন,সে-ইহেভু,ভেঁহ,শিবনানে খ্যাত হয়েন। যেব্যক্তি র মুথ হইতে শিবএই শুভদায়ক নাম নির্গত হয়, ভাঁহার কোটিজন্মাব্জিত পাপ তৎক্ষণাৎ অবশ্যনত হয়। পদাপুরাণে ৷ পরদার রতঃ পাপী পরহিংসাপকারকঃমুক্তিমায়াতি সংশুদ্ধো हरत्र नीमानुकीर्खनाए। नारमाश्मार यावजी निक्तिः পাপনির্হরণে হরে: । তাবৎকর্তু-নশঙ্গোতি পাতক পাতকী জন: ৷মহাভারতে ৷ কৃকেতি ম-

**কল'নাম যক্ষ্যবাচি পুরর্ভতো।ভন্মা**ভব্ডি রা**ছেন্দ্র** মহাগাতক কোটরঃ। অর্থাৎ পরদার যত পা-शीलडहिन्तम् हर्ममा दका एक, वर्ममूब्र ग्या ७० वर्ष नामागुरी उत्न निद्वांत्र क्षेत्रम मुक्क्स्नाना हाल হারি নামের বত লাভি পোতকীজন,তত**পাপ** ফ-রিতে শভ হয়না। ছেরাজেন্দু,ঞীকুয় এই মঞ্চ-ল নাম,বেংসেরির মুখ হইতে নিগত ২ং, রাহার কোট **২মহাপাত**ক ভন্ম**ত্বপা**য় ।ভবিষ্যোত্তরে । বাদশাদিত্যনামানি প্রাতঃকালে পঠেনরঃ। স-র্বপাপ বিমুক্তাত্মা দুঃসংগ্রু বিনশ্যতি।যঃমান্ত পুাতকত্বায় ভক্ত্যানিত্যমতন্দ্রিতঃ৷ সৌখ্যন্য-ু যুক্তথারোগ্য লভতে মোক্ষমেবচা অর্থাৎযেব্য ক্তি, প্রাতঃকালে মাদশ আদিত্যের নাম পাঠ করেন,ভেঁহ,সর্বপাপ ছইতে মুক্ত হয়েন ও তাহাঁর দুঃস্গুনইহয়। যেব্যক্তি,প্ৰাতঃ কালে গাৰেত্বোন করিয়া ভভিপূর্বক নিত্য দাদশ সাদিত্যের অরণ ক রে≂ ভাঁছার সুথ,আয়ুঃ,আরোগ্যে,ওনোক ,ছয় । স্থান্দ গণেশং পুতি শিববাক্যং। শুত্বাত তিং

মহাপুণ্যা•ষ্ট্রতান্বিযুনায়কান্।জন্তু বি স্মৈন বাধ্যেত পাপেভ্যেছি পুছীয়তে ৷যে ত্বা• অর্বি কৰুণাময় বিশুনুৰ্ত্তে সর্বৈননা মপি ভুবো ভূবি মুক্তিভালঃ ।তেবা পাদৈব হরসীহ মহোপস্গান্ সুর্গাপবর্গমিপ সংপ্রদাসি তেভ্যঃ মর্থাৎ ছেগ-ণেশ, সর্ববিঘুনায়কদিগের মহাপুণ্য জনক স্তব শুবণ ও ভাঁহারদিণ্টে মরণ করিয়া জীব, সকল বিঘু হইতে ও পাপ হইতে মুক্তহয়৷ হেক্জণা-ময়, যাঁহারা, ভোমাকে মরণ করেন, ভাঁহারা. সর্ব পাপের আলয় হইলেও মুক্তিভাজন হয়েন এবং তাঁহার দিগের উপসর্গ সকল নষ্ট হয় এব তুমি, তাঁহারদিখে স্বর্গ ও অপব্য ও পু-দান কর।

ভাকত ব্জানিমহাশয়, জ্ঞানও কর্ম এই দুই-কে অনুপুহ পূর্বক তুল্যকপে স্বীকার করিয়া আ-পনার আপাদ নস্তক পর্য্যন্ত সর্বাঙ্গে লিও দোব পক্ষের পুক্ষালনার্থ বহু যত্ন করিয়াউপায়ান্তর না দেখিয়া বৃশ্কি ভয়ে পলায়নান ব্যক্তির ভ্রান্তি পুযুক্ত সর্পনুথে পতনেরন্যায় পশ্বাৎজ্ঞানের পুতি কৰণাবলোকম পূৰ্বক কমা হইতে জ্ঞানের উত্ত-মত্ত্রীকার করিয়া নিজ দোষ পঙ্ক পুক্ষালনে পু-নর্বার বহুষত্র করিতেছেন, কিন্তু, তাহাতে সেই **माय शर, कदल वज्जुलाश ७ जन्जनां की** भर्या प्र পুরিষ্ট হুইবেক, যেমন, হোম বংলি কেলা গুল-र्याप्त व्याप्त्राल निष्ध निमित्र भणाए जाहात्र भुः **ফালনের পু**য়াসে ব্যগুচিত ধরীয়া অজ্ঠনাত্র প্-**भागवल बाहुर म**हाशह 🖫 संस्थानुहान कतिला তাহাতে পুকালনের বিষয় কি,যরঞ সেই আদু মল-নবহারের হারা তাহার অন্তরেওপুরিউম্র ভাল, ক্ষতি কি, বাদ মে পথে ও তাঁহার দিগের লহা দলিও মুলপংগরপুক্রন্দ হয়, ভবে তাহা-তেও অত্যন্ত আহ্বাদের বি১য়, বেছেত বেমন পাপিদিগেরপাপনোচনাথ, পরমেশ্র পুায়শ্যিত্ত-র ও পুণ্যতীর্থের কৃষ্টি করিয়াছেন, ভেনন, ধর্ম মণ্জাপনাকাণিক সকলকে ও ভানি নিত ইস্তি করি-য়াছেন:তবেষে তাক্তত**ভ্ব**ক্তানিন্দা**শ**য়েরা নধ্যে২ সেইসকলব্যক্তিকেভাবান্তব্নেধ**র্মস•স্থাপনাকাঙ্কী** বলিয়া উপহাস করেন,সে তাঁহার দিগের তাম-সম্বভাব পুযুক্ত, তামসিকদিগের ধর্মাই এই**, যে** কুসঙ্গ কুব্যবহার ও ধার্মিক লোক দেখিলে উ· পহাসকরা;কিভু যর্মসংস্থাপনাকাজিফরা,তাহা তে তাঁহারদিগের পুতি অসভুষ্টনছেন,কারণ ভাক্তভুজ্ঞানিমহাশয়েরা, শ্রীদ্বগদাথদেব কেই নিম্বকাঠ কহিয়া ব্যক্ষ করিয়া থাকেন এবং 🗐 সাল গ্রাম চন্দুকে ওভষাকরিয়া চূর্ণকরিতে ইচ্যা করেন,তাহাতে ধর্মাদ স্থাপনাকালিক দিকেউপ হাসকরা, গ্রাহারদিপের কোন্বিচিত্র,বর্ঞ ধর্ম न र ज्ञानाका किन्द्रा, जाँशात मिरात मक्नार्थ পুতি নিয়ত ধর্মের নিকটে এই পার্থনা করিতে ছেন, যে হে ধর্মা, এই দুষ্টান্তঃকরণ দুর্জ্জন দিগের দুঃস্বভাব দ্র কর?।

ভাকত বৃজ্ঞানির উত্তর। জ্ঞান ও কর্ম এই দুইকে সমান কপে দ্বীকার করিয়া এই প্রের পণ্টিক সকল লেখাগেল বস্তুতঃ কর্ম ও জ্ঞান

এই দুয়ের অভ্যন্ত পুডেদ যেন্ছেত্ত করের স-ম্ক্ৰনুষ্ঠায়ী হইলেও জ্ঞান নিষ্ঠের মধ্যে অ-পুতিষ্ঠিত যে ব্যক্তি তাহার তুল্যও সে হয়না ভথাচ"মুণ্ডক শুক্তিঃ। প্লবাছেতে অন্তা যজ্ঞক পা অষ্টাদশোক্তমবর থেযুক্ম 1 এত গুয়ো যেভিনন্দভিমুটাঃজরাম্ভু, তে পুল বোপয় ছ, **चडाप्रमाक् (य युद्ध क्र क्र क्य जाहा मक** न दि-नानी इस व विनानी कर्याक (य महज वाकि **শ্রেয় করিয়া জানে তাহারা পুনঃ** ২ জনা জগা মৃত্যুকে প্রাপ্ত হয়। - সবিদ্যায়া বহুধা ২ওঁন : । **बयः कृ जार्था है ज**िज्ञ निर्मात वालाः य विर्मात নপুবেদয়ন্তিরাগাৎ তেনাত্তরাঃক্ষীণলোকাশ, ব স্তেন। অথাৎ যে সকল ব্যক্তি সজ্ঞান ৰূপ কৰ্ম কাণ্ডের অনুষ্ঠানে বহু পুকারে নিযুক্ত থাকিয়া সভিমান করে যে আমরা কৃতকার্য্য হুই **সে স** क्कान (बारक्ता कर्ष्य करबाद वामना उ वाक इहे য়া তত্ত্বান জানিতে পারেনা অতএব সেই স क्ल वाक्ति कर्मा कल क्षत्र हहेल पुः तथ मः। हहे

रा मूर्ग इरेटि हु । इस । बात ब्यु विश्व खा ৰির বিষয়ে ভগবদ্গীভাকছেন। । অজ্রু বউবাচ অষ্ডিঃ শুদ্ধযোপেতো যোগা**চলিত মানসঃ।** প্ৰপ্ৰাপ্য যোগ সংহিদ্ধি বাংগতি কৃষ্ণ গছুতি ৷ কল্পিলাভ্যবিভু**ইশ্বিলাভুমিব নশ্যতি । অপু** তিখোমহালাকো বিমূচোবুক্ষণঃপথি ৷ অজুন কহিতেছেন যে ব্যক্তি পুথনতঃ শুদ্ধান্বিত হই-য়া জ্ঞানাভ্যামে পুৰুত্ত হয় পশাং বহু না করে এব° জ্ঞানাভ্যান হইতে বির্ভ হইয়া বিষয়া**শ** ক হয় পেব্যক্তি জ্ঞান ফল যেমুক্তি ভাহানাপা हैया कि गाँउ भार इहेरवक मिया कि क्यां जा গ পুযুক্ত দেবস্থান পাইলেকনা এবং জ্ঞানের অনিদ্ধতাপুযুক্ত মুক্তিকেনাপাইয়া নিরাশুয় eবুন্ধ প্রাণ্ডিতে বিমূচ হইয়া ছিল্লমেষের ন্যায় নষ্ট হই বেক কিনা ৷ ভগবান্ ক্ষ এই পুশ্লের উত্তর দিতেছেন। "ভগবানুবাচ। পার্থ নৈবেহনামুত্র विनाम उमा विषाज । निक्कामा क्र किए দুৰ্গতি • জাতগঢ়ুতি । পাুগ্য পুণ্য ক্তাংলাকা

नुविदा नाम् शः नगाः ॥ म्हीनाः श्रीन-তাং গেছে বোগ ভুঞ্জোভিলায়তে 🛭 তথা 🛭 তত্ৰত বুদ্ধি সংযোগ লভতে পৌৰ্নেছিক যততেচততে। ভূয়ঃ সংশিক্ষোকুকনদন । হে ভা চ্ছুন সেই ব্যক্তির ইহলোকে পাতিত্য ও পর লোকে নরক হয়না। যেহেত্ত শুভকারি ব্যক্তির **पूर्णि कराणि एयना। मिरे छान** जुटे वाछि किया पित्र भागा य मुर्गलाक मदन जाहार उ वह काल भर्याच वान कत्रिया मूहियनवान् वा-ক্রিদের গৃহে জন্মলয় পরে ঐ জন্মেই পূর্বদেহা ভান্ত জ্ঞান পুণ্ডে হইয়া ভাহা রহারা মুক্তির পু তি অধিক যত্নকরে ॥ মনুঃ। পেসর্বোম পিচৈতে यामाञ्चळानःभद्रःमृठः । उक्रागुःमई विमा नाः পু।প্রতেহানৃতং ততঃ । এই সকল জ্ঞানের নব্যে আয়ক্ত।নকে পরন ধ্র্ম কহাযায় থেছে **ভ সকল ধ**মেরি শুেষ্ঠ যে আত্মক্তান তাহা *হ*ই তে মুক্তি হয় ৷

ধ্য সি স্থাপনাকাভিকর পুত্র ভর। যদ্যপি জ্ঞানের প্রাধান্য,নশ্বাদিবচনে কথিত আছে, তথা-পিকর্মব্যতিরেকে জ্ঞান হইতে পারেনা, অত এব কম বিষয়ে ভগদ্গীতাতে জ্রীভগবানের बाक्र ।यथा। नकर्मनामनात्रम्धा देवसूर्वाःशुक्रावा 🟞 ্র তে। নচ সংন্যসনাদেব সিদ্ধিং সমধিগছুতি। অর্থাৎ কর্মের অনুষ্ঠান ব্যতিরেকে পুক্ষের ক नाठ खान बत्याना अवः कर्त्यात्रमाता विख्नु कि বিনাকেবল সম্যাসে ও মোক্ষ প্রাণ্ডি হয়না ! অতএব যোগবাশিষ্ঠেও সেইৰূপ দৃষ্ট হইতেছে য়থা। উভাভ্যানের পক্ষাভ্যাৎ যথা থেপক্ষি-ণা•ুগতিঃ। তথৈব জ্ঞান কর্ম্ম ভ্যা• সিদ্ধি র্ভবতি নান্যথা। অর্থাৎ যেনন্ট ভয় পক্ষের দারা প-ক্ষিগণের আকাশেগতি হয়,তেমন,জ্ঞানও কর্মা এই উভয় পক্ষের দ্বারাই মনুষ্য দিগের ও মো **ক্ষ প্রায়িহয়,নতুবা হয়না । অত এব ভগবদ্গী**• তাতে পুনর্বার শ্রীভগবানের বাক্য।যথা । य-

ভো দান তপঃ কর্ম নত্যজ্য কার্য্য নেবতং 1 যক্তো দান তপদৈৱ পাৰনানি মনীযিণাং ৷ এ-তান্যপিহি কর্মাণি সঙ্গ'ভ্যক্তা ফলানিচ ৷ ক ৰ্ভব্যানীতি মেপাৰ্থ নিশ্কিং মতমুক্তমং ৷ নি-য়তস্যত্ত সম্যাসঃ কর্মণো নোপপদ্যতে।মো-হাত্তস্য পরিভ্যাগ স্তাম্সঃ পরিকীর্ত্তিভঃ। দুঃখ भिट्डाव ये९ कर्या काम्न (क्रूम डग्ना९ उ। कर কৃত্বা রাজসংভ্যাগ', নৈব ত্যাগ ফলং নভেৎ। কাৰ্য্যনিভ্যেৰ যৎ কৰ্ম নিয়ন্ত জৈয়ভেংজ্জুন । সঙ্গত্যক্ত্বা ফলক্ষৈব সভ্যাগঃ সান্ধিকা মতঃ। অর্থাৎ যজ্ঞ দান ওতসপ্যা;ইত্যাদি ক ম্ব ,কদাচ ভ্যন্তা নহে, অবশ্যই কর্ত্তৰ্য,যেহেন্ত যক্তাদিকমা, বিবেকি দিগের চিত্ত শুদ্ধির কারণ ণ হয়। এই সকল কমা কর্ত্বাভিমান ও কল কামনা ত্যাগ করিয়া অবশ্যই কর্ত্তব্য, ছে অ জ্বন,আমার এইমতই উত্তম।কর্মের পরিত্যা-গ কর্ত্তব্য নছে,যদি নোহ পুৰুক্ত পরিত্যাগকরে তবে সে ত্যাগকে তামস কহাবায়। কর্ম দুঃখ জনক হয়, এই দুৰু জিপুযুক্ত কায় ক্লেশ ভয়ে য দি কর্ম ত্যাগ করে, তবে সে ভ্যাগকে ভামস ভাগে কহা যার,ভাহাতে ভাগের ফল হয় না *र*ह बब्धु न,कर्स खरमाहे कर्खवा, बहे खान क রিয়া কর্ রাভিমানশ্ন্য ফলকামনারহিত হই-য়া যে,কর্মের অনুধানকরে,ভাহার নাম সাত্ত্বিক ত্যাগী এবং সেই ত্যাগকেই সাত্মিক কহা যায়, ফলতঃ, কর্মের অকরণের নাম কর্মত্যাগ नार, किन्, कर् वाजिभानकनकामना मृन्रहरे য়া যে,কর্মকরণ, ভাহার নামকর্ম ত্যাগ। অত এব ভগবদ্গীতার ভূতীয়াধ্যায়ে অজ্জুনের পু-তি শ্রিভগবানের উপদেশ। যথা। ত্রনাদসকঃ সততং কাৰ্ধ্যং কর্ম সমাচর । অসক্তোহ্যা-**চরन् कर्य পর মাখ্রোতি পূৰব: । यह**राচরতি শুেষ্ট স্তত্তদেবেভরো জনঃ। স স্নৎ প্রমাণ কুকতে **ণোক ভদনু বৰ্ততে। বমে পার্থান্তি কর্ত্ব্য**ং बिवू লোকেবু কিঞ্চন। নানবাও স্বাওতং বর্ত **अवह कर्याने। यहि रू/रू** ,नवर्खिश्च का**र कर्या**ना

ভব্ৰিতঃ ৷ মম বৰ্জানুবৰ্জন্ত মনুষ্যাঃপাৰ্থ সৰ্ব भः। डेंश्नोरमयू दिश्मालाका नकूर्यग्र**्कर्मा** हर रः । तक द्रमार कर्जामा मूलरूना मिमालुबाः। সভাঃ কর্মণ্য বিদ্যাৎ**শো যথা কুর্বস্তি ভারত ।** कूर्यमहि द्वार खथार मक मिकीयू विक नर्भुहर। ভার্যাং হে অর্জুন, দেইছেন্ত, নিযুলে হইয়া পর্যদা অবশ্য কর ব্যব্ধপে বিহিত্তিবত্য নৈ-নিভিক কথেরি অনুষ্ঠান কর, বেহেভ, নিষ্যান कर्म कत्रित्न मनूर्यात्रं हिंड मुक्ति ७ ड्डाप्नित मात्रा भाक्त भारिश्य। (मुईव/कि, (यर काहत्रवक्तन ইতর্লোকেও সেই ২ আচরণ করে এব শুেঠ লোক, ৰাহাকে পুনাণ করেন,অন্যলোক ও তাং হারই পশাৎ বত্তা হয়। আমার কর্ত্তব্য কোন কৰ্ম নাই এৰ ব্ৰিভূবনে ও **অপু**ণণ্ড কোন বস্তু না ই যে তাহার প্রাণ্ডির নিমিত্ত কর্মানুষ্ঠান করিব তথাপি আমি ও ক্রে পুবৃত্ত হইতেছি ৷ যহি আনি কর্ম নাকরি,তবে কায়কেশ ভয়ে কেহ, क्य क्तिरकना, नक्लई चामात्र व्यवशालक

পশাংবন্তী ইইবেক। আমি, কমা নাকরিলেকোন লোক,কম্ করিবেকনা তবে ক্রমে কম লোপে বর্ণ बद्ध इहेशा जावर लाक, बडे हहेरवक। रायन चकानि लाक्त्राक्तकामनाय कर्मानुधान कर्त्र তেমন,জ্ঞানি লোকেরাও লোক সংগুছের নিমি-ন্ত নিম্বান স্ইয়া কর্মানুষ্ঠান করিবেন। অতএব **७गवम् गो जात्र हडर्थाधारम् श्री अगवस्वाकः। ७व॰ छादाक्उ॰कर्म श्रेंब्रिश मृमृक्**डिः। कू-क्कर्यानिज्यादवः भृदेवःभूवं जवःकृ उः । अथीर এইপুকার জ্ঞান করিয়াপূর্বের মুমুক্ষুলোকেরাও কমানুষ্টান করিয়াছেন, হেঅজুল, অতএব ভূমি, কমের মনুষ্ঠান কর পূর্বেজনকাদি ওকর্ম করিতের অতএব ভগবদ্গীতার পঞ্নাধ্যায়ে অজ্রু বের পুল । জীভগবানের উত্তর। অক্তর্ন উবাচ। अम्मान क्यां भा कृष शून(र्यात्रक भागनि ! যচে ্য় এতয়োরেক তদ্মে ব্রহি সুনিশ্বিত। অ-আজ্জু নি,জিজ্ঞাসা করিলেন, হেক্ফ, আমি, স্তো-नात्र मूर्य नज़राज ७ कर्मा राग नुवन कतिनाम

किंडू वहे प्राप्त माथा यिउँ तम (नुप्रमुद इस छाहा जामात्क निमुग्न कत्रिया कहा 🗐 जगवानुवाः छ। मन्नामः कया (याननः निःश्नुयनकतावृत्त्रो । उर्यार्क्क्य नम्राना क्य र्यालाविनियाउ। **बि**ङगवान्, উত্তর করিলেন, ह्यब्जू न<sub>'</sub>नवाः-সঙ কম বোগ এই উভয়ই, মোক্ষসাধন, কি-कुः ভাহারমধ্যে সদ্যাস হইতে কর্মবোগ শুে र्य । এই मकन भाज भुगालत चनुमात कर्या র আবশ্যকতা ও উত্তমতা এবং কথা ও ভাক **क्य** उंगि वहे উ उस्त्र नाष्य का**हात उ**े क्हें∙ ভাহ্য়তাহা অপক্ষপাতি মহাশ্যেরাই,বিবেচ-ना कतिरवन, (यरहजू निकान करमा त भाक नाव-ৰত্ব ভগদ্গীতা কছেন । কম 🔊 বুদ্ধিযুক্তা ෫ क्न ७ । क्ना यनी विशः। क्रना वक्त विनिम् काः शहर গচ্ম্য নাময় । অর্থাৎ বুদ্ধি যুক্ত পণ্ডিত লো-क्त्रा, कर्मक्रमा कन कामना भतिलाग कतिया कर्या कत्र ३: बगावकन रहेए पुरु हहेगा भाक পদ পান্ত হয়েন। এব•কন্দ জনাস্বৰ্ণাধি ভোগাভা-

ব পুযুক্ত বিষুপুীত্যর্থকমা ও বন্ধনের হেতু হয় নাঅতএব বিষ্ণু **প্রীত্যর্থকর্মের ওনোক্ষসাধনত্ত্ব** ভগবদ্গীতায় 🗐 ভগবান্ কহিয়াছেন । यथा। २ङ्डार्था९ कया (गा**१न) बलाकाय क्या विज्ञनः।** ८५६ कर्माको उम्र मूल्नदः ममाव्या वर्षा-ৎ হে অজ্জুন, যেকর্মা, বিষ্ণু প্রীতি কামনায় কৃ-ত নাহয়, সেই কমে ই লোক, কমা বন্ধন পুস্ত হয়, ফলতঃ,বিষ্ণুপুতি কামনায়ক্ত কম , মো-কসাধন,অতএব ভুমি,কভূঁ ব্যভিনানশ্ন, হইয়া বিষ্ণুত্রিত্র কম্ম কর। অভএব মোক্ষ ধ্যে অকামনার ও বিষ্ণুপুতি কামনার ভুল্যত্ব দ-ৰ্মন হইতেছে । যথা । নিম্নামঃ কুক কমে হাতঃ কৈবল্যঞ্ দিছুদি তাত। কুকবা বিষ্ণুপুী-তৈ। কৰ্ম ভাবি তদৈবহি নিভ্যংশম । অৰ্থাৎ হেতাত, তুনি:যদিকৈবলে।র ইচ্চাকর,তবে নি-ম্বান, অথবা বিষ্ণুপুীতি কাম হইয়াকর্মকর, তা-হাতেই ভোনার নিভ্য সৃথ হইবেক । বস্তুতঃ ভাক তত্ত্বজানি মহাশয় দিগের না কম্ম জন্য

সুথ বোষ, নাজ্ঞান জন্য সুথবোষ,আছে,ভাঁই। রা,উভয় ভুষ্ট, নাজানেন কম্মির কল্, নাজানেন জ্ঞানিরকল,সতএব তাঁহার দিগের কম্মের ও-ক্কানের এব॰ কমি র ওজ্ঞানির যে বিশেষ বিবেচ-না করা, সেকেবল শুক পক্ষির রাধাকৃঞ্চ বাকে। ই ন্যায়, বরঞ্চ ভাহাতে ভাঁহারদিগের সেই ৰূপ হাস্যাস্পদ্হইতে হয়, যে ৰূপ এক কপদ কের বণিক্, কুবেরের ধন সংখ্যায় বাঞ্চাকরিলে এবং হস্তমাত্র পরিমিত জলে কেশাগু পর্য্যন্ত মণুহয় বে ব্যক্তির সে, সমুদু জলের পরিমাণ করিতে উদ্যত হুইলে এবং এক শূকর, আপনার চতু-স্পাদ্দর্শন করিয়া আপনাকে দ্বিপাদ্মনুব্য **इहे (७ (मुँडे ७** हजुद्राम् हिंदत मनान कहिरण হাস্যাদ্স্প হয়। এদৃষ্টাস্ত দিৰার এই ভাৎপ-র্য্য মাত্র, যে কেবল শুভির আবৃত্তি মাত্রেই লো ক,তত্ত্বজ্ঞানী হয়না, তাহাহইলে একণে শ্লেদ্ধেরা ও, তত্ত্বজ্ঞানী হইতে পারে, যেহেভু,এক্ষণে অনে-ক মেনেই শুতির আবৃত্তি করিয়া থাকে, মেনুদি-

গের নিকটে বেদ, বদুপ কম্পান্থিত কলেবর হন
অল্লবিদ্যান্তির নিকটেও তদুপা সতএব বৃতিঃ
বিভেত্যল্পদ্ধতা দ্বো নামবংপুহরিব্যতি। মর্থাৎ
অল্পদ্ধত, ক্রতঃ মল্লবিদ্য নন্ধ্য, বেদের ব্যাখ্যা
করিতে উদ্যত চ্ইলেবেদের সর্বাহ্দেকস্পগ্র হয়
বেহেন্ত, বেদের ননে এই ভয় ক্রানের এই বল্ল
বিদ্য দান্তিক শিরোম্বি, অসদর্থ কল্পনা স্ব নপ
শানিত্থল্পর দারা আমাকে এক্ষ্ণে পুহারক্র

পরভূ,বাগী,তিনপুকার হয়,বোগান্ত,যুক্ত, ও পরম, অপুতিষ্ঠিত শব্রে অর্থবোগান্তটা কি আশ্র্য্য, ভাকতভ্জ্জানি মহাশয়, মনেং আদ পনি পরম্বোগী হইয়া অনুচর মহাশয় সক-লকে অপুতিষ্ঠিত নানে পুনিদ্ধ করিয়া তা-হাতে কৌত্ত কাবিষ্ট হইয়া তাঁহারদিগেরলোভ পুদর্শনার্থ আকাশেরচন্দ্র, হত্তে পুদানের ন্যায় পুনর্বার বোগতকেও উৎকৃষ্টকল শুবণ করাই- ভেছেন,যে অপুতিষ্ঠিত যোগী,যোগ ভুষ্ট হইলে ও দেই পুণ্য কারিব্যক্তির কদাচ দুর্গতি হয়ন। বরঞ্প পূর্বনেহ ত্যাগানন্তর পুণ্যকারি ব্যক্তির লোকে বহু কাল বাস করিয়া পশাংৎ শুচি অ-থচ জ্বীনান্ যে লোক, ভাঁহার গৃহে জনা গৃহণ **ক**রেন,ভাল,যদি,নগরাস্ত বাদি নহা**শ**্মের বাক্ निष्कत ७११ याहात्क याहा करहर, १न, छाही-ই হয়, তবে অনুচর মহাশয় সকলকে অপু.তি-ষ্ঠিতবোগী কহিয়া কেনঅধন কল্পেগতিত করে-ন আরও কিঞ্চিৎ লব্জাভয় পরিভ্যাগ করিলে ই ভাঁহারদিগেরোউভন নধ্যম কল্ল হ্ইতেপা-রে, কলির পুথমাবস্থাতেই এইপর্যান্ত বাক্সি-দ্ধি হইয়াছে, বুঝি মধ্যাবস্থাতে উংহার বাক্ দিদ্ধির পুভাবে অনুচর নহাশ্যেরাওবা **ওক্প**• দেখতিবিক্ত হয়েন,কিন্তু,শাস্ত্র দৃষ্টিকরিলে পুনা-দ্ঘটিবে,পুধান ভাক্তভভ্জানিন্হাশয়েরিনিজে অবন কল্লে ও স্থানপাওয়াভার **হইবে,তাহাতেঅ**১ নুচর মহাশয়েরা, কোন্ কল্পেস্থান পাইবেন, তাঁঁ

হার বিশাস্ঘাতকতাওনতের অস্থিরতা পুযুক্ত মেচ্দিগের কল্লেও স্থান প্রাণ্ডির সন্দেহ। তগবদ্-গীতাতে **শ্রভগবান্,জ্ঞানির লক্ষণ কহিতে**ছেন । যথা। यদাহিনেন্দ্রিয়ার্থেষ্ব নকম বৃনু সক্ততে। भव निः कन्न भः नामी यागाका छानाहाउ । জ্ঞানবিজ্ঞান ভৃগ্ডাত্মা কূটছো বিজিডেল্বিয়ঃ । ষুক ইত্যুচ্যতে যোগী সমলেপ্তাশ্মকাঞ্চঃ। यहा विनियुक्त हिन्न माञ्चलामानिक है। निन স্পৃহঃ সর্বকানেভেগে যুক্ত ইত্যুচ্যতেতদা। আ-ছ্মৌপন্যেন সর্বত্ত সনংপশ্যতি যে জুনি। সু थ·वा यहि वाहुःथ· म (यागी भद्रामामजः। मर्थः ९ (यकाला (यमनूष्य, हेन्नि्राय्य विषय नकाल अ কর্মে আগক্ত না হন ও সর্ব সম্বল্লত্যাগ করেন **নেকালে সে ননুব্যকে যোগাৰ্চ কছাবায়ভা যেযো-**শী জ্ঞানও বিজ্ঞান এই দুয়ের বিবেচনা করিয়া ভৃগান্তঃকরণ,পরমাত্মারধ্যানেনিয়ত ওলিতে জ্রিয় হয়েন এবং মৃত্তিকা, পাষাণ,ও কাঞ্চন, ইহাতে ভুল্য জ্ঞান করেন, তাঁহার নাম যুক্ত যোগী।

এবংযেকালে যেব্যক্তির চিত্ত,কেব**ল আত্মাতেই** ভিরতর হয়, আর যেমনুষ্য, সর্কামনা রছি-ত হয়েন তাঁহাকে সেইকালে যুক্ত যো**গী** কহ**া য**া য়**াছেগজুনি যেযোগী,সর্বভূতে আপনারস**-मान हर्मन करवन, এব॰ याँशांत मूथ मूश्र**थ ममान** ভাব ভাঁছা::নান পরমযোগীত এই শাস্ত্রিতেঅ-প্রকাতি মহাশরদিশের কিবোধহয়, ভাকত জু ভাগি মহাশ্রেরা,ধোগাৰুচ,যুক্ত,<mark>ও পরম যো</mark> शी, : इंजित्नत्र किर्ट्रिक शाह्यन, याशाकाएत লক্ষণ শুৰণেই পুধান ভাক্তভুজ্ঞানিমহা**শয়ই** হ্বাদ্রিতনয়ন ও অবোবদন্য হইবেন,অধিকভু অ नूष्टतिमार्गत मृथसानि मर्गान ७ व्यश्चित्र वहरने थ-क डे छम जुडे, भून बीब सान जुडेरेवा स्यान, कि, কি করেন,কিছুবলাযায়না,ইহাতেঅনুচর**মহাশয়ে**-রা ইহার কোন্ লক্ষণের লক্ষ্য হইতে পারিবেন আ স্বালনইবা কি ৰূপে করিবেন এবং কাকের বালক হতভিত পিউক গুহণেরন্যায় অপুতিঃ ত যোগিব ফলইনা কিব্ৰূপে খনায়ানে গ্ৰহণক-

রিবেন, মতএব ভাক্ততভ্বজ্ঞানিমহা**শয়েরা, জ্ঞা**-নির কল,কি উভয় ভুষ্টের ফল,**কোন্ ফল,পাই**-তে পারিবেন। তাহা তাঁহারাই,বিবেচনাকরি• বেন। এবং ৷ গ্রাপ্য পুণ্য কৃতাং লোকানুষিত্বাশা শুলীঃ নাঃ। শুচীনাং জ্রীনতাংগেছে যোগ ভু-ষ্টোভিলারতে। মর্থাৎ মপুতিষ্ঠিত যোগী,যো: গভুষ্ট एইলেও পুণ্যকারি লোক দিগের লোকে বহকালবাস করিয়া পশাংৎ শুটি অথচ শ্রীমা ন্ যেমনুষ্য,ভাঁহার গৃহে জন্মেন,ভাক্ততভুক্তানি মহাশয়ের লিখিত এই ভগবদ্গীতারশ্লোকেযো গ শব্বে তাঁহার মভিপুেত কোন্যোগ, জ্ঞানযোগ, কিকর্মযোগ,কি**সা**°খ্যযোগ<sub>'</sub>যদ্য**পি জ্ঞান যোগ** তাঁহার নভিপুেত হয়, তথাপি এক্ষণে কহিতে লক্ষিত হইবেন,যেহেৰ, ভাহাতে পরমেশুরকে সাক্ষীকরিয়া নিস্তার পাওয়াভার, ৫২পৃঠে ৪প-**ভ্জিতে পূর্বেই তাহার বিস্তার করিয়াছি, কিন্তু,** কর্মযোগকহিতে সাহস করিতে পারেন,যেহে-ভু;ভাঁহারা,অনাসভ্হইয়া বৃথাকে**শ**দ্বেদন,সুরাণ

পান, জবনীগমন অবৈধ হিংসা, ও শৈববিবাহ, ইত্যাদি, অনেক সৎকর্ম করিতেছেন, এবংযেন-न, ना॰था हर्नात यम, नियम, जानन, भुगायाम, পুত্যাহার, ধ্যান ধারণাও সনাধি, এই অপ্তাহ যোগ লিথিয়াছেন, তেম্ন, যদি কলির জ্ঞানি দি-গের নিগৃচ লাংখ্য দশ নেনিথ্যাবচন, পরনিন্দা, বৈধকর্মত্যাগ স্বস্ত্রীতে জলাঞ্জলি, অবৈধহিৎসা, বৃথাকেশটে,দন,সুরাপানওজবনীগনন,এই জঙাঞ্ যোগলিখিতথাকে তবে সাংখ্য যোগ কছিতে ও সাহস করিতে পারেন, কিন্তু, তাহার ফল অপু-ণ্য কারি ব্যক্তি দিশের লোকে বহু কাল বাস করিয়া পশাৎ মনুব্য লোকে অশুচি অথচম-भीगान् (यालाक, जाहात गृष्ट बन्ध इहरव कि না? বস্তুতঃ ভাক্ততভ্বজ্ঞানি মহাশয়ের লিথিত ভগবদ্গীতারঐশ্লোকে যোগ শব্বে অর্থ, আত্ম-क्र अस्वार्याण, अथना ध्यानत्याण, त्यत्र्जू, जगन-म्भी जादवधान्। एयद स्मा क,वधान्। एवत नाम জ্যান্মসংয়মযোগ, অথবা ধ্যান যোগ, সেই

जाय जन्मन (याग, मृः भाष्ण, विषया उन्न म्थादान प्रामण वृष्ठ जारा न स्व र्यमा, जगवन्गी जान जाय न स्व व्याप क्षि कि विद्या के स्व कि विद्या कि विद्या के स्व कि विद्या के स्व कि विद्या के स्व कि विद्या के स्व कि विद्या कि विद्य कि विद्या कि विद्

এব॰ সকলধর্মের মধ্যে আত্মতভ্জ্ঞান**,শে্**ষ হয়, এই বিষয়ে পণ্ডিতাভিনানি নহাশয়,**যেমন** এক মনুবচন,পুকাশকরেন,তেমন,কলিযুগেকেব- ल सारवज्ञ (मुक्कें दावक समुद्र अन्। वहन ७ मृष्ठें হইতেছে। যথা। তপঃপর কৃত যুগে ত্রেভায়া। জ্ঞান মৃত্যতে। দ্বাপরে যক্তনেবাস্থান মে**ক**॰ কলৌযুগে ৷ অর্থাৎ সভাযুগে তপস্যানাত্র, ত্রে-তাযুগে জ্ঞাননাত্র, দ্বাপরে যজ্ঞনাত্র, এবং কলি যুগে কেবল দান,শুে ছহয়। এব বেমন, পণ্ডিতা। তিমানি মহাশয়ের লিখিত মনুবচনে জ্ঞানের

নোক সাধনত্বোধ হইতেছে, তেমন,ধর্মসংস্থা-পনাকাজ্কির পূর্বলিথিত তগবদ্গীতাদির অ-দেক শ্লোকেই কর্মের ও নোক সাধনত্ব জ্ঞানহ্দ ইতেছে।

ভাক্তভুজ্ঞানির উত্তর। অন্যের সংসর্গাধী-**ন জ্ঞানাবল**ম্বনের নিমিত্তে যত্ন করিলে তাহা-কে গড্ডরিকা বলিকার ন্যায় লিথিয়াছেন অ **তএব ইছার পুয়োগ স্থান** বিবেচনা করাক রব্য বেমন অগুগামী মেব দেখিয়া পশ্যতের মেব ভদুাভদু বিচার নাকরিয়া তাহার অনুগানীহয় সেইৰূপ যুক্তি ও শাস্ত্র বিবেচনা নাকারয়া পূ-र्द्ध राक्ति धर्म ७ वावशात अनुकान यहित्का-ন ব্যক্তি করে তবে তাহার পুতি ঐগড্ডরি-কা পুবাছশব্রে পুয়োগপণ্ডিতেরা করিয়া থাকে-न किन्तु अञ्चल पृष्ठे भुकात वाङि नकन प्रिय-তেছি একএইযে বেদও বেদ শিরোভাগ উপ নিষদ্ তাহার সমতও মনুপুত্তি তাবৎম্তি সম্মত এব•৲ মহাভারত পুরাণ তক্ত সকল শা- **স্ত্র সমাত আভ্যো পাসনা হয় ইহাজানিয়া আ**-র ইন্দ্রির ব্যাপ্য যে২ বস্তু এবং বিভাগ যোগ্য যে ২ বস্তু সেসকল নশুর অভএব তাহা হইতে ভিন্ন প্রমেশুর হ্যেন ইহা যুক্তি নিদ্ধ জানিয়া অন্যান্যনশ্র মনঃকলিত উপাস্বা ছইতে বির-তহ্ইয়া সেই স্নির্চনীয় পরমেশ্রের স্বাকে ভাঁছার কার্য্যের দ্বারা স্থির করিয়া ভঁ,হানেঃ শ্-দ্ধা করে তাহার পুতি গডডরিকা বলিকা 'পণ্টে-র পুযোগ করা উচিত হয় কি যেব্যক্তি এম-ত কোন কল্পিত উপাসনা যাহা বেদ ও মম্বাদি মৃতি এবং মহাভারত ইত্যাদি সর্ব সন্মত পু-निष गुष्ट कान मा भुगुष्ट्यना किवन व्या কেছ ২ করিতেছে এই পুমাণে তাহা পরিগ্রহ করে এব যুক্তি হইতে এককালে চক্ষু মুদ্রিত कतिया पृद्धियमान जन याजा अमूदलमञ्चार এव॰ বডাই বুড়ির উপাথ্যান যাহা কেবল চিত্ত মা লিন্যের ও মন্দেশ্বারের কারণ হয় ভাহাকে পরমার্থ সাধন করিয়া জানে ও আপনইঞ্চদেব- তার সঙকে সম্থি দ্তাকরায় কেবল অন্যকে এসকল ক্রিয়া করিতে ধেথিয়া সেই পুনাণেমনু ঠান করে এনগুঞ্জির প্রতি পড়ড়রিকা বলিকা শক্ষের প্রয়োগ উচিত হয় এদুয়ের বিবেচনাবিজ্ঞ ব্যক্তিরা করিবেন।

ধর্মসংস্থাপনাকাদিকর পুতুর্ত্তর। ভাকতন্ত্ জ্ঞানি মহাশয়ের তাৎপর্য্য এই, যে বদি কোন ন্যক্তি,শাস্ত্র ও যুক্তির অনুসারে জ্ঞানপথ সবল-শ্বন করেন, অন্যহ ব্যক্তি ও সেইহ শান্ত্র ও যুক্তি षृष्टि कतिया खानावनम्हत्वत निविष्ठ ज्याकित পশাুৎ ২ গনন করেন তবে সেহানে পড়ড়লি-কাবলিকা ন্যায়ের পুয়োগর্কিরূপে স্ইতে পা-রে,বেহেতু,শান্ত ওযুক্তি অম্বেশনাকরিয়া অশু-গামি ব্যক্তির পশাংগামী হইলে নেছানে গডড-লিকাবলিকারন্যায়ের পুরোগ,পুস্কারেরা,করি-য়াথাকেন,ভাল,জিজ্ঞাসা করি,সন্যথ ব্যক্তি,জ্ঞা-নাবলম্বনের নিমিত্ত বেব্যক্তির পশাং ২গমনকরে-ন,সেব্যক্তির জ্ঞানিত্বাভিমান, এইভাৎ পর্ব্যেব্ব

অনুসারে বোধ হয় কিনা। যাত্র পি সেই অভি-মানির অভিমান্যথার্থই হয়,তথাপি ভাঁহার সে পুকারজ্ঞান,বানরেরগললগ্নমুক্তাহারের ন্যায় এ-ব পঞ্চদশীর বচনানুসারে ভাঁহাতে ও কুকু রতে व्यविष्णय इय्न किन ? ! यथा शक्षमण्डाः । वृष्णु दि-তসতত্ত্ব, যথেষ্টাচরণং यहि। শুনাং তত্ত্বদূশা ঞ্চৈৰ কো ভেদোৎ শুচিভক্ষণে । অর্থাৎ নিত্য **অদ্ৈত**,যে পরমাত্মা, ভাঁহারতত্ত্ব,জ্ঞাত হইয়া **ও** यपि क्कानी, यथ्बेशाहत्रग करत्रन, ज्ञात चामुहिमुव्र ভক্ষন বিষয়ে ভাঁছাতে ও কুকুরেতে ভেদ কি? এই শান্ত দৃষ্টিতে জ্ঞানিরা, করাচ বথেষ্টাচরণ করেননা, কিছু, মিথ্যাভিনানি মহাশয়েরা,এই भाज्यकं निन्मार्थ वाह विषया कृद्रुक्तान करतन এব॰ যথেষ্টাচরণে ও পুবৃত্ত হয়েন, অভএব यहि কোন ব্যক্তি,কুযুক্তি কুব্যবহার ও অশাচ্চ পু্ মাণের অনুসারে কুকর্ম করে, তাহা দেখিয়া **হিভাহিভ কর্ত্ব্যাকর্ত্ব্য বিবেচনা শক্তি বি**∼ শিষ্ট বিশিষ্ট সভানেরাও বিবেচনা না করিয়া

সেই কুকর্মপঞ্চাননের পশাদ্বর্তী হয়,তবে সেছা-নে পণ্ডিতেরা, গড়ড়লিকা বলিকার ন্যায়ের পু-য়োগ করিতে পারেন, কি, সমূ ক্তি সমু্্বহারসৎ পুনাণের অনুসারে অবৈধ কর্মের ত্যাগ এবং সক্ষ্যা বন্দনাদি নিত্যকর্ম ও পিতৃ মাতৃ কৃত্য পুভৃতি বৈধকর্মের অনুষ্ঠান করিয়াছেন ওকরি-তেছেন, यमकल भूई भूई भूक्रवद्गा ও विभिष्ठ মহাশয়েরা, ভাঁহারদিগের সেই২ কর্ম দেখি-या विभिष्ठे लाकिता, उरमामुखे इहेल महे স্থানে গড়ডলিকা বলিকার ন্যায়ের পুয়োগকরি-তে পারেন, তাহা বিজ্ঞ নহাশয়েরাই, বি-বেচনা করিবেন, এবং সর্ব সমাতপুসিদ্ধ পুছে কোন্ উপাস্য দেবভার উপাসনার অপ্রান্তিতে ভাক্তভ্ৰক্তানি মহাশয়ের সন্দেহ আছে, তা-হার পুশ্ন করিলেই সন্দেহ ভঞ্জন হইবেক, এব• দুর্জ্জন্ম নান ভঙ্ক পুভৃতি, কালিয় দমন যাত্রার অন্তর্গত,তাহার পুমাণ, ঐভাগবতেরদশমক্ষে ৩২ গাত্রি•শৎ অধ্যয়ে আছে এব রাম বাত্রা-

র পুনাণ, হরিবংশে বজুনাভবধে পুদুর্যহান্তরে जारह, यमि मान्यक् इय, उत्त (महेर शुखक मृद्धि करि वह निःमन्तिक इहैरवन। मनिन हिखक्र-कि नि'शत मुर्क्क ब मान **कशारि मर्मान চिख्त** মানিন্য হ ৩য়া কোন্ সাশ্র্য্য**, তাঁহার দিগের** क्या क्रिकी ७ मृध्यवश् भुक्ति मर्भात ७ अभू-কার ন্ইতে পারে, যাঁহারা,সুসংস্তুত অথচ 🗫 *ন্ডের মন্দ্রম*্বর পরিস্কার করণে সচেষ্ট∙ভাঁহা∙ র দিগের মন্দর স্বার হওনের পুসক্তি কিং কিন্তু জসংসূত কৃষণস্থার ব্যক্তিদিগেরই ম**ন্দেশ-শ্ন**-র হওনের দর্বতো ভাবে সম্ভাবনা এব থে কোন ভাবে ঈশ্রের পুসক্ষনাত্রেই পুণ্ডলম্বে,তা हा बीर जागवाउ । मृष्टे इहे (उहा। यथा। कामार দ্বো ভ্যাং ক্লেহাং বথা ভক্তে শ্রে মনঃ৷ আ-(वना उन्ध दिञ्जावहवः मन्गि उ गालाः । माह्म-ত্যং পারিহাস্যয়া স্তোভ হেলন মেববা। বৈ-कूर्रनामगुरुग मानवायरूतः विषू: । व्यर्थाए কামভাবে দ্বে ভাবে ভয়পুযুক্ত স্নেহ পুযুক্ত

কিষা ভেকি তাবেপরমেশ্রে মনোনিবেশ করিয়া
শনেকেই নিমাপ হইয়া সদ্গতি পুণ্ড হইয়া
ছেন। সংক্তে পরিহাসে স্তোতে কিয়া অবহে
লায় বদ্যপি ইশ্রের নান পুহণ করে, তথাপি সর্ব পাপক্ষয় হয়।

ভাকতভ্জানির উত্তর ৷ আর ধর্মসংস্থাপন নাকাঞ্চীপুথমপুশেলিথেন যেভাকতভ্জানিরা এবং ভাঁহার সংস্থারা কিনিগৃচ শাল্লাবলোকন করিয়াছেন ৷ উত্তর পুণব গায়ন্ত্রী উপনিষদ্ সন্থাদি মৃতি এই সকল শাল্র নিগৃচ হউক্ কি অনিগৃচ হউক্ ইহারি পুনাণে ভাঁহারা জ্ঞানাবল্যনে পুরুত্ত হয়েন কিন্তু বেদ বিধির অগোচর গৌরাস্থ ও দুটি ভাই ও তিন পুত্ এই সকলের সাধকেরা কোন্শাল্র পুনাণে অনুধান করেন জানিতে বাসনা করি ৷ ইতি ৷

থম সংস্থাপনাকাশ্কির পুতৃ/ন্তর ৷ বহু বিজ্ঞ জনের অগোচর যেশান্ত্র,তাহার নাম,নিপ্ঢ শাং জ, মুতি অ্তি পুত্তি শাব্ত, পুায়ংতাবমু/কির

ই গোচর হয়, অতএব তাহাকে নিগৃঢ শাস্ত্র কি ৰূপে কহাযায়, ধর্মস-স্থাপনাকাজিকদিশের জি জ্ঞাসার এই ভাৎপর্য্য,যে ভাক্তভন্ধজ্ঞানি ম-হাশয়েরা যেনিগৃঢ শাব্তের অনুসারে অভক্যভ ক্ষণ অপেরপান ও অগন্যাগম্ন ইত্যাদিসংক-র্মের অনুধান করিভেছেন, সেনিগৃঢ় শান্তের না মকি? ৷কিদুঃসাহস,ভাকতত্বজ্ঞানি মহাশয়েরা শুতিষ্তি পুরাণাদি পুমাণের অনুসারে অতি সুপ ম কর্মকাণ্ডে অশক্ত হইয়াঅতিদুর্গনজ্ঞান কাণ্ডে পুবৃত্তি করিতেছেন, যেমন, একজন, সামান্য পশু রক্ষণে অসমর্থ হইয়া হস্তি রক্ষণে পুবৃত্ত হইয়াছিল, কিন্তু পশাৎ তাহার যে দুর্গতি শু-বণআছে, তাঁহার দিগেরো বুঝি সেই দুর্গতি **इ**हेरवक । किञानुया, नुतानार्या, नृतानार**ङ भत्रभ** রক্তে অচৈতন্য হইয়া শ্রীচৈতন্য নিত্যানন্দ অ হৈত অবতারকে এব•ভদুপাসক স**ৰলকে** অমা-ন্য ও জঘ্ন্যজ্ঞানে অম্লানবদনে অভিসামান্যের ন্যায়ব্যক্ত ও নিন্দা ব্রিয়াছেন,ভাঁহার পিকা ও মাতা চিরকাল যে গৌরাস্থাবতারাদিরসাধন ও তদ্ভক্তগণের অধরামৃত পান করিয়াউদ্ধার হই-স্লাছেন, সেইআপনকুল দেবভাকে কুলন্যলেয় ন্যায়উক্তিকরিয়াছেন,ধিক্২ এনরাধনের ি গ-তি হইবেক,পিতামাতার বহু জন্মাজ্জি তি সুকৃত **পুঞ্জপুঞ্জের ফলেই এতাদৃশ সুসন্তান** জারারা কুল উজ্জ্লকরে।অতএব নীতি শাস্তে। একেড:-পি কুৰুক্ষেণ কোটরছেন বহিনা। দহ্যতেতমুন , সর্ব: কুপুত্রেণ কুল । অর্থাৎ বন স্থ এক কুব্-ক্ষেতে কোটরস্থ বহির দারা সেইনকল বন্দথা করে, যেমন, কুপুণ্রে, সমস্ত কুল,দপ্তকরে। পাত্মে । অবতারান্ হরে স্তব্মাম ভক্তাণ্য নিক্তি। व्यवमन्धि (म्वर्ष नाद्रकोम क्रातार्थम्शवर्थार হেনারদ, হরির অবতার নকলকে অবতারের **নাম সকলকে ও** ভক্তবর্গকে, যেনরাধন, নিন্দাও ष्यवळाकत्र, (मनात्रवीर्य। ভাক্তভ্জানী প **श्विजानिमानी, क्वानिए वाजनाक** विद्याहिन-(यागी-রান্ধাবতারাদির ভক্তগণে, কোন্ শান্ত্র পুনাণে

किनिकिन्यनामन उखरव जात्रत नाथन कर्त्रन 'हासर अकानभ याछ मृत मृष्ठेभुगुळ नः मेशा छा। বে তগবৎ শাস্ত্র, কর্ণ ফুহরেও পুরিষ্ট হয় নাই একারণ এতাদৃশ দুরাচার ও পাষ্ও ব্যবহার দেখিতেছি এবং নিখ্যাজ্ঞানী অভিনানে ভলন नापन विशील वृथा कालाक्ष्मभा इहेशाए। उ थाराकः। भठः जन्म गठः जन्म गठः जन्म नित्र-र्थकः । क्ष्कत्मुशनवृत्रमुख्डमः ভावनः विना। माः খু ২ পরমাস্থাদিত হইলাম, বুঝিলাম যে একণে এনরাধনের পুতিও ঐংগানাক চল্দেন কৰণা কটাক্ষপাত হইয়াছে কি কৰুণা সাগর প্রীগৌরা স্বাবতার, অনিহাপূর্বক অন্তঃকরণে মরণ করি-**লেও কৰুণাবিতরণ করেন। ছেধর্মাধৃলি বৈডা-**े ল বুতি,এই পরম্থি সাধন পুমাণ, নানাপুরাণ ওস-হিতাদিতে আছে,তাহা যদ্যপি পাবওভও পঞ্চনকার সাধক ত্রিপণ্ড নিকটে অবক্তব্যও অ-भुकाना इस, उथानियुवारा नित् वक्ता जनदर

শান্ত্র শুরণে অধিকার হইতে পারে, থেছেন্ড; ব-কীয় উত্তরাভা**সে মনস্তাপে পাপের**স্থাসদেখিতে• ছি, এব॰সুরভিসুরারস রসিক রসনা হইতে 🕮-গৌরাস্থ্রইপতিতপাবন নামনির্গত হইয়াছে, সত এব সুরাচার্য্য,সম্পু তি কিঞ্চিৎ ভগবৎ শান্ত পুনাণ শুবণ করিতে যোগ্য হইতে পারেন।যথা।অন-ন্তব•ছিতায়া°। ধর্মব•ছাপনার্থায় বিহরিষ্যামি তৈরহং, ৷ কালে নষ্টং, ভক্তিপথং স্থাপয়িষ্যাম্য रु·পूनः । कृक रेमृजना शोद्गाको शोदहमुः महो-সুতঃ৷ পুভুগৌরহরিগৌরো নামানি ভক্তি দানি মে। ইত্যাদি। অর্থাৎ আমি,সেই২ মূর্ত্তিতে অব-তীর্ণ হইব ৷ কালেতে নষ্ট,যেভক্তিপথ,তাহারপুন-্রবারস•স্থাপন করিবাআনার এইসকলনাম<sub>ি</sub>ভক্তি দায়ক হয়াক্ষ,চৈতন্য,গৌরাক্ত,গৌরচন্দু,শচী-সূত্ত পুভু, গৌরহরি,ও গৌর। এবং এই কলিয়ুগে ভগবানের ভক্তক্রপৈ অবতারেরপুমাণ,পুরাণান্তরেও শুবণ করিতেছি। যথামাংসে। শৃণুবুক্ষবিদাং (मृं विक्रशत्नाह् कात्र १ । माश्राद्य यः स त्र क्षः

লোহবধূতঃ কলৌযুগে। অর্থাৎ হেনারদ, ত্রিল-'গতের মোহ কারণ শুবণকর,যিনি-দাপরে স্বয় • 🕆 🎒 কৃষ্ণ, তিনিই কলিযুগে অবতীর্ণ। ভগবদ্গী। তায়া°। यहा यहाहि धर्मान्। প্লানি র্ভবতিভারত । अञ्जूषान सदम् मा उनाचानः मृजानाहः। পরিত্রাণায় সাধ্নাং বিনাশায়চ দুস্তাং । **ধর্মস·ছাপ**নার্থায় সম্ভবামি যুগে**২। অর্থা**ৎ (र यहर्जू न, (यरकारेन धरम त भानि अभरार्भत বৃদ্ধি হয়, সেই২ কালে সাধুদিগের পরিতাণের **७ शांशि दिश्य विनात्मत्र निमिन्छ अव॰ ४-**र्यम शामार्थ जामि, यूरण २ जवजीर्ग इहे। थर्मान शामाका कि कि मिरा विविष्ठ निष्क **এই ह्यात्य जाक उबुद्धानित बीक्ष है उन्। दिः** বা আর গত্যস্তরনাই, যেছেব্র, এতাদৃশ পাপিষ্ঠ কে, লগাই মাধাই নিস্তারক ব্যতিরেকেআর কে, পরিত্রাণ ক্ষরিবেন, এবং নববিধ পাপকারী 🥕 কিপুকার উদ্ধার হইবেক এপুকার সন্দেহকরি ৰানা,বেছেভ, ইদৃশ ম্হাম্ছাপাতকিরো উদ্ধান্

রোপায় জগদ্ভক জ্রীনহাদেব,পদ্মপুরাণেরউন্ত-র থণ্ডে আজ্ঞা করিয়াছেন। বথা। বিপু:क-. তিয় বিট্ শূদুাঃ সঙ্করাভ্যজ জারজাঃ। কানীন ু গোলকাশ্যে পিভুৱাতাঃ ক্ষেত্রলাঃ। বুন্ধচারী गृरुष्ट वान शुरका याजि खथा। यान ग्रांज ना-**পিনোবিপু মহাপাতকিনো পিবা।উপপাতকি-**নশ্যতিপাপিনো হ্নুপাপিন্ঃ । ভুষ্টাচারা**শুপাক** ঙাঃ স্বস্থা বিবজ্জি তাঃ। জীবছত্যারতা বা-ভ্যা নিন্দকাশ্যুজিতেন্দ্রিয়াঃ। পশ্যুৎজ্ঞান সমূৎ• পদা পুরেশ: কৃষ্পুসাদতঃ ৷ ততন্ত যাবজ্জীবস্থি ত্রিনাম পরায়ণাঃ। শুদ্ধান্তেং থিল পাপেড্যঃ পূর্বজেভ্যো হিনারদ ! সংসারবিষয়ালিগুঃ সর্ব ্ধুৰ্ক্সবহিষ্, তাঃ **! মুক্তান্তে সৰ্ব তন্ত**মা দুম্বন্তো **হ**১ রে দ্বিজ। বিশেভঃ কলিযুগে কৃষ্ণুনামৈব কেবল। ত্যক্তা নাস্ত্যেব দেবর্ষে লোকস্টগতিরন্যথা। বু **ऋहा** मन्। পरस्यी स्कानाम् धक्**त्राः।** ভবाণं व॰ তরে দত্তে কৃষ্ণনান পরায়ণঃ। ঋণেদােছি যক্ত্রর্জে ुरः मुग्नरंदरनार मृश्यर्दनः । अधीजा रखन रयरनाः

ক্তৎ হরি রিত্যক্ষরম্মণ। অর্থাৎ ব্রাক্ষণাদিচারি 'বৰ্ণ,বৰ্ণ,সম্বৰ, সম্ভাজ,জারজ কানীন:গোলক,**পিভূ** লাত,ক্ষেত্রনাত,বুলচারী,গৃহী,বানপুস্ক,ওযতি, যদিএঁ হারা, পাতকী,মহাপাতকী,উপপাতকী, অতিপাত্কী, কিয়াঅনুপাত্কী,এবংআচারভুঠ, পাষগু,স্বধর্মচু,ত,ন্নীবহুত্যারত-বু,ত্য,নিন্দকও অজিতেন্দ্রিহন, কিন্তু,পশ্বতে শুক শ্রীকৃঞ্চন্দ্রের পুদাদে জ্ঞানপুাও হুইলে পরে হরিনাম পরায়ণ **স্**ইয়া যাবৎ কাল জীবন ধারণ করেন, স্নোরদ ভাঁহারা, তাবৎ কাল অনুক্ত সর্রপাপ এবং পূ্-র্রোক্ত স্হাপাতকাদি হইতে মুক্তহ্ন, এবংযদ্য-পি সংসারবাসনাতে লিও ও সর্বধর্ম বহিছুত হ্ন,তথাপি হরি নামোদ্যারণে ভাঁহারদিগের স্ ৰ্ব পাপক্ষয় হয়, বিশেষতঃ কলিযুগেকৃঞ্নাম विनाबीत्वत्र व्यन्गणि नाहे, यहानि, मनुष्र, तु হ্মহা,মন্যপ,চৌর,গুক্তল্লগও হ্য়,তথাপি ছ্ব্লি-ৰাম পরায়ণ হইলে অন্তকালে ভবসমুদ্রে পা-র হইতে পারে এবং যেব্যক্তি,হরি এই অক্ষয়

শুয় উদারণ করিয়াছে, সেচারি বেদ অধ্যয়ন ক রিয়াছে, অত এব এত মৃচনোক্ত সর্ব লক্ষণাকান্ত ভাকত ভ্রুনি ব্যক্তির এত মৃচনোক্ত সংপ্থাব-শম্বনঅবশ্যই কর্তব্যন্তবা ঘোরথাকিতে ঘোর নরকহইতে কিরপে নিস্তার পাইবেন ৯। ইতি ৩ শ্রীমন্ধর্ম সংস্থাপনাকান্তিক বিরচিতে পাবাওপী-ডুন নামক পুত্যুত্তরে উন্মন্ত পুলাপ থওনোনান পুথমোল্লাসঃ সমাণ্ডঃ।

ধর্মন ছাপনাকাল্কর দ্তীয়পুশাবাঁহারা,বেদ মৃতি পুরাণায় ভ ধরজাতীয় সদাচার সম্প্রহা-র বিকল্প কর্মকরেন, অথচ ভ্রনাত্মক বুলিতে আপনাকে আপনিই বুল্পজ্ঞানী করিয়া নানে-নু, তাঁহারদিগের তবে অনাদর পুরঃসর যজ্ঞ সূত্র বহন, কেবল বৃদ্ধ ব্যয় মার্জ্ঞার তপলির ন্যায় বিশাস কারণ, অভ এব এভাদৃশাচার বভ ব্যক্তিদিগের মান্দ্র ভ মহাভারত বচনানুসারে কি বক্তব্য । বথা। সদাচারোহিসর্বার্হো নাচা-রাণ্যুত্য পুরঃ। তথাট্বিপ্রেপ্সতত্তাব্য মা- চার শীলিনা। দ্রাচাররতো লোকে গার্হণীয়ঃপুন্ মান্ ভবেং । তথাচ । সত্যংদা নং ক্ষমা শীল মান্শংস্যতপো ঘৃণা । দৃশ্যন্তে বত্ত নাগেল্ফু সবাক্ষণ ইতি মৃতঃ । যবৈত্তমভবেং সপ্তিশ্দুইতি নির্দিশেং ।

পঞ্চনকার সাধক বিতর্ককারক, ও প্রবন বেশ ধারক, নহাশায়, ভাজি পুযুক্ত উপযুক্ত বিতর্ক পরিত্যাগ করিয়া অনুপযুক্ত পঞ্চবিত্ত কের দারা কেবল আপনার কুতর্কতার্কিকতাও বাচালতা পুকাশ করিতেছেন।

ভাকত ব্জানির উত্তর। ধর্মসংছাপনাকা
ক্ষী সদাচার সদ্যুবহারহীন অভিমানির ব্জ্ঞোণ
পবীতবারণ নির্থক হয় লিথিয়াছেন এছলে
সদাচার সদ্যুবহার শব্রে দারা ভাঁহার কি
ভাৎপর্য্য ভাহা স্পাইবোধ হয়না। পুথসত বহি
ইহা ভাৎপর্য্য হয় যে ভাবৎ উপাসকের ও অবিকারির যে আচার ও ব্যবহার ভাহাই সদাচার ও স্মৃবহার হয় এবং ভাহা নাকরিলে ক্

ক্তো পরীত ধারণ বৃথা হয় তবে ধন সংস্থাপ-**নাকাণিক্ষকে জিজ্ঞানা** করি যে তিনি তাবৎ উ পাসকের ও অধিকারির আচার ও ব্যবহার **ক্ররিয়া থাকেন** কিনা অর্থাৎ বৈষ্ণবের আচার যে মৎস্থা সভ্যাগ এব অধীনতা ওপর্নিন্দ্ রাহিত্য ইত্যাদি ধর্মা তাহার অনুধান করেন किना अद॰ उद्ध कारन कोरनत धर्मा वि निर्द-**দিত ম্ৎস্য মাণ্যাদি** ভোজন ও ম্ৎস্যমাণ্য বে আহার না করে তাহারপুতি পশুশারপুরো গ হইাও করিয়া থাকেন কিনা। আর বুন্ধনি-**८५त थय** याहा सन् कहियाए न। ५ ज्जात रेनवा-পরে বিপু। यहाउउटिङ य थिः मना। उद्यान ্ুমুলাং ক্রিয়ামেষাং পশ্যন্তো জ্ঞানচক্ষুষা। তথা ৷ যথোক্তান্যপি কর্মাণি পরিহায় দিজোতনঃ ৷ অাঅজ্ঞানেশনেচস্যাৎ বেদাভ্যাসেচ যত্নবান্,, অর্থাৎ কোন২ বুন্ধনিষ্ঠ গৃহছেরা গৃহছের পুতি যে যক্তশাস্ত্র বিহিত আছে তাহাসকল কেবল ্ৰক্ষাজ্ঞান খারা নিল্ল করেন ভঁছার। জ্ঞান চচ্চু দ্বারা জানিতেছেন যে পঞ্ যজ্ঞাদি সকল ব্রা-कार्चक इस्त्रन अर्थाए दुक्तनि गृहश्रामत दुक ख्वानगता ममूनाय मिकश्य। भूर्वाककर्ममक-লকে পরিভাগে করিয়াও বান্ধণ আত্ম জ্ঞা. त्व हेन्द्रित निगुद्ध भूगत उपनिवनानि (यानत्र অভ্যাসে যত্ন কারবেন। এই সকলের ও অনুষ্ঠা। न ध्या निः इति नाका का कि कि तिया था किन किना। এই তিন পৃথক্ ২ ধর্মানুষ্ঠানের আচার যাহা পরস্পার বিৰুদ্ধ হয় তাহা করিয়া থাকেন এম-**उ काइएड धर्मन इाशनाका की वृक्षि ममर्थ इ-**ইবেননা যেহেত্ত ধন্ম বুদ্ধিতে মংস্য মাণস ত্যাগ ও মংস্য মাংস গুহণ এবং গুহণাগুছণে সমানভাব এইতিন ধ্যা কোনমতে এক কালে **এ**कवा कि रहेरा **हरे**वाद मञ्जावना नाहे **य**ऊ-এব যদি সকল উপাসকের আচার ও ব্যবহার रेशरे महाठाव मधुतराव मधुत मुद्रा प्रया मर ছাপনাকা দ্বির তাৎপর্য্য হইল তবে ভাঁহার ব্যবস্থানুসারে সদাচার সম্পবস্থারের অনুষ্ঠানে **অক্ষতাহে**তুক বজ্ঞোপনিত বারণ তাঁহারি আদৌবৃথা হয়। দ্বিীয়ত বদি আপন্থ উপা-সনা বিহিত বেসমুদ্ধে আচার তাহাই সদা-**চার স্থাবহার শ্রেথর্মস**ংস্থাপনাকাজ্ঞ্র জ ভিপেত্রহয় তবে ভাঁহাকেই মধ্যন্থ নানিবে তি **নি সাপন উপাদনার সমুদায় আ**চার করিলা थाक्न कि ना यरि भाखिविहि अमुनायशाहाः র করিয়া থাকেন তবে যথার্থ রূপে তিনি অন্য ব্যক্তি যে আপন উপাসনার সমুদায়ধর্মনাকরি-তে পারে তাহাকে ভাজা কহিতে পারেন এবং তাহার যজ্যেপবীত বৃথা ইহাও আজ্ঞা করি-তে পারেন আর যদি তিনি আপন উপাসনা विह्उ धर्मात महना १८ मत अकार म अनाक दि न তবে उँ। हात क्हेर्य वश्वहा (य स्थार्स्स न्यू-দায় অনুষ্ঠান নাক্রিলে যজ্ঞোপবীত ধারণ বৃ-থা হয় ইহার অনুসারে অণ্ডে আপন বজ্জো-পবীত ত্যাগ করিয়া যদি অন্যকে কছেন যেতু-

নি স্বলেরি সমুদায় অনুষ্ঠান করিতে পারমাজ-তএব কেন ব্যা যজ্ঞোপনীত ধারণ করছ তবে একথা শোভাপায় ॥ তৃতীয়ত স্বাচার **স্**চুব হার শব্রে দ্বাবা আপন ২ উপাসনা নিহিত য-থাশক্তি অনুষ্ঠান করা ধ্যা দ স্থাননকাজিক্র **য়দি অভিপুেত** হয় ৪ যে২ সংগের অনুচানে কটি **হয় তলি**নিভ ননস্তাপ এবংল্ধর্মবিহিত পুয়েশিু• ভ যে করে তাহার যজ্ঞসূত্রধারণবৃথা হয়না ত-বে এব্যবস্থানুনারে কি ধর্মন স্থাপনাকাকির কি মন্যব্যতির বজ্ঞোপনীত রক্ষাপাই**ল। চ**-जूर्थ यमि धर्म निः झालना हाकी कःइन (यमहा-**জন সকল** याहा कितिया जानिए उट्टन **जाहात** নান স্বাচার ও সম্বাবহার হয় ইহাতে পুথাক 🗢 बिद्धामा कति त्य महाजन भार काहात्क-স্থির করায়ায় বেছের দেখিতে পাই বে পৌ-बाक् ও निज्ञानन अव कित्रान लामाई क्रमान नवाउवहान बीवरान पुरु टिक्ट (गी-वाकीय निर्माशय देवकावता सरावन किस्सा

ভাঁহারদিশের পুড়ানুসারে পরপানায় সাচার করিতে উদ্বুক্ত হয়েন এবং শাক্ত সম্পুরায়ের কৌলেরা বিৰূপাক ও নির্বাণাচার্য্য এবং আগ-মবা**গাশ পু**ভৃতিকে মহাজন কহিয়া ভাঁহাদিগে-র ব্যবহার ও ভাঁহারদিগের পুস্থানুসারে আ-ার করিতে পুবৃত্ত আছেন সেই রূপ রামানুত্র कन्मानारम्ब देवकरदद्वा 😉 द्वामानुब 😉 ७९ निवा পুশিষ্যকে মহাজন কহিয়া ভাঁহাদিণের ব্যবহাৎ র ও আচারকৈ সম্চোর ও সম্প্রহার জানিয়া তাহার অনুষ্ঠান করিতে এপর্য্যন্ত যত্ন করিতে-रहन रय शिवनिक ए**र्भनरक शाश करिया शिव** भन्तिरत शुरतन करत्रनमा वदः नानकशृष्टी । पाः দুপপদ্যী পুভূতিরা পৃথক্ ২ ব্যক্তিকে মহাজ-ন জানিয়া ভাঁহাদের ব্যবহার ওআচারানুসারে ব্যবহার ও আচার করিতে যত্নকরেন এবং শাং ব্রেপ্ত অধিকারি বিশেষে বিশেষ ২ গানুষ্ঠান লিং থিয়াছেন ৷"অধিকারি বিশেষেণ শাস্ত্রাণ্যকান্য-শেষ সংগ্ৰ কিন্তু একের মহাজনকে অনে নহাজন

दि कि विक वद्रक था उक छ क इन। अदर औ নাবল বহুজনের অনুসামিরা পরস্পারকেনিনির-ত ও বসুত্ত কৰিয়া থাকেন। অভএব **ধর্মন**ৎ ष्ट्राधापना क्रिया वक्ष कार भवं। इरेन जना-চার ম্যুবেন্যরের নিয়**ন্**ই র**হেনা সুতরা**•এ**কে-**রনতে অন্য সদাচার সহ্যবহার 'হীন ওবৃথা য-জ্ঞোপৰী ভ্ৰাৱী **হয়েন ॥ পঞ্চম যদি ধৰ্মস**ংস্থা• পনাকাঞ্চির ইহাতাৎপর্য হয় যে আপন পিতৃ-পিতানহাদি যে আচার করিয়াছেন সে সদাচা-রহয় ভ্রালিওসদাচারেরনিয়ন রহিলনা পিতা পি:ামহ তযোগ্য কর্ম করিলে সে ব্যক্তি অ-रयाका क्या कतिशाख वाश्रनात्क महाहात्री कः হিতে পারিবেক এবং ধর্ম সংস্থাপনাকাক্ষির মং তে পিতৃ পিতানছের মতানুসারে সেই অযো-গ্য কর্মাকর্ত্তার যজ্ঞোপবীত রক্ষা পাস্ব। বস্তুত আপনং উপাসনানুসারে শাস্ত্রে যাহাকে সদা-চার কহিয়াছেন তাহা শান্তের অবহেলা পূর্ব-ক পরিভ্যাগ যেকরে <mark>ভাছার যজ্ঞোপবীভ</mark> ব্য-

र्थ इस अरः (य भागित मृश्य होन इहिया भना मृश्य ही तरक वृथा यरद्धा भवो ठशाकी वरण अनः उक्त मिन्तः कत अरः मुस्ताय स्मान प्यक्त यद्धमूब सात्र वृथा ७ इहेर्डभाद्ध ॥

**ধন্ম নং** স্থাপনাকা**ন্দির পুত্**যন্তর । পণ্ডিতা-ভিমানী,লিখেন, যে,ধর্মাস স্থাপনাকা হিক্ষর দুড়ী। য় পুশ্লে সদাচার সমুগ্রহার শন্মে ঠাহার কি তা ৎপ্রয়া, ভাছা স্পষ্ট বোধ ছয়না, একি নবোব, ধ্যাস স্থাপনাকালিকর ঐ পুল্লে সদাচার সম্বাক হার শবের অব্যবহিত পূর্বেট সুদ্রাতীয় এইশ र विथिত बाह्न जाहार गीवर बाजियभरा-চার সমুগ্রহার এই তাৎপর্য্য**ই সুস্পট** বো**র হ**• ইতেছে,ভবে যে অনুপঞ্তি অর্থেরকল্লক ও প র দোষ মাত্র দর্শক অভিমানিমহাশয়,পূর্ববর্ত্তি ব্সুজাতীয় শবু দৃষ্টি নাকরিয়া উপাসকের সদা-চার সন্ধ্যবস্থার এই তাৎপর্য বোধে কিস্তেত কিমাকার নানা পুকার বিতক্ক করেন, তাছা-তে তাঁহাকে কি পণ্ডিত কহা যায়্য ভাকতৰ্

জ্ঞানি নহাসয়দিয়ে এঅনুযোগ করাও অনুটি ত,কারণ,সুভাবের কার্য্য শনিবার্য্য, তাঁহার দি গের স্বভাবই এই যে ব্লের মূল স্পর্শ নাকরি-স্থা অণ্ডে তারোদ্ণ করা,বেদন,ভীহারা, মোক দলের যে সাধন ৰূপ বৃহ্ন,ভাহারনূল যে কর্ম-र ७, जारा म्थाम नाकतिया क्यानकाथ मुक्तन ত্রু অবলয়ন করিয়া থাকেন, ভাল, সিজ্ঞাসা ক্ষরি, ভাঁহারদিগের এবিবেচনাও নাই, যে,কো-ন্ খাচারের ব্যতিক্রম ছইলে যজ্ঞোপবীত ধা-রণ কুথা হয়, উপাসকের আচারের ব্যতিক্রম **ভ্**ইলেবর• উপাসনারি <u>ৰ</u>ুটি হুইতে পারে, ইহা• ই যুক্তি সিদ্ধ হয়, যজ্ঞোপবীত ধারণৰ্থা হ∹ য়, ইহাতে কিশান্ত্ৰ, কিযুক্তি, তাহাবৃহত্নতি-রো অগোচর, ব্রাহ্মণজাতিরত্রিকালীনসক্ষেণা পাসনাদির অকরণে যজ্ঞোপবীত ধারণ বৃথা হ য় ইহা, কে, নাকহিবেন, শান্তপ্তযুক্তি অধিক নাত্র। ফ্তিঃ। তত্র নাস্ত্যাদরে। যস্থনস্বাহ্মণউ-চ্যতে। অর্থাৎ ত্রিসন্ধ্যাতে যে ব্যক্তির আদর না

থাকে,তাহাকে ব্ৰহ্মণ কহা যায় না, পত এগ উ-**পা সকের স্**লাচার সম্বুত্র হারের বিষয়ে নানা ক বিতর্কন্বপ অনর্থ বাক্য পুরোগে কেবল গ্রেয় ক র্ভার ব্যয়াবিক্য ও মুদ্রাকারকের আল্লাবিক্য বিনা কোন পুয়োজন দেখাবায় না। সহাচান (तत्रव्यक्न) सनुकिश्वाष्ट्रन। यथा। नत्र्रीम्-यमुर्जित (र्स्व गरहा) र्यस्व द्वरः । ज्ञास्य विभिन्नः দেশ বুকাবত্ত পুচকতে ৷ তামন্ দেশে য়মা-চারঃ পারস্পর্য্যক্রাগতঃ। ২ণানাং দান্তরালা-ना म मनानात्र डेन्टार डा मर्थाए नत्र व डी 🔞 प्यमु-তী এই দুই দেবনদীর নধ্যন্থ যে দেশ্যতাহায় দেব-তারনির্মিত,তাখারনাম বুদ্ধাবর্ত্ত, সেইবুদ্ধাবর্ত্তে বান্ধণাদি চারিবর্ণের ও অন্যান্য জাতির পুক্ষ পরম্পরায় ক্রমে আগ 5, বে জাতির যে তাচার, সে জাতির সে আচারকে, সর্বদেশেই সদাচার ক हा याया, त्म हे जमाहात्र-बुक्तिशन (मोहाहद्वन देव-ধন্নান আচমন ওত্রিসদ্ধ্যো পাসন ইত্যাদি। ত ণি পরীত আচার, অনদাচার হয়৷ অহকার হিং- 'সাদ্যাদি রছিভ,সভ্যবাদী জিভেন্দ্রি থামিক, ও শাস্ত্রজ্ঞ, যে মনুষ্য, ত'াহার নান, সাধু নেই **সাধুপরম্পরায় আগত অতি প্রাচীন** যেব্যবহার, তাহার নাম সম্যবহার, সেই সম্যবহার, বেদের ন্যায় পুনাণ ও ধর্মের অনুনাপক হয়। অভ এব **মৃতিঃ। ব্যবহারোংপি সাধুনাংপুমাণং বেদব**-ভবেৎ । অর্থাৎ সাধুদিগের বেব্যবহার, সেও বেদের ন্যায় পুনাণ হয়,বেহেভু, ভাঁছারা,সর্ব-भाष्ट्रत भात्रमभी । काजग्रासनः । वावशादाहि वनवान् वर्षाः खनावशीयाः । व्यर्थाः मान्तरः इर ल ७ विद्धाव **इल वावश्र**क्ष वनवाम् इय्र, वाह-ভু, দেই ব্যবহারের দার। ধর্মের অনুমান কর। याय । भूबागारि भाठेक्टल, नाबायगः, नमम्-**छ। नद्ररेक्**व नद्राख्य•। (एवी : , मद्रम् जीरेक्व जः তে। बर्म मुनीतरप्र९१ अहे द्वारकत भारतेत वायहात ७व॰ नानाभूनि वहन मर्ख् विथवात विवारहत्र नि-वृख्ति वावश्रत ववः महाशात ७ हिः नाम श्रीः বর্ত্তকপুমাণ সম্বেও ভাহার অকরণের ব্যবহা-র ইত্যাদি, সম্বহার হয়, ইহার বিপরীত, অসদ্যবহার। অতএব বিজ্ঞ ব্যক্তিরাই, বিবে~ চনা করিবেন, যে, ঘাঁহারা,ব্রাহ্মণ জাতি হইয়া বেদমা তি পুরাণাদি উল্লেখ্যন পূর্বক বিসংক্ষ্যা-পাসনাদি পরিত্যাগ এবং অবৈধহিংলা, সুরা-পান জবনীগমন ও শৈববিবাহাদিত ভূ চহৎ ক মের সর্বদা অনুধান করেন, তাঁহার দিগের যজ্ঞো পবীত ধারণ বৃথা হয়, কি যাঁহারা, সুতি ষ্তি পুরাণাদিতে শুদ্ধা পূর্বক ত্রিসফ্যোপাসনাদি পরিত্যাগ করেননাএবং অবৈধ হিংসা, সুরা नान, जवनी गमन, अरेनविवार रेजाहि, अनूर्व সদনুষ্ঠানের কথাকে কর্ণকুহুরেও স্থান দেননা, তাঁ হারদিগের যজ্ঞোপবীত ধারণ বৃথা হয়?। এব॰ ভাক্তত্ত্বজ্ঞানি মহাশর, এক্ষণে কবিরাল্ল গোঁসা-हे भुज्जिक (गोत्राव मणुनायत महाजन करिः বেননা,: কিছু, ভাঁছার পূর্ব পুরুষেরা, চির কাল কহিয়াছেন ও তাঁহারদিণের আচার ও ব্যবহার কেও সদাচার স্থাবহার বলিয়া ব্যবহার ক-রিতেন, তাহা দৃষ্ট ও শুক্ত আছেন এবং ভেঁহ, এতাদৃশ দিব্যজ্ঞানের অনুদয় কালে তাঁহারদি ে, মহাজন কহিতেন, কৈনা, তাহা, আপনি ও জ্ঞাত আছেন। এব বৈষ্ণবাদি পঞ্চোপাদকের উপাসনার কোন অংশে কটি হইলেও তাঁহা-রদিগের যাহাতে শ্রেয়ঃ হয়,তাহা ৬৯ পৃষ্ঠে ৬. পঙ্জিতে পূর্বে ই কহিয়াছি, কিছু, খাঁহারা, বুং হ্মণ জাতি স্ইয়া তব্জাতির অভ্যাবশ্যক কর্মেন ও জলাঞ্জলি পুদান করিয়াছেন, ভাঁহারা, সুধর্মা চ্যুত, কি, যাঁহায়া আদর পূর্বক ভজ্জাভির আ-বশ্যক কর্ম করিংভছেন, ভাঁহারা, সুধ্ম চ্যু-ক,যাঁহারা, পরের নিন্দাকরিবার নিমিত্ত পর-কীয় পুশ্লের পূর্বাপর দশ নেও অসমর্থ, ভাঁহা-রা, অন্ধ 😝 ভাঁহারদিগের যক্ত সূত্র ধারণ মিথ্যা, কি, যাঁহারা, শাস্তভঃ ও লোকভঃ সুধ্য চ্যুত ও দুর্মান্তি ব্যক্তিসকলের ঐত্কিও পারত্রিক দু:খদশন করিয়া তাঁহার দিয়ে সদুপদেশ ক-রিতেছেন, তাঁহারা, অন্ধ ও তাঁহার দিগের যজ্জ নূত্র ধারণ নিথ্যা হয়?।

তাক্তভুজ্ঞানির **উত্তর। ধর্মসণ্ডাপনাকা**-দ্দী বৃদ্ধবগ্ৰন্থ বিডালতপ্ৰিব্ন যেদৃষ্টান্ত লিখিয়া-ছেন তাহা কাহার পুতি শোভাপায় ই**হা বিজ্ঞ** ব্যক্তি সকলে বিবেচনাককন নাসিকাতে সবি-ন্দুতিলক যাহার সেবাতে প্রায় অন্ধর্ণ ও ব্যয় হ্য় ৷ ৩ ভূরিকাল হতে নালা বাহাতে জবনা দির স্পর্শাস্পর্শ বিচার নাই এবং লোকের সহিং ত সাক্ষাৎ হইলে অভ্যন্ত বিনয় পরোক্ষে আ পন জ্ঞাতি বর্গ পর্য্যন্তের ও নিন্দা এবং সর্বং দাএই ভাব দেখান যেন এই পূজাসাক করিয়া উত্তান করিলান ও বাছেতে কেবল দয়া ও অ-हि॰ ना এই সকল শব্ সর্বদা মুখে নির্গত হয় কিন্তু গৃহ মধ্যেমৎস্য মুগু বিনা আহার হয়না। আর এক ব্যক্তি মহানির্বাণের এই বচনে নির্ভর कंद्रना "(यरनाभारयन एरविन लाकः (मुयःमः মুশ্ব ে । তদেব কার্য্য-বুক্ষজ্ঞৈ রিদ পর্যাপনা-তনং ৷ অর্থাৎ যে২ উপায় দারা লোকের শ্রেয়ঃ পুাণ্ডি হয় ভাহাই কেবল বুক্ষ নিষ্কের কর্ত্ব্য **এই धर्म मनाजन इग्न । ५व॰ छमनुमात्र दारऋ** কোন পুতারকতা কি বেশেকি ঘালাপে কি ব্যব-ছারে যাহাতে হঠাৎ লোকে ধার্মিক ও সাক্ষাৎ বুন্ধণ্যদেব জ্ঞানকরিয়া থাকে তাছা নাকরিয়া অন্যের বিৰুদ্ধ চেষ্টা না করে এবং তন্ত্রাদি বি-হিত্তমৎস্যমাসাণদৈতোজন যাহা দেখিলে অনে-কের অশুদ্ধাহয় তাহাওস্পষ্ট ৰূপে করিয়া থা-কে এই দুয়ের মধ্যে কেবিড়াল তপমী হয় ইহা কিঞ্চিৎ পুণিধান করিলেই সুবোধ লোকেরা জা নিবেন ৷৷

ধর্মন স্থাপনাকাশ্কির পুত্রতর ৷
তাকতত্ত্তানি নহাশয় দিগের এবাকেরে
এই তাৎপর্য্য, বে, বৃদ্ধব্যাদুওনার্কার তপথির দ্যান্ত, ধর্ম সংস্থাপনাকাশ্কি দিগের পুতিই
শোভাপায়, যেহেতু, ভাঁহারা, বাহে লোক

নিকটে সর্বলা আপনার দিগের শৃক্ষাচার, ধা-মিহিতা, সর্লতা, ক্রিয়া নিষ্ঠতা, দ্য়া, অ-হিংসা পুকাশ করিয়া অন্তরে তাহারবিপরীত আচরণ করেন, ভাঁহারদিগের এতাৎপর্য্য, আ• भूर्य। नत्र, श्रम् न श्राण पाका विक्रिक्ति वा विष्या १ -পুকার অনুভব হইতেপারে কারণ খ্রীয় দ্বীয় দৃ ভাবের অনুসারেই ইতরলোকে, পরকীয় সুভাবে-রোখনু ভব করিয়া থাকে। তথাচ নীতি শাস্ত্রে। नुकी स्निन नुजारवन शांत्रवानि जात बनाः । नुजावान् পরিগৃহভিব্যবসারেণ পণ্ডিতাঃ। অর্থাৎ ইত-त्र त्वात्कृष्टे मुकीय मुजारतत्र मात्राष्ट्रे भत्रकीय मु ভাবেরো অনুভব **করে, কিন্তু, পণ্ডিভেরা, সদস**-মুক্তবহারের হারাই অনেক্রে স্ভাব বো**ধ করেন,** (यमन, वाजिनातिनी जी अ नात्रमातिक नुक्य, তাবৎ দ্রীকে ও তাবৎ পুরুষকেই ব্যভিচারিণী ও পারদারিক, অনুভব করিয়া থাকে, কারণ, তাহারদিগের এই নিশুয় আছে, যে, সকলেরি চিত্ বিকার সমান, অতএব আমরা ও যেক্প

ব্যবহার করি খনেয়ও সেই ৰূপই ব্যব**হার ক**ঃ রিয়াথাকে, তবে বিশেষ এই,যেন আনরা, ব্য-ক্ত, অন্যে সব্যক্ত, কিন্তু,সে অবোবেরা, এবিবে-চনা করেনা ও দেখেনা, যেনুকোন পুঞারে গোপন ক্রাযায়না যে ক্লোষ লোভ শোকাদি, ভাহার বশীভূত হইয়া কেহ্২কি২ শর্হিত কর্ম আচরণ লাকরেন কেহলা**,সেইকোধাদিকে বশীভূত** দা**স** ক্রিয়া পর্ম সুথী হইতেছেন, অতএবভাকত-ভ্জানি দিগের ওই সকল অভ্তবাক্য শুবণ क देशा ध्या निष्टा शनाका विक्रता, श्रम बुडे नर्दन বর্ঞ কৌতুকাবিষ্ট আছেন, মদ্যপানে মন্ত কি-য়া উন্মন্তব্যক্তি দিগের নৃত্যগীতওপড়ুত **বা-**का नुवन कतिया काम् जन, को ठूकाविश्वेनाहन কিন্তু,বিজ্ঞ ব্যক্তি দিগের এই বিবেচনাকরা আ বশ্যক, যে, যাঁহারা, সন্ধ্যাবন্দনাদি পিতৃনাতৃ শুদ্ধাদি ত্যাগ, গকাতুলনী সালগামাদিতে অশুৰা, ও সুরাপান জবনী গমনাদিতে পুবৃত্তি করেন তাঁহারদিখে সদুপদেশ শারা তথা বিষয়

**স্ইতে নিবৃত্ত ক**রান, যে সকল ব্যক্তি, ভাঁহার **দিগের পু**তি বৃদ্ধব্যা<u>ঘু</u> ও মার্জ্জারতপশ্বির দৃষ্টান্ত উচিত হয়, কি, যাঁহার রোফ্তেকপটভাব পুকা-শের, দারা অযোধ লোক সকলকে প্রভারণা করি **या वालक रुख ब्याकाल्य**त रुप्त रुप्तर्शन नगर्य **ভাহারদিং,** বাক্যমাত্রেই অলায়ানে বুল্লা-ক্ষাৎকারকরাইয়া এই সাংলগ্রেজি গর্হিত ক (यं পूवःशूनः পुवृत्ति कन्यान, उँ। शाहित्यत भुति বৃদ্ধব্যায়ু ওমাৰ্জ্জার তপস্বিরদৃষ্টান্ত উচিত হয়? ় এবং পদ্ম পুরাণের উত্তর খণ্ডে, স্কপোল ক-ল্লিভ শাজের দারা মোহজনক, অথচ বিষ্ণুপ্ত বৈঞ্জের নিন্দক,যেব্যক্তি,ভাহার নরক শুবণহই -তেছে। যথা। শুতি মৃতি সদাচার বিহিত॰ কর্ম শাশৃত ৷ ৰ সংশ্ৰম পুৰত্বেন শ্ৰেয়োৎথী হসমাচ রেৎ ৷ স্বৃদ্ধিরচিতৈঃশাজৈ মোহয়িত্বা জন নরাঃ विकृ देवकवायाः भाभा (यदेवनिन्ताः भुकृतं छ। তেন তে নিরয়ং যান্তি যুগানাং সপ্তবিংশতিং। অর্থাৎ শ্রুতি ফৃতি সদাচার বিহিত, যেকর্ম, নেই নিত্য*হ্*য়-**আপনার মঙ্কলাথী** লোক, য ত্বপূর্বক স্ স্বর্মের অনুষ্ঠান করিবেন, স্বৃদ্ধি::-**চিত শাস্ত্রের দারা লোক সকলকে মুগ্দ ক**রিয়া रयशाशिक्ष नदावरमद्वाः, विक्षू ७ देवकृतद निम्हा করে,সেপাপিঠেরা, সেইপাপে সপ্তবিংশতি যু-গ পর্য্যন্ত নারকীহয়**ু প**র্যু বৈষ্ণবের তিলক रमरान्ध रेमदानित्र जिशु धुशात्र एकि विश् का निव -वस्य किमूत्रम्डे अव जाक छ खु छा निहिरणत न् उन तु।क्रा वज्र ७ हम्म शानूका, याहा क्रवन रिश्व ব্যবহার্য্য, ও যে বৃদ্ধ সকলকে জবনেরা, ইজের ও কাবা পুভৃতি কহিয়াথাকে ও যে চর্ম পাদু-কার জাবনিক নাম মোজা, সেই বক্ত পরিবানে ও সেই চর্ম পাদুকা বন্ধনে দঙ্গুয় দওচভুইয় कान विनास्ट्वा कि मुजाम्ड काम, जाहात भु-বণেরপুত্যাশায় রহিলান? অধিকন্থ অদ্যপর-মাহু:দিত হইলান, কারণ, অনেক কালের প-রে খনেক খনেবণে একণে ভাকতত্তানিনহা শয়দিগ্যে নিগ্র শা**ত্র দর্শনকরিলান**,যে নিগু-৮ শান্ত্রে নির্ভন্ন করিয়া তাঁ**হারা,শৈ**ববিবাহ জ वर्गं भवन ও भूताभानानि व्यानक मए कर्त्यात অনুষ্ঠান এবং ছাগীমুগু,বরাহতুগু,হংসাও ও কুককুটাও ভোজন করিয়াথাকেন। তাঁহাল দি-भाद (मेरे निशृष्णाञ्ज वहे 1.८ (यत्नाभाव वन्स-विभि लाकः (भुंबः नममु छ । उपन कार्यः । বুদ্দক্তি রিদণ ধর্মণ সনাতনং ৷ এই নিগ্র শাং ক্রের্বথার্থ স্পষ্টার্থএই,বে উপায়,লোকের শু-হপুরহয়, বুদ্ধজ্ঞানি দিগেরতাহাইকর্তব্য, তাঁ৷ হার দিগের সেই ধর্মাই নিড্য। এব**ণ ভাকতত্ত্** জ্ঞানি মহাশয় দিগের কল্লিত নিগ্ঢার্থ এই, বে, সুক্ষজ্ঞানিরা,বাহে বেশের কিয়া আলাপের কিন্তা ব্যবহারের দ্বারা যাহাতে আপনাকে শু-জ্ব স্বত্ব ও নিজপুৰুৰ জানিতে পারে, তাহ্ট ক-রিবেননা, কিন্তু, ত**ন্ত্র শান্ত্রোক্ত ম**দ্যমাংস ভো জনাদি, গর্হিত কর্মই করিবেন, বাহাতে অনে-কে অশুদ্ধা করে,এই সকল কথা শুনিয়া হাসি

ও পায় দুংথ ও হয়। ভাল, জিজ্ঞানা করি?यर्सि এই **न**क्न गर्हि**उ क्य किंद्रिल**ई लाक वृक्षछः'-**্ৰীহয়,তবে হাড়ি ডোম চাঁড়াল ও মু**চি উলা-র', কি, অপরাধ করিয়াছে, ইহার দিয়ে ও কেন বুক্ষজ্ঞানী না কহাযায়, তাহারা, ভাক্ত-তব্ৰুজ্ঞানি মহাশয় সকল হইতে ও এই সকল ক্রেবর অধিকই হইবেক, ন্যুন কোনমতে ই হইবেকনা, অধিকন্তু,তাহারা, রাজ পথের ন-ধ্যে কতপুকার হাস্য কৌতুক নৃত্যগীত অস্ব ভক্ষ রক্ষর করে, কেহ্বা, পীত্রাপীত্রাপুনঃ পীত্বাপপাত ধরণীতলে, এই তাক্রাক্ত শ্লোকর खायथार्थ यथानु उ वर्थ हर्मन कशास, वर्थाए शाः ন করিয়া পান করিয়া পুনর্বার পান করিয়া রা জগথের পুরেন্ত বস্ত্র রহিত, ধ্ন্যবলুপ্তিত, অনু লায়িতকেশ, মৃতবেশ, হইয়া পথস্থলোক স্থল क उन्न हर्मन कत्राहेशा धानस हंशे (कहवा) এইপুকার পরম বুক্ষেলীনহয়,যে কুক ফুরাদিতে স্বগাত্রমাংস ভোজন করিলে ও ধ্যানভক্ হওয়া

'দুরেথাকুক, ভ্রুত্বস্থ ও করেনা, অতএব তাহার দিন্তু পরনব্রজজ্ঞানীকহিলেও কহাবায় ইতিক শ্রীনজর্ম সংস্থাপনাকাছিক বির্চিতে পাষ্ঠ পীড়ননানক পুতুত্তরে সন্দেহ ভঞ্জনো নান দিতীয়োলাসঃ সনাপঃ॥

ধ্যানিং ছাপনাকাজিকর তৃতীয় পুন।

THE PORT OF

ব্রাহ্মণ সজ্জানের অবৈধৃহিৎ সাকরণ কোনধ্যা,
বিশেষতঃ সর্বত্ত হিতেরত, অহিংসক, পারম
কাল্ণিক, আন তত্ত্জানিদিশের আন্মোদর ভ রণার্থে প্রমহ্বে পুত্রহ ছাগলাদি ছেননকরণ, কি আশুর্য্য, এতাদৃশ সাধু সদাচার মহাশায় সকলোর স্কপ্রাণবচনানুসারে ঐহিক পার্রি-ক কি পুকার হয়। ব্থা। যো জন্মায় পুষ্টার্থণ কিভিঞ্জন দুর্বলঃ। দুরাচারস্য তস্যেহ নামু-ভাগি সুর্থণ ভ্চিৎ॥

দুঙাভঃকরণদুৰ্জ্জন দিগের আন্তরিক ভাব বোঁণ ধ ফরিতে বুঝি বিধাতা ও ভগোদ্যন, তাহাতে নরলাভঃ করণ সজ্জনেরা, সেতাব কিকপে বোধ

ক্রিতে পারেন, দেখ্যভাক্তজ্বজ্ঞানি মহাশয়, 🗸 **(मार्यत्र नामिপाञिक विकात शुरू २**३मा महर ম্ংসাদি ভোজনের লোভে ও বিকার শান্তির আশায়, এক্ষণে বামাচার স্বৰূপ ঔষ্পান ক রিতেছেন, যেমন, কোন সালিপাতিক বিকারে-র রোগী, রোগ শান্তির বাশ্বায় ও কুপথ্য ভো-**ब्रान्त शाका ब्रकायः, विष्यु (याग क**्रिक् कि यु-ठा हो। তে রোগ শান্তির বিষয়কি, কেবল বিম্ফালায় ভাক্ততভ্জানি মহাশয় দিগেরো তালাতে সে দোষের শান্তি দূরেথাকুক, বরং দ্ভিণ বৃদ্ধিই হ-ই বেক অধিকন্তু, ছিলেন, শুণ্ড ভাক্ত বানাচারী ও ব্যক্ত ভাক্ততভ্জ্ঞানী, এক্ষণে হইলেন, ব্যক্ত ভাক্ত বাদাচারী তাঁহার, মভিপায় এই,বে, লো-কে, জ্ঞানীও কহিবেক, অথচ কৌল ধর্ম পুযুক্ত (कर् निन्ता कतिरवक ना, यहून सन्। भा**-भ**रजाज-नामि ও कत्रायाहरतक, यमन, तुष्किम ठी (वनागाः বৌবনাবস্থার অভাবে দুরবস্থার ভয়ে বেবিনের

<sup>\</sup>দ্রাসোপকমেই বৈঞ্বী হয়, তাহার মনেরমানস এই, (य, रेवकवी विशा कह अ**मुका क**ब्रिविक না, ভিক্ষাবৃত্তি অবাধে হইবেক, বেশ্যাবৃত্তি ও निर्विद्म हिन्दिक, बार्ख इहेल वृक्षि जु॰ म इहेया लात्क्य किर मूत्रवज्ञा नाष्ट्रय, शायर अकि चम्हे, এতকই, তথাপিনা ভাঁতিকুল, নাবৈঞ্বকুল, এ क्ल अकूल,मू हेकूल नहें, त्यशत्थयान त्महें भाष-ই অনিষ্ট, একপথে সিংহ, এক পথে ব্যাঘু,গুনর্বা র বে উভয় ভুট সেই উভয় ভুট। অভ ৭ব 🖼 প্রনীতা কছেন, যে, জীব, যত্ত্ব পূর্বক স্বঃ আ -আর উবার করিবেন, সাত্মাকে করাচ অবসম **করিবেননা, সুকৃতির দারা আ**ঘাই আঘান বন্ধু ও দুযুতির দারা আআই আআর রিপু **क्र्यन। यथा। উक्रत्रनाधनाधान नाधान म**य-नामस्यद्भाः चारैञ्चवद्याञ्चात्नावस्त्रारेञ्चवदिश्रद्याः ञ्चनः ।

তাকত বৃজ্ঞানির উত্তর। পর্যাধর্ম থাদ্যাথা-দ্য শাজ্বিহিত হইয়াছে দেখ প্লাথে কুন্দ

(नकानिका बरा महास्वत्क मान कविता मा-স্ত্র নিম্বির পুরুক্ত পাতক হয় আর দেবতাকে ক্রির পুলানেতে ও পুণ্য হয় থেহেতু শাস্ত্রে বিধি আছে সেইশান্তে কহিতেছেন। ও দেবান্ পিতৃন্নমভ্চেচ থাদন্ মাসংন দোষভাক্। सन्ः। नाखा पूराजा नमामान श्राणिताहनाहः नामिश्वरित्र मृडोक्षामानः गुानिरनाखात्र अवह। **ण**नित्वरा नज्ञीज मरमा मा मानि कक्न,,। অর্থাৎ দেবতা পিতৃলোককে নিৰেদন করিয়া না শতোজন করিলে দোষ ভাগী হয়না। ও ভক্ষ্য প্রাণি সক লকে পুতিদিন ভোজন করিয়া তাহার ভোকাদোৰ পাগুহয়না বেছেভু বিবা তাই এককে ভক্ষক অপরকে ভক্ষ্য করিয়া সৃষ্টি कतिशाह्न ७व मण्मामा साहि कान मुका নিবেদন নাকরিয়া ভোজন করিবেনা। অতএব বিহিত না সাদিভোজনে ছাগলাদিরহননবাতি রেকে **না সের সম্ভাবনা হ**ইতে পারেনা বৈহেতু অপ্রেক্ষিত মৃত পশুখাদ্যনহে কিছু ধর্মসংস্কৃ

ेशनाकाम्की किकाश ज्ञानियार्ष्ट्रन एव यनित्त. দিত ভোলন ও পরম হর্ষেছেদন কেহকেহকরি। য়া থাকেন তাহার বিশেষ লিখেন নাই ছিনি কি ছাগল হ্ননকালে বিদ্যমান থাকিয়া নৃত্য কিম্বা উৎসাহ করিতে দেখিয়াছেন কি ভোজন কালে বসিয়া স্বস্বউপাসনার অনুসারে অনিবে-দিত ভোলন করিতে দৃষ্টি করিয়াছেন। দোবো-ল্লেখ করিবার জন্য ধর্মসংস্থাপনাকাশ্দী সত্য কে এককালেই জলাঞ্জলি দিয়াছেন ইহাতে আ-শুর্য্যকি যাঁছারা পর্মেশুর্কে জন্মনরণ চৌর্য্য পরদারা ভিমর্বণ ইত্যাদি দোষকে যথার্থ জা-নিয়া অপবাদ দিতে পারেন তাঁহারা যে কেবল অনিবে দিত ভোজনের অপবাদ মনুষ্যকে দিয়া काउ थाकन हेहा अ याङ्गापत्रविषय । नहानि-र्दाण। अस्वरमारकन विशासन व्यागरमारकन वा কলৌ ৷ আত্মতৃত্বঃ সুরেশানি লোক যাত্রাং विनिर्द्धहर । उद्घान याँ हात निर्देत खिनि नर्द ৰূগে বেদোক্ত বিধানে আরক লিযুগে বেদোক विश्व अप्रस्थाक विश्वाद त्यारमणाव निर्दार क्यादान । व्यक्त व्यक्त व्यक्त विश्व अप्याप्त निर्दार व्यक्त व्य

वर्षी अण्यानावाचिक मुझं । वर्षाल मुनं । मनं न साकात, वर्षात कि सरिया धनात , मुक्ति, वर्षा अण्यानावाचिक क्रिले स्वयाय सुनं वर्षे, वाकण्य अवित्व क्रिले क्रिले खार, क्रिले पूर्व वर्षेन स्वरूप स्थाप क्रिले स्वरूप क्रिले स्वरूप स्थाप आण्याचिक माने, ध्याप्त क्रिले स्थाप क्रिले रूप, आण्याच्याचिक्ति नवस्था क्रिले

(अर अन्तर्भ हरे, बर्न्यूक्त मील्य स्ट्रेन, अतन पुरम पृत् कान्य, क्लिक भागत भागत पृत राजना, विश्वाभ ७ कत्भना , ब्रुक्षेत्नाम, क्रिक्ट दसेन ४-भीवगाहिभी अवने कांग्रं, याश्राह वार्सिक काल्प (लाख्यं स्थान इंग्रे। (भराज्ञ इक्ट्रेश्मानंबर्धा-बी अनवस्थान अञ्चलामाहादी प्रशासने, काइन, (४, ट्रि-आस्वा, अनिरविष्ठ प्राप्त (अहन 3 अंत-शर्क (रुप्त कविंग शाब व्यव्हा कि उंदर कार्य दिवान्क अंत्रेंग अध्यक्ष कर्विक प्रमु-न कायुनार्दम । जन्मात अञ्चलका कि क्षांड, मर्नरमंत्र धालका कि, मलाई धूर्य ल रख प्रमान कर्त, किलाव वामरे, अनुगंभेंदगुर अधाने दश, ध्वत्रव आक्रिश्त ७ विहाद स्त्रात अभिक्र वास्त्र श्रामानी मुद्र संस्ट्रिक कि मुच्ड कि अभूड, भानत धूंश रहें शारा निर्माठ रा. काद्या क्रमीह लुगेगा दरंगरं कुर्यंड लापुर्क्ट अङ्ग्र अष्मार मैंज अंद्रकि मेंद्र व केंद्र श्रिकामा कर्याम,

क्ष्मि, **अव्यक्ति वणभिनास्त्रत गानुनार्या**रेना-व काम बाजिल इसे रहेमाए, विक्रु कालि (लाक न्याड लाह्न , जबर (कार क्षात्र) , आह -प्राहिक, उ रहांक्ट्रेब , आकी कवित्रा धूंगुजा-नामि कारिया थारू, स्मिन् प्रश्निकारी हो कामनाम वर्षात्कान वामनि प्रस्मान वर्मच्या आरमने का ने का उन्होंने श्रुणीय श्रुणीय श्रुणीय आरमने का ने का प्रस्तान प्रश्नात श्रुणीय श्रुणीय करत । अबर जिति जानशाकित निष्ठ्यक रहिराक बितर्डक, कांड्राव त्याण्यिक उ निर्लाके आन्भ अवन्दिवा, दिनम् श्रावति, दिनि कवितक, ওত্যৰ <del>পৰ্যৰ সন্</del>যালয়কাচিক্স, ১ত্যেক কথা-क्षा भियाद्य, क क्षक्रवाभावनी भश्यमा, भिगास्त्र, बाहा कार्यक वामानाव प्रशासकारे व्यक्तम कविक्षम । वश्वकः व्यक्त व्यक्तानिः रिम्माम्मके धार्विस्थ रूप, क्यू (व २ क्स् रिम्माम्मके धार्विस्थ रूप, क्यू क्स क्सी जिस् मित्राव अभि **श्रेमू अर्थक विवास अन्यारम्**अस्

उत्पव मिश्राह्मा, अञ्चलको अविकास वर्षाम क्रिक्ट ने विवास जिल्हार केंबिंग क्री मुक्त कारने अनुद्धिम्दर् छ ए भन रहाम अश्व नित् कर्पातार्थ मुख्यन् क्रांकु क्रांकु जुर्क क्रेजिकिस्पर्ध साध्ये परेक्सानु क्रिक्ने रहेरवर्षे । स्थार । स्थित्रिक् भवास्त्रकाः · निर्देशिवड् क्यूनि । धारिक निर्देश हिल्आनामार्ज्ञ बरी सद् । श्रेष्ट्र क्ष्यां: तुर्वानीया , ज्ञित्रभूता श्राम सिखं: । सार्वाचन-व्हिजार विशेषा, द्वा**मामुक्ति अवाधस्ट**्र ट्राकील क्ष्मीलक कार विद्या र देवता है, - वरे अकत कंत्रारि अंतु रिंग्डी कंत्रिकंत, क्ष्मामा कर्ना कवितक न, भर्ते, मेरे बार्का क्रावंगहरून 1 नवर कारका वाकने, म्रद्धिक क्षेत्रकार किया क्षेत्रका वाम क्षेत्रका আসদ্বাদেও বেদ্রিহিছভুগ স্থিত্সা यनविषय मा । अद्देशमूच इस्मि व्यविष रिष्मा বিষয় কি, কিছু অবিবী হিচ্পার পিথেবে अकाकेर पुरुक्तिमा भाषि व साजि अहिल অভ্যৰ বিদেধ্য মণ্ট্ৰতা ও মহাৰাশ ক্ষৰিয়া, ত্ৰাহাৰ

क्रिके क्रिके जिलाह्न मिरान करेंग रिज्यान न्त्र अञ्चल अर्जनन विदाय क्ष्मिक्टिय । ह्या में माहिका। क्लिआ टोड्य म वर्क्का विकित्त्रिका छ वाहाभी। द्राक्षातिः भा नवर्जना थङ (अभाविका धठाः। द्याचीत् किरवेश कि व्यक्ति क्लार, क्षित्रार कार्वित्रकता, त्वेविष्टिक्ता राम्नुलि कर्छगा रेंग, ज्यानि त्म ब्रह्मी, दिल्लाय वाकालेगा, (वेच चिष्पात कांत्रखन क, व्यव्ह्यू , जांशका, आक्रि, अभाव क्लाम मिलूमे धांडे, करहम, त्र्यांक्वाकि अर्क नाम्नेड व्यक्तिम प्रमुख्ने नवर सम्मान मास्ति माम्मानार ते व डिन्मान विक्रिक्ट क्रिकेट विकास बाकार्य मारक बाकार्य शांठ गर, कि इथात कातम, ये ग्रार्काड़ वारुआतं अवाने मासने अकास्त्री, यदे वर्ष त्रें वंग्रं बक्क के कि । महाकाम मण्डिया। वाभक्षाक्षा विकास्त्री गुक्सिकी वा भंगा अवेड । (अन प्रमु: अभूवित म्यूक्ल्ं हवेक्छाला। वर्शित 🖟 वान स्रम्ह, जन्महांबी

प्राक्ति व कानिश्वक थक कि प्राविविद्धिकः)

· Grin अनुवास क्रम्, अवर्भनिक प्रातिक , **७ विका लॉक** गुकि, र्रशंग, नशूरिंगिंगीम, बर्गवस्था भा, क्ट्रि, ता भारम चामिमारनंतुं मावनम्बद्धा इंग्र' एम्ब्सिस वर्षेकल्लां व्याष्ट्रक कर्षिया। जर्ड मक्प माओं दुम्मीर विव्हर अक्तीय, अभवकीत्वत हीदन, अरे केमित्र -मिलाव अपाउ नार्ज निर्देश कावंश चाहाता. द्रमवमदी अस्वकार्य अनुरक्षम करवम, त्म अमित्र भामिक किलाव आक मधाप्रवार्ट व्यादेवर्ड श्रुवानं, क्लिल्ड्या । श्राप्त्वाते । दुख्द मक्र । **र्वताम स्म ३३ दिश्मक्ष** डाल भरूल एउंगिक । बीवनार्थ शिक्ष शास्त्र द्रात्में कार्क अंगः। साम्भूभं स्वाद्ध्याक्त क्षित्रानुत्र आशंचत । राष्ट्रीक क्षीर्यमह लाक मधाः कोर्डेडसम्बाः। वर्कार मंद्रे स्ट्रिलाक नारांग, वानाम कलका बम्हर किया क्रिंग्डिंग (गांबरान क्रिंग्स धमभन्न सम अर्थित स्रोधा आश्राम्बेद निम्न বৰ কৰে, সে ব্যাৰিকা কামসূত্ৰ 🗯 गानु आमं वाकार नवकारक

काम, अनुमेशक नवक, अहेनका स्वाधाः अभा-(को समने कर्षा, नक लाई मान्यंत हिमान श्रीम ब्लानिक शाही क्या वर्षात् श्रुव इ दरक्त भान करत अवर जारांगा, वावमा ७ व्यक्तामुक्ष स्रहेश धरा निक धन्न स्था, की दिवा अर्क्का पर्यात करता येक पुरविक् कार्किट न्यार्क। एमार्का अरुक्रभायांत हीविक रेखि स्थानवः। यहारूक वर्षाट् स्थानि उत्सकी नक्षेत्र अवन। वर्षात् ता नामिने शीव, एपाए स्मेकनाअकम्भान काम स्थाप रह करंवे अंद्रांव ३ शिक्षात्रींव महर्षेद्रक रूक बदलंब अमूब्स बास. इनं । चढं हास**्टिस**म् মহামায়, কর্মেন, যে, বিশ্বসিক্স্পাসনাবগক্ষিরা, अंदरम्बर्केट रहीर्य आविषायी लाखव अभवाम मिया शास्त्र, न वानि वान्त्र्यी, कावने, ज्ञेंश्राहरे, अमेवान आधाराम श्रीकृष्काश्रक व्यागामिका मिना मिन व्यानविक एएक , राजन्यक्त उ लाक्नाविक, वित्रा क्रिकास बार्त विक्रम डेमशाम-करिंगा क्यामिलक्ष्म, नक्ष्यन व्यक्ति वर्षामण्

श्रामनाव्यक्ति पिरुवः श्रिक्तिवारमास्मास्य जन टकाम दुलाग धर्मन नाकाकी काक्षी यह कथ-বাদ দিতেখেন, ভাল, এও এতাও আম্বাদেই বিধ रं, व्याभाषाम, 🗗 जाराविधालां पूर्वाकपूर रहता <del>ॅ</del>ंबिक्स इरेडिव्ह , (यरिंद्ध , ठाहाबा , श्वाधयुव त्रेरिक व्यवं एम्नोबारमात्रीत तकप् वनना-र्श्वति कविल्यम्,। यस् चीक्रासम् समन लंबन कि सकाशि लाजाम बन्ध गण, (यदिः) **७**जाम् जी अवस्य किल्हा । यथाः । बीर्जियानुमधा वस्त्रिसियानीजानि संभानिज्य क्षार्क्क्स । जानाहरू (यम अर्ववानिनञ्च (ब्रिक्के श्व-স্তপ। তর্মাৎ শ্রীতেগবান্ কবিহুন্তের, হে অর্জুন , (श्रामांव ३ लामांव यर बाम धेंट इंड्रांगर्ड क्रिय श्रीम भागांव क्यार्निश रंशेंग वै**स् वेटार** ठावि विभ्रष्ठ, धामि, प्राभा विष्ठ, अकावेंने, लायार्व तरस्य आवेष् अं। चड्ड ध्याद्व ख्रीन्धवः प्रयं सम्म रवाषु उद्घटक । 💣 सीउमीद्रसैनवा र्रज्ञ क्षिक छा भ्रम्भा । क्रभाम भावशायी रे के





শোচিভ মুহনি । অথাৎ ছাত ব্যক্তির মৃত্যু ও মৃত ব্যক্তির জন্ম অবশ্যই হয়, হেঅজ্রু ন, অ• ত এব অবশ্য ভবিতব্যবিষয়ে শোকের বিষয় कि। এই শ্লোকে জন্ম इहेला है मृन्गर्य, हैरा অবধারিত হুইয়াছে। বত্তভঃ। অবিনাশিত চ **দ্বিদ্ধি যেন সর্বনিদং ততং ৷** বিনাশনব্যল্লন ৭০ मा नक्षिए कर्जु सर्वि । नार् भुकामः नर्तरा र्यात्रमाशाममावृजः । मृरारश्च नाजिजानाजि লোকোমামজমব্যয়ং। অর্থাৎ যেবুক্ষকভ্ঞি, **এই সকল জগৎ বিস্তৃত হইয়াছে,** ভাঁহাকে, অবিনাশি জানহ, অক্ষয় যেবুক্ষ, ভাঁহার বিনা-শ করিতে কেহু যোগ্য নহেন। আমি, সকলের নিকটে পুকাশ নহি অর্থাৎ ভক্তের নিকটেই পু-কাশ পাই, জন্মমৃত্যুর্হিত সামাকে যোগ না-য়াতে আৰৃত মূঢলোক বিশেষ ৰূপে ভাৰেনা, এই ভগবদুগীতার শ্লোকে শ্রীভগবানের জম্ম দৃ-ভুরোহিত্য বোধ হইতেছে। এনং বিষ্ণু পুরাণে

বেংগ মায়ার পুতি শ্রীভগবদ্বাক্য। <mark>যথা পু।-</mark> বৃট্ কালেচ নভলি **ক্ঞাইম**্যা**॰ মহানিশি ।উৎ-**> পৎ স্যামি নবম্যাঞ্ পুস্তিং ব্মবাস্পাসি। অর্থাৎ বর্ষাকালে শাবে নামে কৃষণষ্টমীতে ন-হানিশায় আনি উৎপন্ন হইব, তুমি নবমীতে জন্ম গ্রহণ করিবে। অগন্ত্য সংহিতায়াং। চৈ-ত্রেনাসি নবম্যাভু জাতোরামঃ ষ্য়°্ছরি**ঃ। অ**-র্থাৎ চৈত্রমানে শুক্লনবনীতে স্বয়ণ হরি,রাম র-পে জাত হইয়াছিলেন । এই বিষ্ণু পুরাণের ও অগন্ত্য সংখিতার ব্যনে প্রনেশুরের জন্ম শুব্ণ হইতেছে। নৱং নহাভারতে ও রা**মায়ণে ভাহ**া-র মত্যুর বিবরণ ওংদখিতে হি ৷ অ**ত**এব **পর**নে শুরের জন্ম মৃত্যু পর্পুয়োগ,লোকের ব্যাবহা-রিক নাত্র, কি ভূ:বাস্তব নহে, ফলতঃ পর্নেশ্রে, র আবিভাব ও **তিরো**তারকেই **লোকে ছন্ম মৃ**• बूर प्रस्था वरवशाबकतान, रयभन, अर्बनाविएर. নান দূষ্যের যে দর্শন ও অদর্শনতাছাকেই উনয় ূত খন্তক(হ্রা ব্য**ব্ছার করা**ধায়। **খতএব অ-**

গন্ত্য সংহিতায়া। আবিরাসীৎ স ক্রয়া কৌ भ ল্যায়াণপরঃ পুমান । অর্থাৎ সেই পরম পুরুষ, क्लजःभद्रायभूद्र, कोमनगर्ड क्लात महिन আবিভূত হইয়াছিলেন। নার্কণ্ডের পুরাণে।দে বানা॰কার্য্য সিদ্ধ্যর্থ মাবির্ভবতি সাবদা । উণ্-পন্নেতিতদালোকে সানিত্যাপ্যভিৰ্ধীয়তে। ম-র্থাৎ সেইভগবতী, যে কংলে দেবগণের কার্য্যসি-দ্ব্যর্থ আবিভূতি হয়েন, দেই কালে সেই ভ-গ্ৰতীনিত্যা হুইলেও ভাঁহাকে লোক,উংপন্না क्रिया करहन । उत्थजूरक्षा उनुकानी वज्वाडः ৰ্হিতা নৃপ। অর্থাৎ হে নৃপ, সেই ভদুকালী ভ প্রবর্তী যোগ মাম্লা, দেবগণকে অভীষ্টবর পুদা-ন করিয়া অন্তর্হিতা হইয়াছিলেন। স্তিঃ। উদয়ান্ত মনাখ্য°ছি দর্শনাদর্শন॰ রবেঃ।অর্থাৎ नर्वना विन्त्रभान इविद्यासम्बन्ध अन्तर्भन তাহার নাম, উদয় ও অস্ত। ইহাতেও যদি ঐ ব্যক্ষ কর্ত্তার ব্যক্ষের সর্বাঙ্গ ভঙ্গ নাহয়, তবে তাঁহাকেই জিজ্ঞাসা করি, যে, তিনি, নন্য্তের

জন্ম মূলু কিছিবা থাকেন কি না? পরমার্থবিবে-চনায় মনুষ্যেরো জন্ম মৃত্যু কহা যায়না। অত-এব অজ্ঞানের পুতি জ্রীভগবদ্বাক্য। নদ্ধায়তে নমুয়তে বা কদাচিমায় • ভূত্বা ভবিতাবা নভূয় অজো নিত্যঃ শাশুতোৎয় পুরাণো নহন্যতে হ नाम त्न भावीरत । वाजा कि जी की नियथा विश् য় নবানি পৃহ্লাতি নঙ্গোৎপরাণি ৷ তথাশরীরাণি নিহায় জীৰ্ণান্যন্যানি সু•্যাতি নবানি দে**হী। অ**• র্থাৎ এই আত্মা, নিত্য উৎপত্তি রহিত ওআদি-পুক্ষ, অতএব তেহঁ, নাজন্মেন ও নামরেন,নারু ম্মিয়াছেন ও নান্ধমিবেন এব**ণ শরীরনাশে** তাঁ-হার নাশ হয়না, বেমন, মনুষ্য, পুরাতন বসন ত্যাগ করিয়া নৃত্ন বন্ত্র পরীধান করে, তেম্ন, আম্মা, জীর্ণ দেহ পরিত্যাগ করিয়া অন্য দেহে गमन करतन। किरकोखक, नगदा खवानि महान-য়ের কর্মকাণ্ড লোপের সময়ে জ্ঞান কাণ্ডে নি**-**র্তর, আর অভক্ষ্য ভক্ষণাদির সময়ে আগমে নি-র্ভা, কথন তাক্ততত্ত্বজানী, কথনবা ভাক্তবামান চারী, বুঝিবা ধর্ম সংস্থাপনাকাজ্যি সকলকেও তেঁহ, সেই পুকার কৌন্তকাবিষ্ট ও অবিবেচক শ্রেষ্ঠ করেন, যেমন, এক মূর্থ চন্তর মনুষ্য, প-ভিত্তনগুলীর মধ্যে উপস্থিত হইয়া পণ্ডিত,ম গুলীমণ্ডিত সভাপুবিষ্ট নিমিন্ত বিশিষ্টবোধে প.

**ণ্ডিতবর্গ কর্ত্ ক, ভিমিন্কোন্** বিদ্যাব্যবসায় কর এইপুকার জিজ্ঞাসিতহইলে আপাততঃ আপ নার মূর্থতা পুকাশ ভয়ে চত্তরতাপুকাশ করি লেন, তদেশেদ। শনিকের বাহুল্য পুযুক্ত ক-হিলেন,যে, আমি,মৃতি শাস্ত্র ব্যবসায়ী,তাহা-তে লজ্জিত হইয়া তদেশে বেদান্তের পুচরদ্রুপ পুচার নাথাকাতে ধূর্ততা পুকাশ করিলেন, যে আনি বেদান্তী, তাহাতেও তিরশুত হইয়া পলায়নের উপক্রমে কহিলেন যে, আমি, তত্ত্ব শাস্ত্র ব্যবনায় করিয়া থাকি, তাহাতেও অপ-মানিত হইয়া অগত্যা অধোমস্তকে **অতিক**ষ্টে কৃ• ক্ষুখে কহিলেন, আজ্ঞা আমি, কৃষি ক্মাক-রিয়া থাকি, এই বাক্য শুরণ করিয়াপঙিত ব-্

র্গেরা,কৌত্তকাবিষ্টেমুক্তকণ্ঠেপুচণ্ড হাস্যত উপ-হাস্য করিয়া ছিলেন,যে, ভাম্যকৃষি কর্মের উপ. যুক্ত পাত্র বট, তাহা বাক্যের ও আকারের দা-রাইবোধ হইতেছে, শরীরটা ও বিলক্ষণ জ্ঞ্চ পুঞ্চ দেথিতেছি, তুনি, বুঝি ক্ষিকমে অতিউৎক্ষ্ট **रुह्दा, बका मममा। मूकत्यः भवीका,** अर्थाए अ-কন্মস্যাতেই সুকবিরপরীক্ষা হয়, সামরা, জ বিবেচনা পুযুক্ত তোনার বিন্যা ব্রাহ্মণ্য বোধ না করিয়া তোমাকে এপুশ করিয়াছিলাল, কিন্তু, আমারদিণের সমুচিত ফল হইয়াছে একণে আপনি, আপনার কর্মেপুস্থান কক্ন্ কিছ ন-নে করিবেননা, সেযাহা হউক, তাঁহাকে জিজ্ঞানা করি, যে, ভাঁহার অপূর্ব ধর্মসংহিতাতে লিখি-ত, বেদোক্তেনবিধানেন ইত্যাদি, নহানিস্থাণ বচনে, লোক যাত্রাশবে কেবলমধ্যমাণনভোজ-নাদি, এই অর্থইকি, মহাদেব, ভাঁহার কাণে ২ क्षियाष्ट्रन? व्यात्र वे वहत्न द्धानिष्टिशत सून्दर র্মানুসারে নিবেদিত মাণ্সাদি ভোজনইবাকি- ৰূপে পুৰণ্ড হয়,এবং দৃষ্ উপাসনাশংকুইবা তাঁ-হার অভিপ্রেতকি, যদি পঞ্চদেবতার মধ্যে দে-বতাবিশেষের উপাসনাহয়, তবে কেবল ভো-জন কালেই ভাঁহার মরণ পুরুক্ত সুতরা ভেঁহ, ভাক্ত ক্মির অন্তঃ পুবিষ্ট হইবেন, যদি বুন্ধো-পাসনাই হয়, তবে বুক্সের উদেশে পশুঘাতের ও নিবেদনের বিধি ও স্ত্রাদি কোন্ শাঙ্গে नि থিত আছে, তাহা, জানিতেইচ্যুকরি?। যাঁহা-त्रा, मृगानाहिकक् क म्हे किञ्चा यरकान भुकारत দুষ্ট, অর্থাৎ নাদেবতার ইষ্ট্র,নাবিশিষ্টের অভীষ্ট্র, এবং অতিকৃষাক কিয়া কাণব্যক অথবা অ-তি শিশু, ছাপ**ন স**কলকে অত্যন্ন নৃল্যে জয়ক: গ্রিয়া ছূলা**জ হইবার আশায় ত**াহার ্মধ্যে-কাছারোবা পুৰুষাঙ্ক হানি পূর্বক উত্তন আহা-রাদির দারা পুতি পালন করতঃপুতিনিয়ত সু• নিরীক্ষণ ও সর্বাঙ্গে অফুলির দারা ভোজনের উপযুক্তা নুপযুক্ত ত্বারীক্ষণ করিয়া যৎকালে বিলক্ষণ ছাই পুষ্টাঙ্ক দর্শন করেন, তৎকালে প্

त्रमहर्षम्वकृ वाक्षव वर्णतमहिल मुह्रस्य वहा পুহারে ছেদনানন্তর স্থোদর পূরণ করিয়া থাকে -ন, ভাঁহারা, যদি কোন গৌরাকো পাসককে रिनवाए (क्वल जुइएड) मध्या वध क्विए मर्भन করিয়া আপনাকে উৎকৃষ্ট তাহাকে অপকৃষ্ট, বোধকরেন,তবে তাহার মধ্যস্থকরা নগরা ভবা-নি নহাশয়কেই, উচিত হয়,বেহেত্, বোগ্য व्यक्तिकहे, लाकि, याग्य क्या नियुक्त कदि-যাথাকেন,ভাকতভুজ্ঞানি মহাশয়,ইহারকো-ন্ বিষয়ে বঞ্জিত, সকল বিষয়েই পণ্ডিত। অ-ত এব শাস্ত্রে কছেন। তদ্ধি জানস্তি তদ্দিঃ। অ-र्थाए (यत्नाक, (यदिष्या विज्ञ, मिहेन्नाक है, সেবিষয়ের বিশেষ মর্মজ্ঞ হয়েনা অতএব বিষয় বিশেষে মধ্যস্থ বিশেষ, নারদওকহিয়াছেন।য-था। (वन्ता श्रुवाना याखव कामूका छन्गृहा-ষিতাঃ ৷ তৎসমুত্ত্বেষু কার্য্যেষু নির্ণয়ং, সংশয়ে বিদুঃ। অর্থাৎ বেশ্যাদিগের বিবাদে সংশয় উপ-ছ্রিত হইলে তাহারাইনির্ণয়করিবেক, বাহার',

পূধানা ২বেশ্যা ওবেশ্যা দিগের গৃহবাসী পু-ধান ২ কামুক । ধর্মসংস্থাপনাকাঙিকরা, এস-কল বিষয়ে বঞ্চিত, একারণ ভাঁছারদিণের নি-करि অতি निन्ति ७, ० हे भुत झान वहे शुर्थ-না, যে, তাঁহারদিগের নিকটে ধর্মসংস্থাপনা-কাভিদদিয়ে পুশংসিত না হইতে হয়, অত এব ভাক্তভ্জানি মহাশ্যেরা, ধর্মান•স্থাপ-নাকাভিক্ষদিশ্বে, অপূর্ব অধুমা ইত্যাদি কত ২ ব্যক্তোক্তি ও শ্লেষোক্তি করেন। এবং ফাঁছারা, পুতি পালনাদির দারা বিশাস জন্মাইয়া পদ্ধাৎ সেই পশুকে বধ করেন,ভাঁহারদিগের পুতি 🕮 মস্ভাগবত, কহিতেছেন। বথা। যেপ্রনেবং বি-দোংসভঃ তব্ধাঃ সদভিমানিনঃ। পশূন্ पু.ছ-ভি বিশুব্ধাঃ প্রেত্য খাদন্তি তেচতান্ । অর্থাৎ যাহাল্লা, এই পূর্বোক্ত শাস্ত্র নাজানে এবং অ-সাধু, অথচ আমরা সাধু এই অভিনান করে, এবং স্তব্ধ অর্থাৎকার্য্যাকার্য্য বিবেচনারহিত,

আর পুতিপালনাদির দারা বিশৃন্ত সে পাষ্ঠে-রা, সেই পুটি পালিত পশুর যেপুকারে হিংসা করে, সেই গশু, পরলোকে সেই পাষও দিশে, সেই পুকারে হিংসাকরিয়াভোজন করে ৷পরস্তু৽ **ঁঅনিবেদ্য নভুঞ্জীত মৎস্যমাংসাদি কঞ্চন,**, 1 এবচনে মৎসানাপাদি তাবৎদুব্যেরি স্বতঃ কি য়া পরতঃ সামান্যতঃ দেবতাকে জনিবেদিত ভোজনের নিষেধ প্রাণ্ড হইতেছে, অন্যথা, অ-ন্যে, অন্যের নিবেদিত দুব্য এবং এক দেবতা-র উপাদক,দেবতান্তরের পুদাদ, ভোমন করি-তে পারেননা,অতএব অন বিঠা পয়ো নূত্র বং দ্বিকা রনিবেদিত •,, ।এইবচনে সানান্যতঃ স্ববি-শেষে অনিবেদিত অমজলে মল মূত্রত্ব কীর্ত্তনক প নিন্দাশুবণ হইতেছে, এছানে বিফুশটে যথা-শ্রুত অর্থকরা যায়না, যেছেতু, শক্তি পুতৃতিকে নিবেদিত দুবেগও নিন্দা প্রাণ্ডি হয়, এবং স্বস্থ ইষ্ট দেবতাও কহা বায়না, বেহেতু, দেবতাভরকে ্ৰিবেদিত দুৰ্যবৈগ্ৰ তনিন্দা পুৰান্ত পুযুক্ত অনেগ্ৰ

পাসকের অন্য দেবতার পুসান ভোজনে বাধা জন্মে, অত্তৰৰ এবচনে বিক্শংকু দেবতানাত্ৰে তাৎপর্য্য,ইস্থাতে কোন দোষ সম্ভাবনা নাই,অ-ত এব পুৰুষের রাগ প্রান্ত, যে, নৎস্যমাণসাদি ভোজন, তাহাতে পুক্ষের রাগাভাবে নিবৃত্তি, ও রাগদত্ত্বে পুবৃত্তি জন্মে, যে ব্যক্তির রাগ পু-যুক্ত নংস্থানাদি ভোজনে পুৰ্ত্তি হয়, সে ব্যক্তি,স্বায় ইষ্টদেবতার পুতি ভাঁহার ভক্তি শু• দ্বার আধিক্য পুযুক্ত সূতরা•সেই ইপ্তদেবতাকেই ित्तिम् कित्रिया ভाषान क्षान, यपि सीय हें। দৈবতাকে অনিবেদ্য যেদুব্য, তাহাতে পুবৃত্তি হয়, তবে মৃতঃ কিম্বাপরতঃ দেবতান্তরের নিবে-দিত করিয়া ভোজনে তাঁহার বাধাকি। যে হেন্ত দেবতাকে অনিবেদিত দুব্যের ভোজনেই শান্ত্রী-য় নিষেব প্রাণ্ট হইতেছে।

ভাক্ত ব্জ্ঞানির উত্তর। মং সরতাকি দাক্ ণ দুঃখের কারণ হয়। লোকে কেনথায় কেন সু-ংশ কাল থাপন করে ইছাই মং সরের মনে স্ব- দা উদয়হইয়া তালাকেকেশদেয় ৷ মা॰সভোজন
ন শান্তে অবিহিত ইহা যদি না কহিতে পারে
অন্ততও লোকের নিন্দা করিবারউদেশে কহিবেক যে নিবেদন করিয়া খায় না কিয়া আচহনে
অবিক জল কি অল্পজল লইয়াছিল কিন্তু নংসং
রের তুপ্তির নিমিতে কেআপন শান্ত বিহিত আহার ও পুরর্ব নিমিতি তোগ পরিত্যাগ করে
ইহাতে মংসরের অদ্ঠে যে দুঃখ তাহা কে নিবারণ করিতে পারিবেক ইতি ॥

ধর্মনংখ্যাপনাকাশ্দির পুর্ এতর । এখানে কি ভাকতভ্জ্ঞানী, কিধর্মসংখ্যাপনাকাশ্দী, উভ্রেরি ভ্রান্তি, ধর্মসংখ্যাপনাকাশ্দির মজনতাতে তাকতভ্জ্ঞানির মং সরতার ভ্রম, এবং ভাক্ত, তত্ত্জানির প্রারবধ কর্মের ভোগে ধর্ম, সংখ্যানাকাশ্দির ঐছিকভোগের ভ্রম, সভ্জনের এই স্ভাব, যে, সদৃংশ্বাতব্যক্তি সকলেক অসংক্রে অসং সঙ্গে অসং পথ গভ্রমে পুরুত্ত দেখিলে তাঁহারদিং ফ্রেভা্রা, সদুপ্

দৈশ সমুক্তিও সংক্থার দারা নিবৃত্ত করান, তাহাতেও যদি না হয়,তবে অন্ততঃ গ্রিয়তং . সন ভয়পুদর্শন পূরস্কার ও তিরস্কারও করিয়া থাকেন, এবং তাঁছারদিগের নিমিত্ত সর্হদা অ-স্তঃকরণে অভ্যস্তল্লেশ ও পান, চিন্তাও করেন, যে, কি পুকারে এই সংসম্ভানেরা,অসদূত্ত হই তে নিবৃত্ত হইয়া সমূত্ত হইবেন, তাহাতেই দু-र्ज्जात्वताः निकारने क्जात्मात्र अला अ मञ्जन निरागत भोक्षत्रात्क (मोर्क्कन) कतिया वरायगा करत्न, अ ৰানাপুকার ব্যক্ষ বিদ্রপত করিয়া থাকেন, এবং অন্তঃকরণে অবিরত এই চিস্তাওকরেন,যে এমেন **दिन कि इत्तर्य, धर्मा धर्म थान्। धान्। अ**नद्यान ম্যবিচার থাবে, আমরা, নিমুণ্টকে স্ড্রোলারে मृद्रुक्त भूर्वक मृत्र अजिलाय जायन कतिव, यस-ন, ভাঙখোরেরা, পার্থনাকরে, যে,মাগঙ্গে ভ্র-মি যদি হও ভঙ্কে, তবে ডুবুকি ডুবুকি যাঁও চু-মুকি চুদুকি খাঁও। এবং, তন্মরেরাও পারদা-হিবেহাও পার্থনা করিয়া থাকে, যে,কবে অরা- कक बाक्षा राव, (य मृद्धनर होर्य) भावनाया कः तिव,यि मूर्ष्टेत मत्नाजिलाव नम्मूर्ग इहेज, जत জগতের কিং অসম্ভব অনস্থল অসম্ভাবিত রহিং क मुश्डेत नातात्र अभूने इश्वा, मनलाभ अ मृत हर श्रना, (यमन, प्रतिष्मुत मत्नात्रंथ अमन्छा भः। दः র্ঞ্জ আশাবায়ুতে মনের আগুণ দ্ভিণ হ্য়, প্ন मार्किक्षरकान भावत्व कर्षाञाग कविद्यारमः है अशिए उरे ५क रहेया जी नामस्तर करत्न। क्र হ্, কাহারো প্রারব্ধ কর্মের ভোগ কলচ নিযা-রণ করিতে পারেমনা, তাহার পুত্রক পুন্মণঃ **কীট ভক্ষকপক্ষী, গবাদি ও শ্**কর, ইহার। উ-ক্তম আহারের দারা পৃহস্তের পৃহে পুতি-পালিত হইলেওপুরেরের খণে পতর, উচ্টি **পত্ৰ,ও নল নূত্ৰ ভক্ষণে ব্যাকুল হয়,ভা** জতন্ত্-**জ্ঞানিদিগেরোম্দ্রমা•সাদিভোজন,নেইপু**কার পারব্ধ কমেরভোগ, অত এব তাঁহারা, দেকর্ম ভোগ কি পুকায়েত্যাগ করিবেন,সজ্জনদিগের-সদুপদেশেবা,কি করিতে,পারে,ধর্মসংস্থাপনা-

কাঙিকরা, প্রেভাভিপুযুক্ত এনমা অজ্ঞাত ছিলেন, এক্ষণে ভাঁছারদিগের সেতুম দ্র হই-ग्नार, महामा<sup>र</sup>नाहि कहर्या ভোগই ভাক-তত্ত্বজ্ঞানি দিগের প্রারব্ধ ভোগের উপযুক্ত বে ব্যক্তি, বে গুকার হয়,তাহার পারব্ব ভে:-গও সেই পুকার,অতএব উত্তমাধ্ম মধ্যমতে-দে ত্রিবিধ পুকার ভোগ, ভগবদ্গীতা, কছেন। **যথা।** আহারস্থাি সর্বান ত্রিবিধাভবতি প্রি-शः । यद्धः उप उपा मान॰ (ভवा॰रভम् भिन॰म्-गृ। शासुःमञ्ज वनात्त्रामः मूथ श्रीरं**७** विवर्षः -নাঃ। রস্তঃরিক্টাছিরাছ্দ্রা আহারাঃ মাত্বি-क श्रियाः। कर्म वावशावृत्य जीक् कक् विमाहिः मः। याश्राता ताकनत्माठी मृथ्य (शाकागत गुः দাঃ ৷ যাত্যাম• গতরুম• পৃতি পর্ত্যিতঞ্জ ২**ং** 🗀 । উচ্ট্রি নপিচানেধ্য ভোন্ধনং তামস প্রিরং। অর্থাৎ সাত্ত্বিক রাজনিক ও তামনিক এই তিন পুকার মনুষ্যের আহারওতিন পুকার, এবং য-ক্ত তপস্যা ও দান, ইহাও তিন পুকার হয়,

তাহার ভেদ শুবণ কর,যে ভোগ,ভোক্তার আ য়ুঃউৎসাহ বল আরোগ্য সূথ ও প্রীতির বর্দ্ধ -ক এব মধুর সুঞ্জ ছিরওছদ্যত হয়, সেই ভো প সাত্তিকের প্রিয়,তাহার নাম সাত্ত্বিক এবণকট্ট অনু লবন অভ্যুক্ত অতিভীক্ষু অতিৰূক্ষ কিয়া শ র্বপাদিজাত, যে ভোগ,সেই ভোগ রাজস প্রিয়ন ভাহার ৰাম রাজসিক, ভাহাতে দুঃথ শোক ওরোগ জন্ম। পুহরাতীত বিরম দুর্গদ্ধপর্যুবি-ত উদ্ভि অথবা অস্পা, এই পুকার यেकम्य र, ভোগ সেই তামস দিগের প্রিয়, তাহার নাম তামসিক ইতি। 🐠 ।

বীনজ্ম সি'ছুপেনাক্টিক বিরচিতে পাবওপীডন নামকপুত্যন্তরেদুব্দ নিহ্দয় বিদারণোনামত্তী↓
য়োলাসঃ সমাওঃ ।

ধ্মান ভাপনাকা ভিন্নর চতুর্থ পুশঃ।
আনেক বিশিষ্ট সন্তান, যৌবন ধন পুতুত্ব অবি
বেক্তা পুযুক্ত কুন স্বৰ্গ গুল্ত হুইয়া লোকলজ্জী

ধর্ম ভন্ন পরিভগ্রা করিয়া বৃথা কেশচে, দন, সুর। পান, জবন্যাদি গমনে পুবৃত্ত হইয়াহেন, ইহার শাসন ব্য**ভিরেকে এই সকল দু**ম্বর্মের উত্তরে,তু• র বৃদ্ধি হইতেছে,তত্তৎকর্মানুগাত্ নহাশয় দি গের কালিকাপুরাণমৎ স্পুরাণমনুবচনানুসারে কিবক্তব্য। যথা। গঙ্গায়াণভাস্কল্লেভে পিত্রো শু মরণং বিনা। বৃথাছিনতিয়ঃ কেশান্তমান্ত বু স্বাতকং। তথাচ,যো ব্ৰাহ্মণোদ্য পুভূতীহ किन्द (माहार मुद्रा: शाम/िं मन्दर्किः ! তপোপহা বুক্ষহাটেব সম্যাদম্মিন্ লোকে গর্হিন তঃস্যাৎ পরেচ। অপিচ, যশুকারগত বুক্ষন-দ্যেনাপ্লাব্যতে স্কৃৎ। তস্যব্যপৈতি বুণন্ধণ্যং मृ দুৰ্ঞ্ সগচুতি। তথাচ, চাণ্ডালান্ত্যন্তি য়োগত্বা ভূক্তাচ পুতি গৃহ্চ। পতত্যজ্ঞানতো বিপ্রো জ্ঞান ना९ मामाजु गहुछि। याखाः द्विष्टवनाम्य दे-ভিৰুল্ক ভউঃ।

কপট বুজাচারী মেচ্যুবশধারী ভাক্রামাচা-

রী মহাশয়, আপনারদিণের বৃথা কেশচেদ্বন,
সূরাপান, জবনী গমন, সংপুতি সৃষ্ণ সৃষ্থে সৃহল্তে ব্যক্ত করিয়া কেবল আপনারদিণের জবনাকারত্ব, মদ্যপত্ব,ও জবনজাতিত্ব পুকাশকরিতেত্বেন,ইয়দিনে এক্ষণে ধর্মের গুণে বাক্যমনেরুত্বনিক্য দূর হইয়া তাহার ঐক্য হইতেহে,
আর ও হইবেক, কুন্দ্ধজ্ঞের মুথে কাঠের বক্ষ
ভাবের অভাব কত কাল হয়।

ভাজত ভ্জানির উত্তর। বৌবন ধন পুভূষ্ব অবিবেকতা পুযুক্ত লজা ও ধর্ম ভয় পরিত্যাল্য করিয়া মাঁহারা বৃথাকেশচেদুন সুরাপান যবলাদি গনন করেন তাঁহারা রিক্জাকারী অতএব শাসনাহ অবশ্য হয়েন নেইজপ বাঁহাদের পিতা বিদ্যান আছেন এনিনিত ধনও পুভূতা নাইকেবল বৌবন শুমবিবেকতাপুযুক্তধর্মকে ভূদ্ধ করিয়া পৃথাকেশচেদ্দন সুরাপান ও যবন্যাদি গনন করেন তাঁহায়। ৪ শাসন বোগ্য হয়েন। ত্থবা কেশে অভ্যান্ত কলপের ছোপ পুয়

পুত্ত হদেনও সম্বিদা যাহা সুরাভল্য হ্য তাহারপান এবং সৃত্ত্যধ্বন দ্রী ও চঙালিনী নেশ্যা
ভোগকরেন সেংব্যক্তিও বিক্স্ক্রারীও শাসনাইহয়েন । যেহেতু পিতা অবিদ্যাননেধন ও প্ভূহ এই দুই অধিক সহকারী হইলে তাঁহাদের
কিপর্যন্ত অসৎ পুরুভির সম্ভাবনা না হইবেক।

থর্মন স্থাপনাকা জিকর পুত্রু তর ৷ যৌবনং ধন সম্পত্তিঃ পুভুত্ব মবিবেকতা। একৈকমপ্যন-थांत्र किमूज्व ठजुडेशः । यर्थाः (योतन, धन, পুভুত্ব, ও অবিবেকতা এই চতুষ্টয়, পুতেনকে ও সকল অনর্থের কারণ হয়, হটাতে বেসকল ব্য ক্তির পুতি ঐচতুষ্টয়ের সম্পূর্ণ অনুগৃহ, সেনকল व/क्तिक्रिक्ष्यहेनयहेनात्र मञ्जावनानास्य । এहे নীতি শান্ত্রীয় বচনের এতাৎপর্য্য নহে, যে, এই योजनामि छञ्चेश्व, वाकि माजि वे समर्थिव काव-ণ, কিন্তু, দুঃশীল দুজ্জ নদিগেরি সকল অনর্থের नावन इस, **डाहात्र नाक्को** तात्र (वन, मूर्या धन

পুভৃতি- দেখা রাবণের দৌব্ভির বৃত্তান্তর অন্ত ক্রিতে বূঝি অনভ ও অ**শক্ত হইবেন, বেণরা-**জার বাল্য কালেই পিতৃবিদ্য**নানে ধন ও পুডু-**ত্বের অভাবেও কেবল অবিবেকতাতেই কি ২ পুণ্য পুতি ঠাপুকাশ না হইয়াছে, এবং দুর্যোধনা-मित्र (मोर्ड्डा न्य्रेवा **डाँ शत्र प्रिलंड ७० वर्गरन** কি, অবর্ণিত আছে এবং সুশীল সুজনদিগের যৌবনাদি,কদাচ অনিষ্টের সাধন হুমুনা,তাহার পুনাণ, অতিকায়, বিভীষণ, জনক, ও অভ্যু ন পুতৃতি। ইতিহাস পুরাণে ভাঁহারদিগের উপ-খ্যান শুবণে পাপাত্মারোপাপ মোচন ও বিশিষ্ট ত্যান ছন্মে। এবং ইদানীন্তন অনেক দুর্জ্জন ও সুজনেরও হৌবনাদিতে দৌজ্জন্যওসৌজন্য পুকাশ হইতেছে, দেখ, কেহুহ, ধ্ম সংস্থাপনা কাঙিক ৰূপে বিখ্যাত, কেহ্ ২ ভাক্তভম্বজ্ঞানি ক্রপে নিন্দিত হইতেছেন। অতএব নীতি শ.-জ্বের বচনান্তরে দুর্জ্জনওসুজনের বিদ্যাদিরে:-বিপরী ভফল দৃষ্ট হুইতেছে। यथा। বিদ্যাবিব:- দায় ধনং মদায় শক্তিঃ পরেবাণ পরিপীডনায় ৷ খলস্যাধার্ষিপরীত মেতৎজ্ঞানায় দানায় চ ब्रश्ननाञ्च । व्यर्थाए मुक्क त्नव्र ब्रिन्ता, धन, ७३न, এইতিন, বিবাদ, মন্ততা, ও পরপীড়নের নি-মিত হয়, সুজনে তাহার বিপরীত, ফলতঃ সু *छानद्र विष्ठा,*धन**७** वल, **এই**তिन,ख्डान, षान, ७ পররক্ষণের কারণ হয়। অতএব সুশীল সুম্বন দিগের কি, পিতার বিদ্য মানতায়, কি অবিদ্য-মানতায়, কি, অধিক সহকারিতে, কি অলুস-क्कातित्छ, कान काल कानकरमई व्योवनाहिः র পুতৃত্ব হয়না, এবং তাহার ফলও জন্মনা। বর্ষাসহকারিতে কি সমুদ্রে জল বৃদ্ধি হয়, কি, কৃষ্ণ পক্ষেপ্ত জ্যোতি রিস্থনের উত্তম জ্যোতিঃ হয়, এবং পাষাণে বীজবপন করিলে কি,তাহা-র অন্থুর জম্মে, কি, অমৃত ফলের তৰুতে বিষ ফল জন্মে, অতএব তাঁহারদিগের বৃথা কেশচে-मन, मुद्राशान, मश्चिमाञ्क्रम, कदनो गमन, ७ বেশ্যাসেবন, সর্বকালেই অসম্ভব, শাসনও ফ

শম্ভব্যকিস্থু, নগরান্তবাসির অদ্যাপি জবনী গম-নের চিহ্ন, পু কাশ হইতেছে, থেছেত্ত,নিলবাস স্থানেরপ্রান্তেই জবনীগমনের ধূজপতাকারোপণ করিয়াছেন ৷সম্বিদাপান, সুরাপান তুল্য হয়, কি কারণেও কি পুমাণে তাহা জানিতেবাসনা করি? ৷ এবংধ্যা সংস্থাপনাকাভিক্ষ দিগের মৃ-ধ্যে কোন২ব্যক্তির্যৌবনাবস্থাতেও কেশের-শুক্লতাদৃষ্টি হইতেছে,যদি ভাঁহারা, জবনের কৃ-ত কলপের দারাকেশের কৃষ্ণতা করিতেন, ত-বে শুক্লতার পুত্যক্ষ, কি সপক্ষ, ফি বিপক্ষ, **কাহারো হইতনা, দেখ, ভাক্ত**ভল্কানি মহা-শয় দিগের বৃদ্ধাবস্থার চিহ্ন্, কেবল দস্তক্ত্ তাহাও কোন ২, মহাত্মা, কৃত্রিম দল্ভের দারা আদৃষ করেন, কহ ২বার্ছক্যের পুত্যক্ষ ভয়ে-মেষের ন্যায় বৃক্ষঃস্থলেরোলোন কর্তুন করিয়া थाक्न, वद कि दालक, कियुवा, कि वृष्त, नक লেই মুখিতমুখ, তাহাতে বৃদ্ধদিগেরে৷ সেই মু-গুডেনুপ্তের ও কৃষ্ণ ভণ্ডের কেশেরো শুক্লতা দৃ-

ষ্টি, কথন কাহারো হয়না, ইহাতে বুঝি ঐ মহা-चात्रा, गृहकाउ कवन किया कानीत प्राताहे अ মুণ্ডিত মুণ্ডের ও কৃষ্ণভুণ্ডের অপূর্বশোভা করি-য়াথাকেন। ভাক্তভুজ্ঞানি দিগের এও এক পুকার বিধি কৃত দণ্ড, এবং তাঁহারদিগের অ-বিরত অবিহিত আচরণ নিমিত্ত অপরাধের ম-স্তক মুগুন ও মুথেমসীলেপন, এই দণ্ড, উপযু-ক্ত ও বটে, অতএব সম্পুতি তাদৃশ অপরাধে রাজ শাসনাভাব পুযুক্ত বিধাতা, ভাঁছারদিণে র দারাই ভাঁহারদিগের দণ্ড করিতেছেম। পর-खुः य**দि পু**रान ভাকতভ্জानि**র गा**नि**ত হ্**ইয়া कान २ कृत्राक उष्ट्रानी मिथावानी करए-न, य, धर्म मःशाभनाकाडिक दिश्व म्या उ কোন২ ব্যক্তিকে জবনী গননাদি করিতে আ-মরা, দর্মন করিয়াছি, তবে সেই২ সাক্ষিরপুা-মাণ্ড, কিবলে হইতে পারে, যেহেভু, শাঙ্কে তাদৃশ দুষ্ট ব্যক্তিদিগের অসাক্ষিত্ব কহিতেছেন। यथा नात्र : । (खनाः नाश्मिका पृक्षाः किछ्वा

বঞ্চান্তথা। অসাঞ্চিণত্তে দুষ্টত্বাৎ তেনুসত্যং নবিদ্যতে। অর্থাৎ চোর, ডাকাইত, স্বাভাবিক কোধী, ও ছুয়াচোর, এই **সকল** ব্যক্তিতে পত্য नञ्जव इयन', देशाता,मुहेष शुपुक अभाकी हर। ं ब 🐯 বন্ধ্যা জীবাল বৃদ্ধ কিতব মাজোন্মভাতি-শন্তকা: ৷ রহাবতারি পাষ্ডি ক্টকৃদ্কলেন্দ্রি-সাঃ। পতিতাও থেনম্কিনহায় রিপুতন্রও।স হসী দৃষ্টদোষশু নিধূ ভাদ্যান্ত্রসাক্ষিণঃ ৷ অথাং স্ত্রী, বালক, অশ্বতিপরবৃদ্ধ, কিতব, মত্ত, উ. नाज, अभवारगुरु खोबीवी, भावन्त्र, निय्ताः विशि कात्रकारि, विकल्लिन्स्य, शिंठ मृश्र् অর্থ সম্বন্ধী, অর্থাৎ বাহার জয় পরাজয়ে যাহ্য র জয় পরাজয় হয়, সহায়, রিপু, তদুর সাহ্ লী, নিথ্যাবাদি ৰূপেথ্যাত, ওক্তাতিবৰ্গ কর্ত্ ক্ত্যক্ত, ইহারা, সাক্ষী হয়না,যদি এক পুধান চোর, আত্মকার্য্য সাধনার্থ অন্যত্ত ক্ষুদুচোর व्यर्थाए लात्क याहात दिल्य निन्दान, गाँठका-টা, জুয়াচোর, হাটচোর ওঘাটচোর, কহিয়া থাকে,তাহারদিয়ে সাক্ষীনানিলে ভাহার দিগের সাক্ষ্যপুাছ হইত, তবে প্থিবীতে কেহ সাধ্ হইতেনমা।

ভাকতভ্তানির উত্তর । ধর্ম সংস্থাপনাকা **দিক্ষকে জানা উচিত যে পুয়াগ ব্যতিরিক্ত বৃথা** <sup>1</sup> কেশ:চুদ করিবেক না ইহা নিষেধআছে অভ এব বৃথা শুবের দ্বারা নৈমিক্তিক কেশচেদের নি-বেধ ইহাতে বুঝায়না। বিশেষত ব্থাকেশচে, দ অভিকদ্ধ পরিধান ও হাঁচি হইলে জীব ইহা না বলা এবং ভূমিতে পতিত হুইলে উঠএ শবুরু য়োগনাকরা যাহাতে ব্রহ্মহত্যার পাপহয় এক্-প ক্ষুদু দোরে মহা পাতক শুতি যে সকল বি-ষয়েআছে তাহার ক্য়েরনিমিত্তে ওইরূপ অল্লা-यामनाध्य व्यवस्त्रिंगादि मानक्तर उताय । আছে ৷ বুকাহত্যা কৃতং পাপ নয়দানাৎ পুণ-শাতি। সম্বর্জ:। হিরণাদানং গোদানং ভূমি দান তথৈবচ। নাশ্বয়ন্ত্যাশুপাপানি নহাপা-

তকজান্যপি। কুলার্গবে । ক্ষণং বুক্সাহমনীতি
যৎ কুর্য্যদায় চিন্তনং । তৎ সর্ব পাতকং নশ্যেৎ তমঃ স্র্যোদ্যে যথা । অর্থাৎ অমদান
করিলে বুক্ষহত্যার পাপ নইহয় । মর্ণদান গোদান তুনিদান ইহাতে মহাপাতক ও নই হয়,
বুক্ম ও জীব এই দুয়ের অভেদ চিন্তা ক্ষণ নাম
করিলে ও যেমন স্র্যোদ্যে অন্ধকার যায় তদ্রু
প সকল পাতক নই হয় । অতএব সাধারণ
দোষের সাধারণ পুায়শ্বিত পূর্ব ২ শাক্সকারেরা
ই লিখিয়াছেন॥

ধ্য সংস্থাপনাকা দ্বির পুতৃগ্রর।
তাক্ততত্ত্তানি মহাশয়, নিথেন, যে পুরাগ
ও পিতৃমরণা দ ব্যতিরিক্ত ব্থাকেশচেদ্ধকরিবেকনা, এই নিবেধে ব্থাশব্রে দারা নৈমিত্তিক
কেশচেদের নিবেধ ব্ঝায়না, অতএব পণ্ডিতা।
তিনানি মহাশয়কেজানা উচিত্য যে, পুরাগাদি
সণ্ড, আর পুায়শিত্ত, ও চ্ডা, এইনয় পুকার,
কেশচৈদের নিনিত্ত হয়, তাহার কোন নিমিত্ত

**পুরুক্ত যে, কেশছেদন,**তাহারি নাম, নৈমিত্তিক কেশচেছন, বৃথাশবের দারা এই নববিধনিমিত্তে-র অতিরিক্ত নিমিত্ত পুযুক্ত যে, কেশচে, বল, তা **হারি নিষেধ প্রাপ্ত হইতেছে। যথা। প্রায়াগেতী**-ু র্থয়াবায়াং মাতাপিত্রো মূতেভরৌ । আধানে (मामनात्मक वननः मध्यू मृडः। वर्थाः भुद्याःग, তীর্থ যাত্রা, মাতৃমরণ, পিতৃমরণ, গুরুমরণ, গ-ভ্বাধান, ও সোমরস পান, এই সপ্তবিধ নিমি-ত্তে কেশবপন করিবেক, ইছা, মন্বাদি কর্ত্র কথিত আছে। পুায়শিতেও চূড়াতে কেশচে,দন পুলিদ্ধই আছে। অতএব বেমন পুয়াগ, তীথ-যাত্রা, ইত্যাদি, কেশচে,দনের নিমিত্ত, তেন্ন, মস্তকের ভারল্বায়্ব,ও জবনী মনোরঞ্জন, ইত্যা-मि छः (कम्मरहृमरात निमिल इश, धव९ (यमन, ४-র্ম সংস্থাপুনাকাজ্জির লিখিত; গঙ্গায়াং ভাসু রক্ষেত্রে ইত্যাদি বচনে পুয়াগাদি নিমিত্তক কে नार्ष्ट्राप्तत निरवर युकायनाः, (छ मन, जननी मत्नात জ্ঞানি নিমিত্তক কেশচেদনের ও নিবেধ বুঝা

য়না, এই পুকার যে ভাক্তত**ভ্জানি মহাশয়ের** অভিপায়, তাহা-কোন পুকারেই, সিদ্ধ হইতে भारतना, रगरंशकु, धर्मानाख बननीमरना बर्छना-्हित्क त्कनारमूम् रावज्ञ निभिष्ठ करहराना, यहिक्ववनी 'মনোরঞ্জনাদির নিমিত্ত **ভাঁ**হার দি**গের কেশ**েচ্<sub>ল</sub>-দন কর্ত্তব্যহয়, তবে ত্বক্ **চেদন ওআবশ্যক হ**য় কিনা?। যদ্যপি উপদ•শ রোগেই ভাঁছার দিগে-র বুক্ দ্বেদন ও বিধিকৃত হইয়াছে, তথাপি জা বনিক মন্ত্রাদি রূপ অক্সের বৈশুণে পুধানেরে বৈশু-ণ্যহুইয়া থাকিবে কিন্তু, অঙ্গের **অসিদ্ধিতে ও পু**-ধানের সিদ্ধিহয়, এ পুকার ব্যবস্থা ও কোন ২ স্থানে কোন ২ পণ্ডিতেরা, কহিয়া থাকেন,যে, পৃহদাহে দ্ধা ব্যক্তির পুনর্বার কুশা পুত্তলিকা দাস্ করিবেকনা যেহেতু, দহধাত্র মর্থ্য যে ভষীকরণ, তাহা, পুত্যক সিদ্ধ হইতেছে, মু-জ্ঞাদিৰূপ অঙ্গের বৈগুণে তাহার বাধ জন্মেনা, उद्भेश **এ**ञ्चल **७ উ**श्रम: भारतारंगे वृक् रहिम्म रु ইলে সেই পণ্ডিত দিগেরমতে সেই মহাআদি-

গের মজাদির অভাবে ও ত্বক্ চেদন সংস্থারসিং দ্দ হইতেপারে, যে হেতু,চি,ুদ্বাতুর মর্থ,যে চে<sub>হ</sub>ু দন, ভাহার বাধ্**হয় নাই ৷ এব॰ ধর্ম স**ংস্থাপ-নাকাভিক্ষ দিগের মধ্যে অনেকে, সর্বদাই ক্রিচ্চু পরিধান করিয়া থাকেন, কেহ ২ কেবল পূজা'-দিকালে। আর ক্ষুত্য পুপতন, ওজ্মুন, সর্থাৎ হাঁচি, ভূমিতে হটাৎ পত্ৰন, ও হাঁই, ইহাতে **জীব, উ**ভিষ্ঠ, ও অঙ্গুলিধ্নি, শাস্তানুসারে স-কলেই পক্ পরন্পরা ব্যবহার দৃষ্টিতে অভ্যাস বশতই করিয়া থাকেন, আর এই সকল স্থানে ও বৃথাকেশ দ্বেদনে কেবল বুক্ষহত্যার পাপ শু-বণে ইহার দিগের তুল্যতা হনা- তবে হইতে পারে, यहि ही शिकाबकव পুयुक हन्दु मूर्यात । अ দীপের ভুলাত। হয়। অতএব ইছার বিকেচনা-করা আবশ্যক, দেখ, বৃথাকেশচে্দনে শিথঃ বিরছে সুতরাং শিথাবন্ধনের অভাবে সেই শি-খারহিত ব্যক্তির তৃৎকৃত সন্ধ্যা বন্দনাদি ক-র্মের প্রত্যহ বৈশুণ্য জন্মে, যে হেতু, শিখ্-

বিশিষ্ট হ ইয়া কর্ম করিবেক, এই বিশ্বি আছে, তথাচম্বিঃ। গায়ক্যাও শিথা বজানৈপত্যাং বুন্ধরমুতঃ । জুটিকাঞ্ভতোবন্ধাততঃ কর্মা স-মান্নভেৎ । অর্থাৎ কর্মকর্ত্তা, পুথমতঃ গায়-ত্রীরদারা বুক্ষরস্থৃহইতে নৈখতকোনে শিথা ব-ন্ধন করিয়া পশাত সকলকেশ একত বন্ধন ক-রিবেক, ভদনন্তর কর্মারম্ভ করিবেক, অভএব শিখার অভাবে ক্রমে ঐ পাপ মহাপাতক তুল্য হয়, যেমন, উপপাতক, কমে বৃদ্ধি হইয়া মহা-পাতককেও লব্ধনকরে,এবং ক্রমে ব্রাহ্মণ্যাদিরো হানি হইতে থাকে,ক্ষুত,পু।পতনও জ্যুন, ইত্যা দিছলে জীব, উত্তিষ্ঠ, ও অঙ্গুলিধুনি, এই শত্ত্ব নাকরিলে এতাদৃশ কোন দোয় দুষ্ট হয়না, অ-্তএব বৃথাকেশদেদনকে সাধান্ত্রপাপ, কি-জ্রপে কহা যায়, ভাহার এ পুকার স্বাধারণ পু-য়শ্ভিইবা কির্কাপ হ্ইতেপারে, পুয়াগাদিতে কেশচেদনে কিছু সেব্যজির সেদোষ হয়না, যে হেতু, তাহাতে বিধিআছে । এব• পণ্ডিতা∽

ভিমানি মহাশয়, অন্য দুই বচন বিথিয়াছেন, তাহার তাৎপর্য্যার্থ এই, যে, অঞ্চানে ও সু-বর্ণাদিদানে বুক্ষ্ভ্যাকৃত পাপেরক্ষয় হয়, সে यथार्थवरहेः किन्रू, जाहारकहेः हेहा बिक्काना-করি, যে, পুস্তকে লিখিত প্রায়শিত্ত, পাপ না-শক,কি, আচরিত পায়শি, তঃ পাপনাশক হয়, যদি পুথম কল্ল ভাঁহার সম্মত হয়, তবে কাহা-রো প্রায়শ্তি, করিতে হ্য়না, যদি দ্বিতীয়কল্পে নির্ভন্ন করেন, তবে তাঁহার দিগের কিকুপে নিস্তার হয়, যেহেডু, পণ্ডিতা ভিমানির লিখি-ত, অমদানের পাপনাশকতা বোধক বচনে দ্রী পুত্রাদিপরিজন বর্গকে যে অন্নদান, ভাষারতত্ত্তৎ পাপনাশকতা কুছিতে পারিবেননা,কারণ, তবে তত্তৎ পাঠে প্রায়শিলের অভাব পুসক্ষয়, জী পুতাদিকে अमिদान, कि, ना कतिया थाकि, অত এ ব ঐ বচনে অম্দানশয়ে অম্দানবুত, কহিতে হ-ইবেক, যাহাকে, লোকে সদাব্রুত কহিয়াথাকে, যে হেভু, ঐ বচন,/অভিথিসেবা পুকরণে লিখি-

ভ সাছে, নেপুকার অম্বান,ভাক্ততত্ত্বজানিদি-গের মধ্যে কে,করিয়াপাকেন, যে, কছিবেন,ক– ছিলেইব', কে, পুত্যয় করিবেক, কাহারো ২ ত্যহার দর্শন, কাহারো ২ বা, শুবণ হইতেছে, ঐবং সূবর্ণাদিদানে সাধারণ পাপের ক্ষয় হয়, ইহা ও যথার্থ্য যদ্যপি ভাঁহারা ওকদাচিৎ ২সু-বর্ণদান করিয়া থাকেন, তথাপি তাহাতে তং-**পাপের ক্ষয়হয়না, যে হেতু, তত্তৎপা**পে গু<sup>্</sup> পুনরার পুবৃত্ত হইলে তাহার নিবৃত্তি কোনপুঞ্-রেইছ্ইতেপারেনা,অতএবগঙ্গান্নানন্থলে সেপু-কার বচন ও দেখিতেছি৷ যথাাকুর্য্যাৎ পুনঃগূনঃ পাপং নচ গন্ধা পুনাতি ত॰। অর্থাৎ যে ব্যক্তি পুনঃ পুনর্বার পাপ করে, তাহাকে ুগস্বা ওপবিত্র করেননা, যদিবল, যেমন,্ত্ভেরা পুতিদিন প<del>ন</del> 'ঞ্চসূনা জনিত পাপ ক্রিতেছে, এবং, পুতিদিন পঞ্ যজের দ্বারা তাহার না**শ ও হইতেছে**, তেমন, আমার দিগের ও পুনঃ পুনঃ বৃথা কেশ रह्मबामि निनिज পालित शुनः शुनः सूवर्गामि

দানৰূপ প্ৰায়শিতে নাশ ছইবার বাবা কি। তা হার উত্তর, স্নাশংকু অতিক্লুদু কীটাদি বংধর शान,(म, गाँठ भुकात रश हूझी, याशांक हू ना करह, (भवगी, वर्थाए मिनलाड़ा इंडराहि) উপদুর, যাহাকে থেজরা কহে, কণ্ডলী, মর্থাৎ যাহাতে নিক্ষেপ করিয়াধান্যাদির তুষাদি পরি-হরণ করাযায়, আর উদক কুন্তু, এই সকলস্থা-নে পুতিদিন অতি ক্ষুদু কীটাদির অবশ্যই নাশ হয়, তাহার বারণ কোন পুকারে করা যায়না, কিন্তু, তাহাতে গৃহস্থ দিগের না সঙ্কল্ল, নায়ত্ন, মাছে, অতএব পাঠ, হোম, অভিথিনেবা, ত-र्भान, अ विन रिवमाम्हित, **এই शक्ष या**ख्या उरे उर-পাপক্ষা হয়, ইহা, শাস্তেকহিয়াছেন, ইহাতে পুনঃপুনর্বার অভিযন্ন পূর্বক ক্ত, যে, বৃথা কেশদ্বেদনাদি নিমিত্ত পাপ, তাহার ক্ষয় সুব-র্ণাদিদানে কিপুকারে হুইতে পারিবেক, পুনঃ পু-নর্বার তাদ্শ পাপকারি লোকেরা, পাপক্রে

রত হ্য, তাহার দিণের নিস্তার, **সর্বপাপনা-**শিনী পতিত পাবনী ত্রিবন তারিণী গহাও, করেননা, ইছা, গঙ্গাবাক্যাবলীর বচনে বোধ-ह्रिटिङ । पणा। यष्टिविष् त्रर्नुानि गकाः द-क्ष छि गर्दना। निवाद्य छ। छ ङाः भु भाभक र्यात्र-তাংস্তথা। অর্থাৎ বাষ্ট সহসু বিঘুকারকেরা, अर्ब मा, श्रद्यात्क ब्रक्का करत्रन, जाँशात्रमिश्वत, अहे-কর্ম, যে, অভক্ত, কিম্বা, পাপকর্মোরত, যেসক-नत्नाकः ভाष्टात्रिर्द्यः वात्रश कतित्व। शत्रुषु, ভাকত ভুৱানি মহাশ্য়, অন্যঞ্জ বচন লিখে-न, जालाय अर्थबरे, (य, जानि तुकः এই পুकात চিত্তা দ্ৰণমাত্ৰ কাল করিলেই: সকল পাপ নাই হ-র, কিনু,ভাঁমাকেই, এইজিজ্ঞাসাক্রি, য়ে, এই পুরেলিভের উপদেশ, কাঠার পুত্তি করেন, যথার্থ িচৰু জ্ঞানিদিশেরপাপা ভাব পুযুক্ত ভাঁহারপুড়ি অসম্ভব,যেহেতু যথার্থ তও্তানি দিগের আহা-র স্কপ ভূমিতল, তত্তান স্কপদহনে সংদ-গ্ধ, এবং বাসনাস্ৰূপ সলিলের সম্বন্ধাভাবে শু-

**খুঁ, অতএব ম**ক্তুমিতুল্য, তাহাতে সংকৰ্ম ও **দুহুর্ম স্বর্পবীজ্ঞ বপন** করিলে তাহাত্ইতে ধ্যা ও অংশের অকুর জন্মেনা। অত্রন ভগবদ্গী-**তা, ও যোগশান্ত্র**, কহিতেছেন। যথা। यথৈ र **शाः नि नि**म्हारिश उँगनाए कृ क्राउ ब्ह्रा । জ্ঞানাণ্নিঃ সর্বকর্মানি ভষ্মসাৎ কুক্তেতথা। অ-थीए (यमन, भुक्विज मामाना अधि, मामाना কাপ্তরাশিকে ভমাকরে তেমন পুজ্বলিত তত্ত্ব-জ্ঞান স্বৰূপ অগ্নি, প্ৰায়ব্ধ কৰ্মা ব্যক্তি কে **সুক্তদুসূতকর্ম**স্বৰপ কাঠরাশিকে ভষা করেন। ভিদ্যতে ছদ্মগুছি শ্বিগতে সর্ব সংশয়াঃ । ক্ষীয়ন্তে চাদ্য কর্মাণি তন্মিন্দৃষ্টে পরাৎপরে। আর্থাৎ সেই পরাৎপর যে পরম বুকা তেঁহ দই হইলে ফণতঃ তত্তু জ্ঞান জনিলে সেব্যক্তির হ্বদয় পুছির ভেন্হয়, অর্থাৎ নিথ্যা জ্ঞান জ-় ন্য বাসনার নাশ হয়, এবং, সকল সংশয়ের দ্ধেদ হয়, অর্থাৎ ঈশ্বরের অন্তিত্বনান্তিত্বও জীব ব্রন্দের ঐক্য অনৈক্য'ইত্যাদি সংশয় নপ্ত হয়,

এবং সকল रुचांक्य इय़, व्यर्थाए **मुक्ठ मृद्**छ কর্মাহইতেধমাধর্মের সঙ্গুর জন্মেনা৷ যদি ভাক্ত তভৃজ্ঞানিদিগেরপুতিকহেন,তবে ভাহাওমসম্ভ-त्र, (यरहकु, वुकानुत्रागीयवहनानुनात्त जान्म मू÷ ষ্ট পাপিষ্ঠদিগের প্রায়শিতের দ্বারা শোধন হয়-न। । यथा। চिखनडर्गङ , मृष्टे , **डीथ** नान नम्. ধ্যতি**।শতশোথ জলৈধৌ ত॰ সু**রাভা ও মিবাশু-চিং। নতীথানি নদানানি ন্বুতানি নচাশুমাঃ। দুষ্টাপন্নং দম্ভকচিং পুনন্তি ব্যথিতেন্দ্রিং । অর্থাৎ অন্তর্গত দুষ্ট, যে চিত্ত, তাহা ভীর্থ স্থা-ন করিলে শুদ্ধহয়না, যেমন, জলেতে শভ২ বা-র ধৌত হইলেও সুরা ভাও অশুচিই থাকে ফ-লতঃ যেমন, শত্ব বার জল ধৌত হইলেও ়সুবাভাঙ, শুচি হয় না, তিনন, দুইচিভ লোকে-·রা, পার শিুভের হারা শুক্ত হয়না। এব • দু**ঠাশয়** দান্ত্রিক ও অবশেন্দ্রিয় মনুষ্যকে; কিভীর্থ), কি দান, কিবুভ, কি কোন আশুন, কেহ, পবিত্র করেননা৷ হৃত এবকুর্মাপুরাণে কিয়ার হিত যথেষ্টা-

हाति जाकउव्देखानि पिरणत मत्रभाष व्यामान्न केश्तिरहार । यथा। कियाशीन मा मूर्थमा नशा-त्ताणिन भवह। यथिडाहत्र माह्य र्वतभाष्ट मर्थान्न कः। वर्षार कियाशीन, कनजः निजारेनिनिह-क कियात्र्रिज अवः मूर्थ, कनजः व्यथं महिज भायकी त्रश्चि अवः महात्त्रांभी, कनजः मत्रान-शासकी त्रश्चि अवः यथिडाहत्रभ, कनजः म्रज कीष्टा, महाभान, अ त्रमानि, इहार बानक हेश्ता-भूरजारक यावब्लीवन ब्रम्हि थाकः हे-हा, मन्नानि किश्तिरहन ।

ভাক্তত্ত্জানির উত্তর । ধর্মণ স্থাপনাকাক্রী বচন লিখিয়াছেন যে ব্রাহ্মণ স্রাপান করিলে বৃক্ষহত্যাপাগপুত্ত এব ব্রাহ্মণ স্থান
ন এবং অন্য স্ত্তি রচনেও কলিতে ব্রাহ্মণের
মদ্যপান নিষিদ্ধ দেখিতেছি এসকল সামান্য
বচন যেহেভইহাতে বিশেষবিধি দেখিতে পাই
ক্রি: শ্রামন্যা স্রাং প্রীয়াৎ ১ । নোভাসনীযক্তে সুরাপান করিবেক। তগবান্নুঃ ।

"नमा मंडका (पारमा नमापानहरेमथूरन, वर्षाए) পুকৃত্তি হুইলে যেপুকার মদ্যপানে ও মাণ্সভো ধ্বনে এবং জ্রীসংসর্গে বিধিস্পাছে তাহা করিলে रमाय नाहे। कुलार्गव 'अ महानिर्दान खदा: 1 करनी যুগে মছেশানি বান্ধণানাও বিশেষতঃ ৷ পশুর্ন नगरभन्नंनगर भन्नंनगर मनाख्या । यउ এব দ্বি **জাতীনা•মদ্যপান• বিধী**য়তে। দেখারঃকু-व्यथ्यानाः वाक्नीनिन्त्कामुः(यः । मृश्रहामधनारङः-য়া মহাকিশিষকারিণ:। কলিকালে বিশেষতঃ वाकालता कराशि शमू रहेरवकना अहेरह ख वाक-**ণপুভৃতির মদ্যপান বিহিত হয়।যেসকল** ব্যক্তি कुलश्रस्यंत्र एव अवर भिन्दात्र निन्ता करत्र तन-সকল মহাপাতকী চঙাল হইতেও অধনহয় ৷ পুর্বোক্ত ষ্তিবচনে সামর্নিটত সুরাপানে নিষে-শে বুঝাইভেছে আর পশাতের লিখিত শু,তিম্-তি তন্ত্রবচনে বিশেষ২ অধিকারে সূরাপানে বি-ধি প্রান্ত হইতেছে অতএব দুইশান্তের পরস্পর বিরোধ হইল তাহাতে ভগবান্ মহেশুর আপনি

**जिष्का**ड कदियाहिन ! **चन**•मू ७१० महत्राहि महा পাপকরং ভবেং। অর্থাৎ স'ক্রারছীন যেনদ্যা-দি তাহার পান ভোজনে মহাপাতক জন্মে।অত এব সংসূত মদ্যভিন্ন যেন্দ্য তাহার পানে ঐ মৃতি বচনাৰুসারে অবশ্যই নহাপাত্তকহয় আ-র সংসূত মদিরাপানে পাপ কিছ্ইবেক বর্ঞতা হার নিন্দকের মহাপাতক জনেম পূর্বোক্ত বচন ইছার পুনাণ হয়। এইকপ বিরোধ যথন বেছে উপস্থিত হয় অর্থাৎ একবেদে কহিয়াছেন যে কোন প্রাণির হি॰সা করিবেকনা আর অন্যবেদে ক্রেন যে বায়ুদেবতার নিনিজ্ঞে শ্বে**তছাগল** ব**ধ** করিবেক এমত ভ্লে মীমাণসকেরা এই সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে বেই হিংসাতে বিধিমাছে তডি-মাইৎসা করিবেকনা যেহেতু এক শাব্রের কিয়া একশুতির অমান্যতা ক্রিলে কোনশাস্ত্র বং কোনশু তি সপু নাগ হইতেপারেননা। মদ্যপানবি: ষয়েপরিসং খ্যাবিধি অর্থাৎ গাধিক বারণও দে থিতেছি। যথা । অলিপান কুলজীশা গর্কী-

কার লক্ষণং। সাধকানাংগৃহছানা পঞ্পাতং পুকীত্তি তেং। পানপাত্রং পুকুষী ত নপঞ্তো-লকাধিকং ৷ মজার্থসূত্রণার্থায় বুক্ষজ্ঞানছিরায় **চ। ञनिभार• পुकर्खव्यः लानु (भावद्यकः बुद्धः ।** পানেভ্ৰান্তিৰ্ভবেৎয়স্যাসদ্বিস্তস্যনদায়তে গো-পন•কুলব্ম সিঃ পশোরেশ বিধারণং । পশ্ব ভোজন•দেবি বিজ্ঞেয়•প্রাণসঙ্কটে 🤊 কুলার্ণর 😢 মহানির্বাণ ৷ কুলবধূর মদ্যপানছানে সামাণনা बिविचि च इस्र । जात गृरस्मायकता शक्षभादि-র শধিক গুহুণ করিবেকনা পোচতোলার, অধিক পানপাত করিবেকনা। মজার্থের বু, তি হইবার উদ্দেশে এবং বুক্সজ্ঞানের স্থিরতার উদ্দেশে ন্-দ্যপান করিবেক লোলুগ হইয়াক্রিলে নরকে-যায়। যাহাতে চিত্তের ভুন হয় এনত পানক: ,রিলে সিদ্ধি হয়না। কুল ধমেরি গোপন ও প-শুর বেশধারণ এবং পশুরুত্ম ভোজন প্রাণসং কটে জানিবে। অত এব লাপন্হ টুপাসনানুষা-রে সংসূত ও পরিমিত্নদ্যপান করিলে হিন্দু-

ধ শাজ বাঁহারা মানেন ভাঁহারা শাসনকরিভে পুदर्ख रुहेरवनना। यमित्रतार धर्मान हाननाका-**ण्की सो**य्रम**्भव**ञात ज्ञालारञ्चयनमारख्या दि-श्री है हिन्द्र महनामि श्री दिन विवास करते । **যাহাতে কোনমতে** মদিরাপানেরবিধিনাই, ত-বে শাসনের ক্ষমতাত্ইলে বৈধমদ্যপানে দোষ करिया भामन कति छ भात्रभ इहेरवना किंछु याँ। हास्तत जेला मनारख मन्त्रः अभानकमुक्त विन्तूनाः अ अवंथाः निविद्य हय जाहाता यहि त्वादः-লক্ষা ও ধর্ম ভয় ভ্যাগ করিয়ানদ্য কিন্তু। সন্ধি-ष्टा कि अन्य भाषकपुर्व शुरुषकत्त्रन, उत्व धर्मा न --হাপনাকাঙিক্ষর লিখিত বচনের বিষয় ভাঁহারা हहेग्रा भाउक्षुष्ठ **७व॰ वास्त्राशीन हहे**रवन ॥ ধন্ম সংস্থাপনাকাশ্কিরপুত্রের ভাক্তর্-জ্ঞানি নহাশয়, সৌরামণীয়জ্ঞে সুরাপানে এক मुजित्क, भुमानकाल मर्मन कतान, जाशाख ध-इ বোৰ হইতেছে, যে জাঁহারা, সর্বাই সুরা

भागार्थ (त्रोबामनी यखनाब कतिया मुहाभाव করিয়া থাকেন, অভ এব ভাঁহার দিশ্বে ভাক্ত-या द्या कि कहिला ७ कहा गाय, रन गाहा रूउक्, বৈগুন, মাংসভোজন, ও মদ্যপান পুৰুষের ঐ-হ্যি হয়,তাহাতে নিয়ম বিনা বিধিসমেব হয়ন% কুম<sup>\*</sup> বি**শেষে তাহাতে যে, শান্ত** দাছে, সেণ্ড, त्राभिवः क्तित **भक्ति नि**ष्ठमः कियु निवृद्धि धर्मा त्र उ भूगुक्कूत्र शक्क् नरह। (सहेश्रत्म निवि कर्गपान) । স্থলে, অভ্যন্ত অপুণ্ড বিষয়ের প্রাণ্ডির নিনিত্ত কথন হয়, সেইবিধি,পুতিদিন ব্ৰাহ্মণ সন্ধ্যা ক-রিবেন, পুহ্ণাদিতে শুদ্ধাদি করিবেক, সার স্ব-र्ग कानारिका कि, अनुभवशात्राहि कब्रि: कि, है-ত্যাদি, এবং পুক্ষের ইদ্যুতেই যে বিষয়ের পুঞ প্তি হয়: তাহার পুরির নিমিত্ত যে শাস্ত্র, তাহা-র নাম নিয়ম, সেইনিয়ম, স্বান্তকালে ভার্যণাগ-মৃদ, ভ্রাতৃ দিতীয়াতে ভগিনীহন্তে ভোজন আর শান্ধের শেষদ্ব্য ভক্ষণ করিবেক ইত্যাদি ! च्याउनव सम्प्रभागामि इत्म, त्य विधित्र चाकात

**শাস্ত দর্শনক**রাবায়, সেবিধিনস্থে, কিন্তু- নিয়ন্, তাহার উল্ল্বনে শাস্ত্রে দোষ শুবণ পুযুক্তনিবিদ্ধ কালে ভোজনে, ও শালে, তদুব্যের আয়ুণ্যে-ত্র বিহিত হয়, মত এর ক লিযুগে নদ্যপানে নি-দের দর্শনে যে ২ *ছ*ানে নদ্যপালে নিয়ন্সাছে, (तमकपद्भारमामामाम यानगढ्नहे युक्तिनिक्षह्य, ष्पञ्चत सुराज 🥶 🛒 🗷 (ञाञ्चतित्र नियम त्रक् -র্থে উপরনেরিয়ে গেবসু করে আঘু ণের শান্ত ও ব্যবজার দৃষ্ট হইজেত্ে, অভএব জীলম্ভাগ-तरक व्द्धारिक वराजाना**मि इत्य नर्वकाला** व्यायुक्तानिहे मृत्यः कतियात्त्रना यथा। त्नात्कः न्यवादः निव सम्प्रत्यवा निज्याहिकासार्वहिज्ब-চোদনা। ব্যবন্থিতি ভেষু বিবাহ্যজ্ঞসুরাগুহৈ-ন্তানু নিবৃত্তিরিষ্টা। यह । । ভক্ষোবিহিতঃসুরা-ग्नाख्याभामात्राण जनः नहिः मा। वदः दादाग्नः भूः बद्रानद्ररेठाहेम विश्व निविदः स्वयं । वर्षार ইহলোকেনৈথুন,মাণ্স ভোলন-ও নদ্যপান, ই-कारत मदनबीरदद्र बाजादिक भुवृत्ति हहेरलहा,

**কিন্তু**- তাহাতে বিধি নাই, তবে থে, খন্ত হা**লে** ভার্যাগননে, যভ্তে পশু ছ্রনে, ও সৌছাম-ণীয়াগে সুরাসেবলে প্রাবর্ত্তকশান্ত দেখিতেছি, নে কেবল রাগিব্যক্তির পুতি জানিবা, মুনুক্ লোক, তাহাতে সর্বথা বিরক্ত হইবেন,যেছেব্ড, সৌত্রাসণাযাগে সুরা**পান অবিহিত**, কিন্তু, আ যাণ মাত্র বিহিত, এবং অন্যান্য যন্তের পশুর হি•্সা অকর্ত্তব্যা, কেব**ল তাহা**র আগভন বি-হিত হয়, অর্থাৎ যথেষ্টাচরণ করিবেকনা,এবং क्षीमक अमलानार्थ विहि**छ हयः मू**थार्थ नहिः मू-र्थालारकता, वह तमुक स्थम नाकानिया नानाषु-হুর্ম করিতেছে। এব সৌরামণীযক্তে সুরান্ত-লে ইতিতে দোমরদই ইতুমাছে। বস্ততঃক नियूर्ण द्राञ्चभारि ठादिवर्णद्र मन्त्र, चारस्य, च-পেয়, ও গগুছে হয়, ইহা নানাপুরাণাদিতে ও নানাতত্তে দৃষ্ট হইতেছে, অভ এব মদ্যপানাদির যে সকল শাস্ত্র, ভাহা, সভ্যাদিযুগেই ব্যবহা-র্থ্য, ইহা, সুরাচার্থ্য মহাশয়ের অবশ্যই বীকা-

ক্ল করিতে হুইবেক, যেছেন্ত, কলিযুগ অধিকার क्रिया वुक्रभुतान, कानिकाभुत्रान अव उन्ननः, किर्टिट्न। बुक्तश्रुवानः। नवान्तास्। सम्प्रक কলৌ বর্জ্ঞা দ্বিজাতিভিঃ। অর্থাৎ দ্বিজাদি সকল क्वाजः वाञ्चन क्विय श्रेरिका अवेजिनदर्ग, क-লিযুগে নরমেধ ও অশ্মেধ যাগ এব মদ্য ইহা-त्र वर्ड्जन कत्रिरवन। कालिकाशूत्रागः मुनाबक्धिन র দ জাহাহাহত। মবাগু, মাং। মদ্য দ জাবান্ধণ স্ত ব্রাহ্মণ্যাদেবহীয়তো অর্থাৎ কি বু হ্মণ, কি অন্য বর্ণ, সুশরীরের কৃধির দান করিলে আত্মহত্যার পাপে লিওছ্য়েন এব•ব্রাহ্মণ,মদ্যপান করিলে ব্রা• স্বাণ্ড হুইর্ভেগীনহন।উশনাগ্রন্ত্যন্দেয়নপেয় মন निग् । छ । चर्या ८ महा, जाहर य, जारा य, अवगु छ, হয়। উশনার বচনে নদে।রঅদেয়ত্ব অপেয়ত্ব ও অগ্রাহ্যত্ব শুবণ পুযুক্ত বৃক্ষপুরাণের বচনেবজ্জন শব্রেঐপুকার হর্থ, এবং কালিকা পুরাণের বচনে अनानभारकः, भान अगुरुग वक्तवा रुव । अवर वुक्त भूतात्व वहत्व क्वियूग मुद्र भूयूक्का विका भू-

রাণে ও উশনার বচনে ও কলিযুগের সম্বন্ধ ক-ति**रिं २३ ति । १४ । १५ कि विप्**रिंग सम्बद्ध निर्वे थ भुगुक व्यत्नक नवा भुाठीन मईजननाना गुइ-कारतता, महाभागाहि इत्व महा भू जिनिवि हा-नानित्ता निष्यत कत्रियाष्ट्रन, छ।हात्रनित्मत्र य-ভিপায় এই য়ে, যৎকমে বিদ্বু চ বিহিত ও জ-নিবিৰ হয়, তৎকমে তিদুব্যের অভাবে তাহার পুতি নিধিৰূপে দুব্যান্তরের গুহ্ণ যুক্তিনিজ্ঞ -য়, যেমন, শ্রাদ্ধে মধুর অভাবে তৎ প্রতিনিবি करण अज़ानित गुरुग, किन्नू, भुवातित नित्वत्र-লে তাহার পুতিনিধিকপে দুব্যন্তরের গুহ্ণ অযুক্ত, অতথ্য মাংসাইকা শুলের কলিযুগে গোমাংসের নিষেধ পুযুক্ত শাস্তে তাহারপুতি-निवि विवान ना कित्रमा इतिव॰मापिट विविञ বে মৃগমা•দাদি, তাহার অভাবে তাহারপুতি-নিধিৰূপে পায়সের বিধান,ক্রিয়াছেন। অত ং-ব বাঁছারা, শান্তীয় নিষেধ উল্লাহ্রন করিয়া কলি यूष्म निविष्क बंहा।हित्र वावहात्र कतिएक भारतनः

তাঁহারা, বুঝি কলিযুগে নিষিদ্ধ অন্যন্হামাণস ওব্যবহার করিয়া থাকেন এব**ণ উপনার বচনে** অদেয় ইত্যাদিশ্ব, বিষ্ণুবাচক হয় এই কথা करिया भाषत्थता, 'ॲंटहरनद्र এই भुकाद वर्ष कन्नना कतियाथात्क (य, नम्र, विकृत्क एसः, বিষ্ণুরপেয়া, ও বিষ্ণুর পুাছা হয়, যেপাষণ্ডেরা, भवनावाम् न भाष्ट्र भवत्रवन्नगृहोबार । अर्थार পরনার গদন করিবেকনা, এবংপর্বন মপহরণ-क्रित्वक्ना, हेक्गांकि खुल भित्रभागान नक 4-हे कथा कहिया अहे शुकात अर्थ करत (य, **गर्वना** পর্বার গন্ন ও পর্ধন অপহরণ ক্রিবেক, সে পাবণ্ডেরাও, এক্ষণে বুক্ষপুরাণে ও কালিকা পু. द्वारा म्हारत निःयद हर्मान जिम्माद वहत्व मन দ্য, অদেয়, অপেয়, ইত্যাদিস্থানে অশহু নিষে-धार्थ व्यवनाई कहिर्दन् । शायखंत वक्तनः পদ্মপুরাণ, কংিতেছেন। যেহুসভক্ষ্য পানাদি-রতালোকানিভরং। শিবে পাষ্ডিনো জেয়া ইহাতে নাত সংশ্যঃ ৷ যে বেদ সমত কার্যঃ

ভ্যজ্বান্যৎ কর্ম কুর্বতে ৷ নিজগ্চার বিহীনা যে পাষপ্তান্তে পুকীর্ত্তিতঃ। অর্থাৎ ভগবতীর পু-তি শিব, কহিতেছেন, হেশিবে, বেসকল লো ক, নিরম্ভর অভক্ষ/ভক্ষণে ও অপেয় প্যানে রস্ত **হয়, তাহারদিশ্বে পাষ্ও ক**রিল্লা সালিবে। এব• याहात्रा, रेविष्टिक कर्या उग्राग कित्रवा व्यन्ग कर्याः **করে আর সুস্বলাতীয় সদা**চারহীন হয়;তাহার **দিণ্টে শান্ত্রে পাষও করিয়া**কহিয়াছেন:সিদ্ধলহ রীতত্তে। পশুভাবে সদাসিলিনান্যভাবে কদা-চন। দিব্য বীর মত• নাস্তি কলিকালে দুলোচ-নে ৷ অর্থাৎ কে পার্রতি, কলিযুগে পশুভাবে अर्द्धा जिल्लि इयु, अन्य ভाবে करा हर् यसा, (यर्ह-**ভু, কলিকালে** দিব্যভাব ওগীয়ভাব নাই। বু**ন্ধ** তক্রে। যথিন্ তত্তে মদ্যপান তত্ত্তং সভ্যস भाकः,। कालो नमना उ॰, नन्। रेमथुन नहमम-ত:। পশুভাবাৎপরো ভাবো নাস্তি নাস্তি क-**ংলর্মতঃ। অর্থাৎ ছেপার্মটি, যেতজ্ঞে নদ্য-**পান উক্ত আছে, সেতস্ত্র, সত্যযুগের সম্মত, কলিযুগে মৃদ্য,ও মৈথুন সম্বত নছে, এবং পা णु जाव इहेट उँ खम जाव नाहे नाहे । का-नीविनानज्ञा महार मरनार ज्या मानर बूबुार रेमथून (मर्का मानान नायनर जि. कि-তাসাধন মেবচ। এতত্তে কথিতং, সর্বং দিব্য বীর মতং পুঞা। দিব্যবীর মতংনান্তি কলিকা। ल जूलाहत् । कलो अमूनठः मन्दः यजः **সিদ্ধী**শুরো ভবে**ং ।ত্রিসদ্ধ্য**ণস্থানন**ানঞ্চ** হবিষ্যা-শীন্ধিতেন্দ্রিঃ ৷ ত্রিসন্ধ্যং পূলয়েদেবীং ত্রিসন্ধ্যং-कवहः भरहेर । बिमक्षाः मञनामानि भरहेर স'সিদ্ধি হেতুকাৎ । ইতি তে কথিতং দেবি नईकािं वृ नमा उ । जार्था ९ (इन्तिय महा, মৎস্য, মাণ্স, মুদুা, ও নৈথু ন, এই পঞ্চ নকা-র, আর শুলান সাধন, ও চিতাসাধন, এই দি-ব্যমত ও বীরমত, তোমাকে কহিয়াছি, কিন্তু, কলিকালে দিব্যমত ও বীর মত্ত, নাই, কেব্-ল পশুমত, পুশন্ত, যাহাতে সিদ্ধি হয়, ত্রিস- ন্ধ্যায় স্থান ও দান করিবেক, এবং ক্বিব্যালী:
ও জিতেন্দ্রিয় ক্ইবেক, এবং সিন্ধির নিমিত্ত ত্রিসন্ধ্যায় দেবীর পূলা কবচ পাঠও শতনাম পাঠ করিবেক, সর্বলাতিতে সমত এই পশ্ভাব
তোমাকে একণে কহিলান ।

অভএব বৃদ্যপি এই সকল শান্ত্র ও যুক্তি স্বৰূপ পুচণ্ডমাৰ্ভণ্ড কিরণে উজ্জ্ল জগন্মণ্ডল দ-শ্ন করিয়া ভাক্ত বানাচারি মহাশয়ের লিথি-ত মনুবচন ও তন্ত্ৰবচনের অযথাথ অথ সৃক্প পেচক, ভীত ও মুদ্ভি লোচন হইয়া উৎকৃষ্ট স্থানে অপকৃষ্ট ও অপদস্থ হওয়াতে পণ্ডপাবণ্ড ম্ওলীস্কপ অস্থানস্ অধন অন্ধকারাবৃত শা কোট বৃক্ষের অথাৎ শেওড়াগাছের অন্তরেই পুদ্দ ভাবে আছন হইবেক,তথাপি ব্যক্ত ভাক্ত তভ্জানি গুণ্ড ভাক্ত বামাচারিদিশের মুখ,শ্যা-नन- এবং ধার্মিকদিগের মুথ,উ**জ্জ্ব করিবার** নিমিত্ত কিঞ্চিৎবিশেষ লিখন আবশ্যক হয়। ভাক বামাচারি মহাশয়, সুমত সাধন কারণ

भन्।, भा भा अ रेमथुरनत व्यवहिमावहिपान দর্শন করাইবার আশায়, নমাংস ভর্নে নে ষ ইত্যাদিমনুষ্চনের শেষ দুইপাদ, অপহরণক-**রিয়া পুথম দুইপাদদর্শন** করাইয়াছেন, তাহার কারণ এই, যে, শেষ দুইপাদ দর্শন করাইলে তাঁ। স্বারদিণ্টে চতুরাত্ স্ইতে স্থাকি ভু,ধর্মান স্থাপ-নাকাণ্কিদিগের এই পুতিজ্ঞা, যে, ভাক্ততভ্জ্ঞা-নিদিণ্টে চতুষ্লাদ্ না করিয়া ক্ষন্ত হইবেননা, সত এব য্দঃপি ভাকত বৃজ্ঞানিদিগের অপূর্বধ্র্ম দ -হিতার অত্যন্ন উত্তর, পুত্তর করণের যোগ্য **ছ**য়, তথাপিধর্মন স্থাপনাকাদি**দ**রা, কি ্রু-স্বরের যোগ্য, কি স্যোগ্য,পুতি বাক্যের পুড়ি-পদের পুত্যুত্তর পুকাশ করিলেন, কারণ, পূর্বে এক অতি বিখ্যাত বিজ্ঞ পুধান পণ্ডিত, পুথ-মতঃ উৎকৃষ্ট বোধেভাকতত্ত্বজ্ঞানিম্ন সহিত বা मानावारम भुवृक श्हेया भगार व्यथक्डे त्यार নিবৃত্ত হইয়া ছিলেন, ভাছাতেই ভাক্তভ্ৰুজ্ঞা-नी महानम्न, गृहाजिमानी अवरं अपनक कान

অবধি অনেক অবোধের নিকটেই সর্বলয়ী, এই ৰূপে খ্যাত আছেন, অতএব ধর্ম সংস্থাপনা-কাষ্ক্রিদিগের পুত্যুত্তর, সর্বাণশে অইগুণ উৎ-কৃষ্ট হইলেও তাঁহারদিগের নিকটে অপকৃষ্ট হ-**'अत्वत्र मञ्जावना, कि ज्ञानि, यहि क्वन्ट् क्र्न्न,** (य, धर्म न ज्ञाननाका किक्क मिराब वश्रामत नवा-তা এবং বিদ্যারো অন্নতা সূতরা সর্বাংশের পু হু তর করিতে অসমর্থ হইয়াছেন, এবং ম-দ্যপি ভাক্তভুজ্ঞানিদিগের বিবেচনায় **ধর্ম-**नःशानाकाष्टिकिरिशत भुजूरखतः ममूरयहे भु-ভূত্তর করণের অযোগ্য অবশ্যই হুইবেক্, ড-থাপি উত্তন, কিয়া গ্ৰহন, বাহা হউক, যদি পু• ভ্যেক বাক্যের পুত্যেক পদের পুত্যুত্তর নাক-রিয়া যথাশক্তি দুই এক বাক্যের পুতুত্তর করণ ওনানাপুকার অনুপযুক্ত কটুভাবণদারা আপনা কে পুত্যুত্তর কর্ত্তা ও সমৃক্তা এইৰূপে খ্যাত ক রেন, তবে ধর্মস•স্থাপনা কাণ্ক্রিরা, তাহার পু-ভূ/ভর করিবেননা, কারণ, তা**হাতেই কিপক্**;

পাতী কিমপক্ষপাতী, বিজ্ঞব্যক্তিদিগের তাব-তেরি বোধ হইবেকা यদি ধর্মসংস্থাপনাকাজিক। রা,কটুবাক্য কহিতেন,তবে ভাক্তভৰুজ্ঞানিদি-গের অনেকের অনেক ব্যক্ত অব্যক্ত আভ্যন্তিক मर्याष्टिक यथार्थ कर्षे वाका प्राह्न, जाहा कहिला ওকি কিছু কহিতে পারিতেননা, বিশিষ্ট বিজ্ঞ ব্যক্তিদিগের তাহাস্থবক্তব্য, সে বাহা হউক্ ভাক্তবানাচারি মহাশয়ের লিখিত মনুবচনের পূর্বাপরের বচন,ও কুলুক ভটের ব্যাথ্যা, পু-কাশ করা গেল, ভাগতেই বিজ্ঞব্যক্তিদিশের নিকটে তদ্চনের যথার্থ তাৎপর্য্যার্থ পুকাশহ-ইবেক। ননুঃ। বর্ষেবর্ষে**ংশুনেধেন যোয়জেত শ-**ত॰ সমাঃ। মা॰সানিচ ন খাদের স্তয়োঃপুণ্য কলং: **সম•। कल मूलाम्यति (स्रीय) मू नामानाक (छा-**करेनः। न ७९ कल মবাগ্নোতি यन्मा॰मপরিবর্জ্জনা॰ ে। মাণ্সভক্ষয়িতা মূত্র্যম্য মাণ্সমিহান্মহ্ং। न मा॰म जक्रा (कार्या न मरका नह रेमशूरन। भु-ব্ভিরেবা ভূতানা॰ নিব্ভিস্কুনহাফলা। অর্থাৎ

যেব্যক্তি, শতবর্ষ পর্য্যন্ত পুতি বৎসর অশ্মে**ধ** যাগ করে এব যে ব্যক্তি,যাবজ্জীবন মাণ্স ভো জন না করে, সেই দুই ব্যক্তির স্বর্গাদি পুণ্যফল তুল্য হয় ৷ পবিত্র ফল মূলভক্ষণে ও মূনিদিগের ভোজন যোগ্য অন্নের ভোজনে যেফল নাহয়, মাণসের অভোজনে সেফল জন্মে । ইহ লোকে বাহার না॰স আনি ভোজন করি, পরলোকে আমার মাণ্স সে ভোজন করিবেক 1,ব্রাহ্মণাদি চারিবর্ণের শ্বীয়শ্বীয় অধিকারানুসারে শাস্ত্র বি-হিত অনিধিদ্ধ যে ভক্ষণ, পান, ওনৈথুন, তাহা তেকোন দোষহয়না, বেছেতু, মাণ্সভক্ষণে ম-দ্যপানে ওমৈথুনে যে পুবৃত্তি, সে,ভূতদিগের ্ৰাভাবিকথৰ্ম, কিন্তু,শান্ত্ৰীয় নিয়মিত অনিবিদ্ধ মৃদ্যপান ওমৈথুন ইহার নিবৃত্তিতে সেই নহা-কল হয়, যেমহাফল, মাণসের বর্জনে হয়। এব কুলাৰ্ণৰ মহানিৰ্বাণ তক্তমাত্ৰদশী , ভা ক্রবামাচারী মহাশয়, কলিকালে জাতিমাত্রে-র বিশেষতঃ ব্রাহ্মণের মদ্যপানে কুলার্ণবের ቄ

মহানির্বাণের বচন দর্শন করাইয়া তাহাতে ধ্ব ম্প-ছাপনাকাজিকর চতুর্প্রাম্ম লিখিত ম-মাদিবচনের সহিত বিরোধ পুযুক্ত নিজপাণ্ডি-ত্যের পুভাবে বিরোধ ভঞ্জনার্থ মামাণসাপ্ত ক-রিয়াছেন, যে, ধর্ম দ স্থাপনাকা দিক্ষর লিখিত ষ্তি পুরাণ বচনেকলিযুগে ব্রাহ্মণের মদ্যপানে যে নিষেধ,সে অস•সূ,তের অর্থাৎ অশোধিত ম-দ্যের আর,মহা নির্বাণাদির বচনে মদ্যপানের যে বিধি,সে সংস্কৃতের অর্থাৎ শোধিত মদেয়র এব পুনৰার তাহার দৃঢভার কারণ শিরোনাস্তি শিরো ব্যথা, ইহারন্যায় দৃষ্টান্ত ও কহিয়াছেন, যেমন, নাস্তিকেরা, জগতের উৎপত্তিস্থিতি সণ্-हात्र कर्डा, करू, नाहे, এই कथा कहिया च রণ্যস্থ বৃক্ষে ভাহার দৃষ্টান্ত দর্শন করায়, এবং নদ্যপানে পাণ্ডিত্য পুকাশের নিমিত্ত ভাছার ইতি কর্ত্তব্যতাও দর্শন করাইয়াছেন, কিন্তু, তাঁহারা, পুথমতই কুলার্ণবাদি তম্ব মার দশ-ন করিয়া চিরকাল মৃদ্যপানে বিহুল হুইয়া

শাব্রান্তরদর্শন করিতে অসমর্থ পুযুক্ত কলিযুগে <u>ব্রাহ্মণের মদ্যপানে বিধি দিতেছেন। তাহা পু-</u> ত্যক্ষ হইতেছে, যেহেতু, ব্ৰাহ্মণাদি চারিবর্ণ অ-ধিকার করিয়া কালীবিলাস তত্তে মহাদেব, ক লিযুগে মৃদ্য শোধনের নিষেধ করিয়াছেন। यथा। न महा भूभिरवामति कविकाल कहाह-ন। পীত্বাপীয়া পুনঃপীয়া পুনঃপততি ভূতলে। উত্বায়চ পুনঃপীত্বা পুনৰ্জন্ম নবিদ্যতে। ইত্যাদি বচন দেবি সত্ত্ৰেতাৰ্দ্ধ সমতং ৷ পীত্বামদ্যং कलो प्रित तुक्षर्जा भएभएए। मजात्वजा भन्नारक यू भूभखः भन्रात्मायनः । नकत्नोत्मा-थनः मारा नाखिनाखि वद्रानान । नकखेवाः क-(लो महाभावक नगननित्ति। अर्थाए महाहित्, ভগবতীর পুতি কহিতেছেন, যে, হেদেবি, ক্-লিকালে ক্লাচ ন্দ্যপান ক্রিবেকনা, পান ক্ রিখা পান করিয়া পুনর্বার পান করিয়া পুনর্বার ভূমিতলে পতিত হয়,উদ্বিত হইয়াপুনর্বার পা-ন করিয়া পুনর্জ্রভাষ্যনা। ইতগৈদি বচন সকল,

পভাষুণ ও ত্রেভাষুগের অর্জ পর্যান্তের স**ন্ম**ভ হয়, কলিযুগে নদ্যপান করিলে পদেপদে বুন্ধ-স্তার **পাপ** হয় । নতাবুংগ **ওতেতা যুগে ন**-म्य भारत शुन्धः इय**ा कनियुक्त नम्य भारत** नाइनाइ। ७व९ मन्त्र शान् ७ कर्खका नरह। **७-**ত এব কালী বিবাস তাজ ম্দ্যশোধ্যের নিষে-ধদশনে ভাক্ত বাঘাচারির যে, কলিযুগে বুা-ক্ষাণের ন্দ্রপানের ব্যবস্থা, তাহার একণে কি দুরবন্থা হইবেক, শাস্তান্তরের অপুর্শন বিস্থি-ত ভুান্তি স্বৰূপ নহাকুজ্বটিকাতে আহুন ধৰ্ম-ग॰ সাপনাকাদিকর চতর্থপুশ লিখিত বেননারি বচনম্বরূপ সূর্য্য তাঁহার পুচওফিরণে এফণে **ঐ**रऽवञ्चात **माथाशल**व, कि मस व्हेरवना, अ-थां ९ किनयूरम नुष्कालब मम् । दिया धर्मा न हा-পনকেটিক্ষর বিথিত ন্যানিবচন, ও কলিযুগে ব্রান্ধণের মদ্যপান বিধানে ভাক্তবামাচারির ভু-वार्गवाहित्वन, छे ज्यात भाष्या (य विद्वाद,

পুনর্বার সেই বিরোধ, এবংপূর্বোক্তবুক্ষ পুরাণা-দির সহিতও বিরোধ হয়। এবং **তত্তান্তরের স**-হিত বিরোধ ও দৃই হইতেছে । যথা মহাকাল স'ছিভায়া'।মদ্য দ্বা মছেশানৈ ব্ৰাহ্মণ্যাদে ব হীয়তে । চণ্ডালত্বনবাণ্ডোতি সর্বকর্ম বিব-হ্নিভঃ। অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, মহাদেবীকে মদ্যদান করিলে ব্রাহ্মণ্য হইতে হীন, সর্রকর্ম রহিত, ও **हञ्चान जुन्छ, इराम । मुक्तिम । नहर**ाए जुन्कः लानमा भरापरिया कंपक्षन । वागकात्मा वाना-ণে:পি নদ্য নাসং ন ভক্ষরেং। অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, गहारहवीरक महामान कतिरवनना, अवर वामाहाः ব্লী ব্ৰাহ্মণ ওঃ নিশ্ব নদ্যমাৎস ভোজন করিবেন ना। वाह्यशिख्या मरमार गामर ख्या महार् रेमथुनः अहरमण्डि । मानुरयन विनः अक्ष द्राक्तरना न मात्र काली। व्यर्थाए किल्यूरम वाकारनहा मए-ना, जान्म, जना,रेमधून, अ नेत्रविन, এই পঞ্চের মরণ ও করিবেননা।

অত এব এছানে এই সংশয় কুইতেছে,যে,শাস্ত্র

সঁকলের পরস্পরবিরোধপুযুক্ত সকলশান্তই **স**পু-गान कि नकनमा अहे भुमान, जाहा उबहे अनर्थ উপস্থিত, यहि नकनमार्ज, অপুদাণকহা याय, তবে শাস্ত্র উচি, ম, ও নাস্তিকতা পুসঙ্গ হয়, যদি সকলশাত্রই পুমাণ হয়,তবে উভয়পথেই বা-হ্মণ, পাপীহন, মদ্যপান করিলে নিধিছা কর্মের ক্রণে আর্নাক্রিলে বিহিত কর্মের অকরণে, যেহে ভু, ভাক্তবামাচারির কুলাণবাদিভভার ব-हरन कवियुर्ग 🗷 नुष्कारण्ड महाभारन विधि ए-থিতেছি, আরধ্ম সংস্থাপনাকাণ্ডি**ক্ষর লিথিত** ননাদিষ্তি, পুরাণ ও তন্তান্তর, এইসকল শাজে क नियुष्य द्रोक्ष एव सम्प्रयाद निष्य ଓ ए थि-তেহি, অভএব একশান্তের প্রামাণ্য, অন্যশা-দ্রের অপ্রামাণ্য, অবশ্যই কহিতে হইবেক, ভাহাতে যুক্তি ও পুমাণ, কুর্ম পুরাণে ছিমা-লয়ের পুতি মহাদেবের বাক্য। যথা। যানি শা-ञ्जाभि मृत्रारङ लाकिश्यिन् विविधानिक । नुः जि মূতি বিৰুদ্ধানি নিষ্ঠাতেষা ছে.ভামসী। করাল

**ভৈরবঞ্চপি জামলং** নাম মংকৃতং । এবং বি-**ধানি চান্**গানি মোত্ৰাপ্ৰিতা,নিজা মন্নাস্**ই**-ে न्यत्नकानि त्माश्रीययार जन्नागात । चर्चार हेड् लातक मुंजि ख्जि विक्ब नानाणु हाइन एवं नकन শাস্ত দ্ঠ হইতেহে: ভাহার দে নিষ্ঠা,সেতাদ্দী ফনত,ঃ শুভিমৃতি বিকল্পাল্পে কেহ,কলাচ শু-দ্ধা করিবানা, যেত্তু, তদনুসারে কম্ম করিলে তাম্সী গতি হ্য, এবংকরাল ভৈরবনামেও জান্ল নানে যেতজ কৃত হইমাছে, আর এই পুকার অ-ন্য যে ২ ভন্ন, আনার ন্তিত সুয় ভাহা, কেবন লোক নোছনার্থ জানিবা, এবং এইপুরার অন্য ২ যেতন্ত্র, গামি সৃষ্টি করিয়াছি-ভাষা, এই ভবার্ণ-বে তামসিক লোক বিধের মোহের কারণ নার হয়, ফলতঃ নেসকনভাত্ত কেহ,কোনকালে শু-দা করিবানা। অত এব কলিযুগে বাহ্মণের নদ্য-পান বিষয়ে ভাক্ত বামাচারির লিখিত, যে, বৃ-লার্ণবের ও মহানির্বাণের বচন, তাহারি অপু:-মাণ্য অবশ্য**ই কহিতে** হইবেক,- যেংহতু- সেই

সকলতন্ত্ৰ, শুভি ষ্তিবিক্দা ও নানাতন্ত্ৰ বিৰু-দ্ধ, একারণ কল্লিত আগম হয়,তাহাকে অসদ। গম কহাযায়। এবং পদ্মপুরাণে 🔊 দুর্গার পুতি শ্রীমহাদেব, কল্পিড স্থাগমের স্থান্য কারণ ও ক-हिन्नाष्ट्रन । यथा । नमूह्यान्या महावीर्यम (न्यान প্যতি শেরতে ৷ অজেয়া: নর্বদেবানাং তপোরি ধূ ত কল্য যাঃ। ব্যেবতান্ মহাদৈত্যান্ জেভ ৮-র্হান কেশব। ইত্যাকর্ণ্য হরি হ্রাক্যং দেবানাঞ্চ **ভ**यात्रकः । जानवधान् विषिषाय नागाः भूक-(वाडगः। श्वीजगवानुवान। पृथ्कम् म् महावारहा (ग"-इनार्थर जुन्न दियार । भाष । ठन्न प्रमार क्यार कुकन সুর সভ্য ৷ মোহ্নানিচ **শাস্ত্রাণি কুক্ষচ ন**হান-তে। কুপালভম চমাজি চিহ্নান্যনুরপূজিত। জ্নেৰ প্ডা ভান্লোকান্মোহয়ৰ অগথয়ে। তথাপাশুপত শাস্ত গ্ৰেষ কুৰ সুবুত ৷ কলাল **লৈব পাষ্ড মহালৈবাদি ভেদতঃ। অ**বল-भागकः मभाक् (यहवाशः विकासमाः । छ-আছিধারিণঃ সর্বেভূবু তেন সংশয়ঃ। ম ╌

**নেতদবই**ভ্য পতন্ত্যেব **ন সংশ**য়ঃ।**কপাল** ভ-म वर्गाहि धादगः उ९कृतः मद्या । भाषिखेटेन-वनाज्ञञ् यत्थाकः क्ठवानहः। मट्नकारिव नेमाविना लोजमाहि दिखोनिता विह्वान्ति। নিশাজাণি সম্য অভানি চান্ছ ।ইন মন্ত্রমবইডা भा मुद्रामदेताकमाः । । जगविष्यूथाः मर्स्व जृ বুর্সমাব্তাঃ। ভ্যাঙ্ধারণ ৻ ক্রা মহোগুত মসাবৃতাঃ। মামেব পুজয়ামাসু মাংসাস্ক্চ-ন্দ্ৰাদিভিঃ ৷ অত্যন্ত বিষয়াসকাঃ কানজো-ধ সমন্তা: । শক্তিহীনাস্তু নিধী যাঁগ জিতা (स्वन्रेल्डम् । नर्द्रभ्यानिज्ञेशः कालग्रान्तः) र्थमा गिष्टि । कहां नरें नव भाव अ महारे नवा नि ক মত । অসদাগন নিত্যাহঃকৃত্বাচরণবেবচ। ইহা মুত্র গমিষ্যন্তি নরকণত্বতিদাৰুণণথে নে মত মবষ্টভা চরন্তি পৃথিবীতলে । সর্ব থর্মেচ র হিতা যুস্যন্তিনিরয়ণসদা । এব॰ দেব হিতার্থায় বৃত্তি র্দেবি বিগর্হিতা। বিভো রাজ্ঞা পুরস্,্ত্যকৃত॰ ज्याद्याद्वेष । वार्श्वेष्ठक्र भिष् पिरिभार्ग-

थ् नुद्रिवा । अर्था ८ विमशाप्त कहिए उद्ध-ন, ছেভগবতি, কল্লিড আগমের কারণ শুবণ্ क्ता भूर्विज्यमधात प्राज्ञा निम्नाम, नकनाएव-তার অজেয়, নমুচি পুভৃতি, নাহা বলপরাকাস্ত, দানব বর্গেরা দেবগণ কে অতি ক্রনণকরিতে উ দ্যত হইয়াছিল, তাহাতে দেবগণেরা, ভগবা-ন্ হরিকে নিবেদন করিলেন, যে, ছেকেশব জ মি, সেই মহাদৈত্যগণকে জম্মকরিতে যোগ্যহ্-ও, পরে 🗐 ভগবান্, দেবগণের এইসভয় বাক্য শুবণ করিয়া সেই দৈত্যগ ণকে অবধ্য জানিয়া আমাকে কহিয়াছিলেন। 🕮 ভগবান্ কহিতে। ছেন, হেকদু, ব্রমি, দৈত্যদিগের মোহনাথ পাষও ধর্ম ও নোহনার্থ শান্ত পুকাশ করু এব ন্কপাল ভম ও চম ধারণ ক্রিয়া জগ-তের লোক সকলের মোহ জন্মা ৪٠ সেই পুকা-त कह्नान,रेमव, शायक, महारेमव, हेन्छ।हि नाम তেদে পাশুপত শাস্ত্র পুকাশ কর, তাহাতে रवम विक्ष (ने से नकत मुख्य व्यवस्थ द्रिया

দ্বিজাবনেরালকলেই ভমান্থি ধারী হইবেক,পরে ভাহার দিগের মভাবলম্বনকরিয়া নকল দৈভ্যে রা, ক্ষণকালনাত্রে, নিশুয় আনাকে পরিত্যাগ করিবেক, পশাৎ ঐমত আশুয় করিয়া অবশ্যন-রকে পতিত হইবে**ক, হে পার** ভি, আনি, সেই হেতু কপাল, ভন, চর্ম ও অছিধারণ করিরাহি, এবং ভগবদাক্যানুলারে পাষ্ডাদি পাশুগত শাস্ত্র ও পুকাশ করিয়াহি: তদনস্তর আনার শ ক্তি, গৌতুমাদি হিলমকলকৈ আকর্ষণ করিয়া সেই সকল বেদবিক্জ শান্ত সন্যক্ পুকারে ক-হিয়া ছিলেন, ঐ মত্রে বিশাস করিয়া আনাকে দেখিরা সকল রাক্ষ্স, তলেগুণে আবৃত হইয়া ভগবান্কে পরিত্যাগ করিয়া ভন্মাঙ্গিবারী হ-हेदा जामाक्हे मा न अब ङानिब हाबा भूजा क রিয়াছিল, পশুত্র যেকালে সেই দৈত্যেরা জ্রমে আভ্যন্ত বিষয়ামাজ কানজোধ যুক্ত **শ**ক্তিহীন ও অতিদীণ হইল, মেইকালে দেবতারা, তাহার मिश्यु **बग्न क**ित्राहिलन, जाहात्रा, नर्ब धर्म

পরি ভুট ছইয়া কালকনে অধনা গতি পাইবেক (नरे कहाल,देनव, शाव ७, ७ महादेनवाहि मा-ব্রকে, অসদাগন কহা যায়, ভাহার আচরণ ক-রিয়া লোক সকল, ইহ লোকে ও পরলোকে **অ-**তিদাৰণ নরক পাইবেক, যাহারা, আমার এই নত খবলম্বন করিয়া পৃথিবীতে কর্মা করিবেক, তাহারা,সর্ধর্ম রহিত হইয়া সর্বদা নরকে বা-স করিবেক, আনি,দেবতারদিগের হিতার্থ এই পুকার শান্ত পুচার করিয়াছি, তাঁহা নিন্দিত জানিবা, ছেদেবি, আনি, ভগবানের আজ্ঞা গু-হণ করিয়া যেতমান্তি ধারণ করিয়াছি, তাহা क्विव अमूब्रिशित भारुनार्थ वाश्रु हिइ माज। এব॰ বরাহ পুরাণেওকল্পিত আগমের কারণান্তর কথিত আছে, সেই কল্পিড আগমের এই সৰু-ল শ্লোক। গোমা॰ন॰ভক্ষযেরিভ্যং পিবে দমর वाक्नी : । शक्षायमूनस्या स्वत्य वानवणः उभः मिनी । शख भुगृक् ठा र तथा र वना र कारतन

যোলয়েং ৷ নাভূযোনি• পরিত্যজ্য বিহরেং স**্** র্বযোনিসু। র্বনার পরনারেষু যথেচ্ং বিহরেৎ नमा । अक्नियापुनानीक जारक ए सहि ज भारतन् । অর্থাণে পুত্যইগোমা সভক্ষণ ও সুরাপান ক-রিবেক, এবং গঙ্গাযমুনার মধ্যে তপস্থিনী ঘাল রণ্ডার হস্তগুহণকরিয়া বলাৎকারে তাহাকেনৈ পুন করিবেক- এবং মাভ্যোমিপরিভগেগ করিয়া नकन (पाहिटाइ) विराद्य कतित्वक अव र्क स्रा-র কি পরদার স্বেদ্যানুসারে সর্ব্যোনিভেই বি हात कतिरवक,रकवन एक निवर भुनानी जाग করিবেক, অত এব যদি ভাক্ত বানাচারি নহাশ-য়েরা, কল্লিত আগমে শুদ্ধাযুক্ত হইয়া সুরাপা-নে আদক্ত হন, তবে তাঁহারদিগের কল্লিত অ:-পনের উক্ত অন্যথ কম্ম ও উপযুক্ত হয় কিনা? ৷ পশাৎ নহাদেব,নিজভক্ত গণকেও ঐসকলকন্নি-ভ আগনের অনুধানে উদ্যত দেখিয়া ভাঁহা**র** দিগের রক্ষণার্থ ফেৎকারীতন্তে ঐ সকল তন্তের যথার্থ অর্থ করিয়াছেন।মহানির্বাণাদি ও কল্পিত

ও অসদাগম হয়, বেহেতু, শুতি মৃতি বিকল অতথৰ ভাকৰানাচারি দিগের নহানির্বাণে নি-র্ভর করিয়া নরকে নির্বাণ বিনা পুকৃত নির্বাণের. বিষয়কি, যদ্যলি তথালি অভ্যাস দোষ বশতঃ পুনর্বার মহানির্বাণেনির্ভরকরেন, তবে তাহা-রএইপুকার অর্থে নির্ভরকরা,তাহার দিগের উ-চিত হয়।'কেলৌযুগে নহেশানি ব্ৰাহ্মণানা•বিশেষ• **७:: १ मृतंन**ग्र९ मृतंनग्र९ समूतंनग्र६ मगञ्जता **শ্মত এব দ্বিজাতীনা•মদ্যপান• বিধীয়**তোদেষ্টারঃ क्वर्यानाः वाकनो निन्तकामु हा । मुनेहीत्रमा জ্ঞেয়। মহাকিল্বি কারিণঃ,, এই মহানির্বাণের বচনে পশুর্নস্যাৎ ইত্যাদিস্থানে নঞ্জের অর্থনি-ষেধ নছে, কিন্তু, শিরশালন, এবং পুনঃপুনঃ প্র मूर्नमा९ वहें भद् भुरशाल निमृत्र वर्षरावहहै-তেছে,তাহাতে এইমর্থ স্থির হয়, যে,কলিযুগে বিশেষতঃ ব্রাহ্মণেরা,কি পশু হইবেননা,ফলতঃ व्यवनार्डे अनु इहेरवन, यंज्यव गाहाबा, किन्यू-(ग नुष्कत्वत मम् अनान विवान करत, ववर याहाता

কুলধর্মের ফলতঃ গ্রামন গরাদির কিয়া স-জাতীয় গণের ধর্মের দ্বেষ করে, এব বাৰণী নি-ন্দক, ফলতঃ শিবশক্তির নিন্দা করে, তাহারা, নহাপাতকী, ও অভ্যন্ন হইতেও অধন হয় । যদ্যপিভাক্ত বামাচারী মহাশয় কছেন,যে,ক लोगुरा मर्ल्यानि, इंड्यापि महानिर्दारात वहन, শিববাক্য, আর যানিশান্তাণি দুশ্যন্তে লোকে মিন্বিবিপর্থনিচ, ইত্যাদি কুর্মপুরাণীয়বচন,বেদ। वरामवाकर,चंठ अव (वरपरागवात्कर ब्रम्बा नि-ववात्कर्वतं वाद, किशुकादा बचान याञ्च, ज्थानि সেইকুর্মপুরাণীয়বচনকে শিববাক্যবলিয়াতা**হা** তেত্রীহারদিগের **শু**দ্ধাকরিতে হইবেক,যে**হেতু**, ভাঁহারা সাধন পুকরণের শিববাক্য ব্যতিরেকে তাবৎ শিববাকেট্ আদর করিয়াথাকেন, যে-মন, মহাভারত নামক ইতি হাসের অন্তর্গত ভগবদ্গীতার ভগবদ্বাক্যত্ব পুরুক্ত ভাছাতে শুদ্ধা করিতেছেন,যদি,কি শিববাক্য, কি পুরা-গাদির বাক্য, খাঁহাতে সুরাপানাদির বিশিক্ষাছে,

কেবল তাহাতেই শুদ্ধা করেন, এবং অন্যহ পুরাণাদি শান্ত, पূর্ত পুলাপ, অর্থাৎ মিখ্যা ক-(रून, তবে, তাহাতে धर्म म॰ शामनाकािकत्रः, कर्भ दृश्य रुखद्वय चाष्ट्राप्तन कतिरवन, रश्रह्कु, रन বাক্য, অশ্বোভব্য ও অগ্রান্ত । অভগ্র **মৃতি** শাস্ত্র, কহিতেছেন। বেদাঃ পুনাণ মৃতয়ঃ পুনা-१९ वर्षार्थयुक्क वहनः भुमानः। यम्रभुमानः न-ভবেং পুনাণংক खमा कूर्या मृहनः शुमागः I অর্থাৎ বেদ,মৃত্তি, ও ধর্মার্থ যুক্তবর্চ্ন,ফলতঃ ইতিহাসপুরাণাদির বাক্য,এইসকল পুর্কাণহয়, কিন্তু, যেব্যক্তির সম্বন্ধে এইসকল পুমাণ, অপুমা• ণ হয়, তাহার বাক্য, পুনাণ করিয়া কে, গুহণ करत ! विकक्षा विकक्ष नाना शुकात नाज मन्दर्भ-त निषक क्षेत्रा क्षितानय, मक्राप्तवरक **अहे** नुम क्रिशाहित्वन, (य, विक्का विक्क नानाविध ना-জ্র দর্শন করিতেছি, ইহার মধ্যে কোন্শাজ্ঞ, ব্যবহার্য্য, কোন্শান্তবা, অব্যবহার্য্য, তাহা-তে সকলআগমেরকর্তা, ওতত্ত্বৈত্তা,শ্রীমহাদেব

স্বয়ং উত্তর করিয়াছিলেন, যে, শুতি মৃতি বিৰুদ্ধ, যেসকলশান্ত্ৰ, তাহা অব্যবহায্য । এ-**ব•**, ভগৰতীর**পুতি শ্রী**মহাদেব্য কল্লিত আগ*ে*র যে কারণ কহিয়াছেন, ভাহাওপদ্ম পুরাণে ও ব-রাহ পুরাণে দেদীপ্য মান আছে,সেইসকল বা-ক্যই, কুর্ম পুরাণে ওগন্মপুরাণে ভুন পুনাদাদি-রহিত বেদব্যাস কর্ত্ক, অবিকল লিখিত হয়, যেবন,মহাভারতে ত্রীকৃষ্ণাব্জু নসম্বাদ,তৎকতৃ ১ ক, লিখিড হইয়াছে, একারণ সেই কুর্মা পুরাণীয় পদ্মপুরাণীয়শিবাবাকেয়য়য়য় ভংকরানাচাল রির লিখিত,কলৌযুগে মহেশানি,ইত্যাদি, শু.-ভিষ্ণৃতি বিৰুদ্ধ মোহনাৰ্থ কল্পিভ, সসদাগন, সু-তরা সকলের অগান্থ হইবেক, ইহাতে কোন আশক্ষা নাই৷ অভএব বৃহম্পতি,কহিতেছেনাবে-**भार्श्वायः मृत्रः ब्हा ७ छ बा** छानः ज्वर पि । अवि-ভিৰিশিতে তত্ৰকা শঙ্কাস্যা নানীবিণাণ অৰ্থাৎ विनामि भाष्ट्रित (य व्यर्थ, नृद्धः छ्वाठ रुरेग्नार्ह्, তাহাতে যদি সংশয় উপস্থিত হয়, তবে প্ৰবি-

গণ কর্তৃক, সেই অর্থ, নিশুত হইলে পণ্ডিতদিশ গের আশকার বিষয় কি ৷ অতএব কলিমুগে ব্রাক্ষণের মদ্যপানে ভাক্তবামাচারির যে অধি-কারিভেদে ব্যবস্থা, তাহার দুরবস্থা পুযুক, ভাঁহারা,এক্ষণে মৃতি পুরাণাদি শাজোক বুদ্ধ-হত্যাদি দোষপুত হইয়া মদ্যপানে নিরস্ত কিয়া-নরক্ত হইবেন কিনাই!:

কাল ভেদে বিষয় ভেদে ও অধিকারি ভেদে ব্যবস্থা সেই ছলে হয়,বেছলে সকলিত শান্ত্ৰণু-যেরপরস্পরবিরোধ্হয়,কল্লিতওমকল্লিডশাল্লের পরস্পর বিরোধস্থলে কিন্তু কল্লিভশাজের অপ্যামা-ণ্যই সর্বজনের মান্য,যেমন,সমূলক মৃতি পুরা-ণাদির পরস্পরবিরোধে বিষয়াদি ভেদে ব্যবস্থা কুরা,বায়, কিছু,সমূলক ওলমূলক মৃতিপুরাণা দির পরস্পর বিরোধে অমূলকইত্যক্তা হয় থেবং এক শাস্ত্র, অমান্য করিলে তাহাতে কি, অন্য-শাস্ত্র, অনান্য হয়, শুভিষ্তির বিরোধে ষ্তিরঅ माना जाय कि . मुजित समाना जा द्या कि मनुम् जि

ও অন্যশ্তির বিরোধে অন্যশ্তির অনান্তা-য়ৢ,ননুষ্তির অমান্যতাহয়ৢ,বর্ঞ অধিক মান্য-তাই হইতেছে।যদিবল যেমন,পুরাণে তল্কের হে-মত্ব সূচক বচন আছে, তেমন,তত্ত্বেও পুরাণাদি-র হেয়ত্ব সূচক বচন দেখিতেছি,তাহা গ্রাহ্য ক-**রিলে পুরাণ ও তন্ত্র পরস্প**র খণ্ডিত হইয়া উচ্চিম হয়। যথা খ্রীভাগবতে। নিমুগানা থথা शक्रा (हवाना महूरला यथारिवक्षवाना॰ यथा मः द्धः भूद्रागानीमिह ज्था। तुक्तरेववर्ज्जाभाविका य्रथा द्रांधा कृष्कमा (भुग्नभीयुष्ठ i द्वेन्द्रीयु यथा ल-স্বীঃপণ্ডিতেষু সরস্তী।তথাসর্রপুরাণানা বুন্ধ-रैववर्ज्ड स्मवह। व्यर्थाए (यमन्,नमीत्र मस्प्र गन्ना, দেবতার মধ্যে একৃষ ও বৈষ্বের মধ্যে মহাদেব শ্রেষ্ঠ তেমন,পুরাণের মধ্যেশ্রীভাগবত এবংষেমন 🕮 কৃষ্ণেরপ্রেয় দীর মধ্যেরাধা প্রাণাধিকা, ঈশ্রীর মধ্যে লক্ষ্যী,ও পণ্ডিতেরমধ্যে সরস্তী, তেমন, সকল পুরাণের মধ্যে বুন্ধবৈবর্ত্ত পুরাণ শুেষ্ঠহর, অন্যংপুরাণেও এইপুকার আছে। মহা নির্বাণে

। নানেভিহাসযুক্তানা॰ নানামার্গ পুদর্শিনা॰ । वज्ञाना श्वागाना विनात्मा खविजा खूवि। মন্মাৰ্গবিমুখা লোকাঃ পাৰ্ভা বুক্ষবাভিনঃ৷ অ-का मनाज मूरम्बा (यारनानाजमूशामुखर। বুক্ষ্ পিতৃহা জীব্:সভবে মাত্র সংশয়ঃ।মহজুা দুত্বিত পর্ম ত জ্বান্য পর্মা নীহতে। অমৃত সুগ্ছে ত্যक्। की व मार्क न वाक्षि । यद्र मनगराक् পে পতিতাঃ পশবঃ প্রিয়োম জামন্তি পর• তত্ত্ব্ वृथा नन्मां । भाई । भाई । अर्था ए जनद्रोत भुषि মহাদেব, কহিতেছেন।ছেপার্বতি, নানাইতি-रामयुक्त ও नामा পথ পুদর্শক, यभूतान माज, ভাষার নাশ হইবেক, আমার এই পথে বিমুখ যে সকল লোক, ভাহারা, পাবওও বুক্ষঘাতক **হ্**য়, অতএব আমারএইমত পরিভ্যাগ করিয়া যে, অন্যমত আশুয় করে, সে ব্রহ্মন্ব, পিতৃন্ধ ত্রীবৃহয়, ইহাতে সন্দেহ নাই, আর আমার মুথ হইতে নির্গত ধর্ম পরিত্যাগ, করিয়া যে,

অন্য ধর্মের আশ্রিত হয়,সে, সৃগৃহ ছিত অমৃ-ভত্যাগ করিয়া অর্কনীরঅর্থাৎ আকদেরে আ-है। वाक्षा करत्र, अवे॰ वर्फ मर्भन स्वतंत्र महाकूर्ण পতিত ইইয়া পশুগণেরা, পরমতন্ত্ জানিডে भारतमा, क्वल वृथा ४४ रुट्रेट्ड् । এছारन वि-জ্ঞর্ব্যক্তি সকলে, বিবেচনা করিবেন, যে, পুরাণে তত্ত্বের নিন্দাবোধ হয়, কিডকো পুরাণের নিন্দা জ্ঞাপ হইভেছে, ঞ্জীভাগবভাদির শ্লোকে কে-ব্ল তত্তদু,পুছের উভমতা কহিতেছেন, অভ-এব তত্তদ্পুছে লোকের শুদ্ধাতি শয়ার্থ তত্ত্ব **চনকৈ উভদ্পুঁছের স্তাবক কহা বায়**,একের স্ত∸ তিবাদে অনে।রনিন্দা কুজাপিকেছ কছিবেমনা এবং কুর্মা পুরাণে ওপন্ম পুরাণে সম্ব তন্ত্রকর্ত্তা, स्टार्टिक, खरार भीमा अरु स्टेश शृह्य हिमान দ্বৈর পুতি ওভগবতীর পুতি শাঙ্কের বেমীমাণ-भा करिशाहिला, जाहाहै (यस्वाम भुकाम-করিয়াছেন, তাহাতে তব্রশাব্রের নিন্দার পু-नक अ नाहै, रक्दन लांकि किर उठा गु। श किर

অপু। ছ তাহার নির্ণয় করিয়াছেন, যদি একব্য ক্তি, রঙ্গরীক্ষক, বহুরণ্ডের মধ্যে কোন ২ রণ্ড্র-ক্ষে অপক্ষ কছেন,তবে ভাহাতে কি, রহুজাতি-র নিন্দা হয়,কি সেইবাক্য,যে,পুকাশ করে,ভা-**रात्क निन्मक करा याग्न, यिनिन्छ अर्ह निन्मि** ভ হয়, কিন্তু, সেইনিন্দিত বস্তু, সকললোকের অপাত্র হয়না, বাহারা,নিক্তি, তাহার্দিগে-রি প্রাক্ত্র । মহানির্বাণাদি তত্ত্বের বচনে কিন্তু কেবল পুরাণাদি শান্তের নিন্দাবোধ ইইতেহে, যেহেতু, সেইবচনে তৎপথবিমুথব্যক্তি সকলের পুতি পাৰণ্ড ও বুক্ষদাতক ইত্যাদি শব্পুয়ো-গ, এবং পুরাণাদি শান্তকে অর্কনীর, এক বড্ দর্শনকে কৃপ কহিতেছেন। উত্তমের রীতি এই, যে, পরের পুসংশার দ্বারা আপনি ও পুশংসিত ছন, অধনে তাহার বিপরীত, অর্থাৎ পরের নিন্দার দারা আপনি পুশংসিত হুইতে ইচ্চাক-রে ভাস্যও কি হয়,পরের যে নিন্দা,দে পরের রং হে,ডাছাড়ে কেবল আগনিই নিন্দিত হয়,কিছু,

যাঁছার নিন্দা করে,ভেঁহ নিন্দিত হইলেও পু**ল**• মিত হন, যে**হেতু,পুশ্**ংমিত ব্যক্তির স্বভাবএ-**ই, যে পুশ**ণসিতেরি স্বৰূপাখ্যান পু**শণ্**সা করে<sub>ণ্</sub> ন, নিন্দিতের এই স্বভাব, যে, পুশংসিভেরি নিন্দা করে,ইহা পুসিদ্ধই আছে। যদ্যপি ভাক্ত-ৰামাচারী মহাশয়, কছেন, যে, মহানিৰ গািদি তত্ত্র, অমদাগম,একারণ অপুাছা ও অপুমাণ হ-ইলে ও তথাপি পুরাণাদির মতাবলম্বী ও মহা-্নির্বাণাদির মতাবলম্বী এই উভয়েরি তুল্য ফল, বেছেভু, পুরাণাদির মতাবলম্বি দিগের ইহ লো-কে নানাবিপ্তবুত নিয়মাদি তপংক্লেশ ক্লিষ্ট হই-য়া পরলোকে পরমসূথ হুইবেক,আর মহানির্বা১ भू कि जनमाश्रामत मजावनश्चि मिर्शत हेर लाक हे यत्थक्षे सम्प्रसा॰माहि आहात क्षे भूक्षे हहेसा चहुन्त कदनी शमनाहि नानाविश्रम्थ मासाश रहे. তেছে,পরবোকে কাহার কিহয়,তাহা কে দেখি-য়াছে,ও দেখিবেক, ভাল, যদি ভাক্ততত্ত্বজ্ঞানি-মহাশয়েরা, হতপরলোক হইয়াও ধর্ম র হা পনাকাভিক্ষ দিখে জয় করিতে ইচ্যু করেন, তবে বৌদ্ধেরা,কিঅপরাধ করিয়াছে, বরঞ্চ তাহারদি-্মে ও উত্তম কহা যায়, যেহেতু, তাহার দি-গের মতে यहानि পরলোক নাই, এবং সুগন্ধি পুত্ৰমাল্য দিব্যান্ধনাদি সম্ভোগ জনিত সুথ, ও দশদখাভ্যন্তরে অভিল্বিত্রুব্য ভোজনই স্বর্গ, এব মৃত্যুই অপবর্গ হয়,তথাপি তাহারা,অহিণ সাকে পরম ধর্মা কহিয়া থাকে, তোমরা, ছিং-সাকেই পরম ধর্ম করিয়া কছ। এবং মহানি-র্বাণের সহিত যদি কলিযুগে ব্রাহ্মণাদির মদ্য-পান নির্বাণ হইলেন,তবে তাহার পরিসংখ্যা বিধি ও সুতরাং নির্বাণ হইবেক বেমন, সর্ম পলায়ন করিলে ভাছারসহিত পুদুও পলায়ন করে। এবং ধর্ম সংস্থাপনাকা ছিকর লিখিত **ষ্তি পুরাণাদি বচনে ব্রাহ্মণাদির মদ্যপানে** নিবেধ দশনৈ শূদুভাকতত্ত্বজ্ঞানি মহাশয়েরা, লম্, উল্লম্, পুলম্ন পুদান করিবেন না, থেছেভু শৃদু কনলাকর গৃত পরাশর বচন দর্শন করিলে

कॅंग्डाब निरंगद्वा वाकादाय, ও अन्तिया, इहे-विक । यथा शत्रामदः। उथा भए। मान् न जुष्किनीयम्पनः। (विषाकत विष्ठात्तन भूमु भान **खानछा॰ बुर्जिए। व्यर्थाए मृमुकाछि, यपि महा**न **थान, ब्राम्मभौथमन, किया व्यक्ति विठाइ कर्दिन, ভবে ভাঁহার দিগের চণ্ডালজাতি প্রাপ্তি** হয়। অবং লপক্, কিয়া বিপক্ষ, হুইবেন, জাকা-**দীশন্ধর**নামে একব্যক্তিকে, ইতি মধ্যে উত্থাপি • ত করিয়া ধর্ম সংহাপনাকাতিককে জয় করিবার আশায় ভাক্তবামাচারি মহাশয়, আবাচ নাৰে চতুর্থ দিবলে ভাঁহার এক পুন্নও আপনার উত্তর **পুকাশকরেন,সেএই পু**কার হয়।হতে ভীম্মে হতে দ্যেণে কর্ণেচ বিনিপাতিতে ৷ আশা বলবতী রাজন্ **শলেগ জেবগতিপাও**বান্ অর্থাৎযেমন, কুকপাও त्रित युष्कपञ्छ जीया, प्नुगा, ७ वर्ग, नष्टे स्ट्रेल कूक শেষ্ঠ, পাওব বিজয়ার্থ শল্যকে রথোপছ করিয়া (नुद्रा कदिशाहित्वन, आमा, कि, दलवजी, म-**দ্যও পাওব জন্ন ক**রিবেক, সেই শল্যও প্রই

সকল মৃতি পুরাণ তন্ত্র যুক্তি দৃষ্টান্ত স্বৰূপ স্বন্ধ শদ্রের দারা এই মহাবাপ্যুদ্ধে বাণেবভার প্ৰীভ্যৰ্থ আগত মাত্ৰেই ধৰ্মসং, স্থাপনাকাৰিক কভূকি, নিহত হইলেন, যেমন কুক্পাওবের বুদ বজে বজেশ্রের প্রতির্থ আগত মাতেই পুক্ত শল্য নহারাজ যুগি ঠির কর্তৃ ক হত হই-য়াছিলেন। সেই পুল ওউত্তর, বাঁহার ছিপের দৃষ্টিগোচর হইয়াছে,ভাঁহারদিগের বিলক্ষণ বেশ ধ হইবেক।তাহার সংক্ষেপে বিবরণ করা ফাই-তেছে ৷ পুন ৷ধর্মসংস্থাপনাকাভিকর চতুর্থ পুন্নে র উভরে আপনি তক্তের পুনাণ লিখিয়াছেন, এছানে আমার জিজ্ঞান্য এই যে, কুর্মা পুরাশে वानि नाजानि मृनारङ लारकश्यान् विविधानिक । 🖫 ভি মৃতি বিৰুদ্ধানি নিষ্ঠা তেবা হি তামনী। ইত্যাদি বচন লিখিয়াছেন, ইহার সিন্ধান্ত আ-পনারা, কি করেন। উত্তর, আমরা ধর্ম সঁ স্থাপ-নাকাণিকর চতুর্থ পুশের উত্তরে ২৩ পৃঠে ২০ পী কি অবধি ওই পুশের উত্তর দুইপুকার লিখিয়া-

ছি, পুথম, এক শাত্রকে অমান্য করিলে অন্য শাত্র মান্য হইতে পারেনা, দিতীয়, এহানে বি-রোধই হয়না, বেহেড্, সংস্কৃত ও অসংস্কৃততে-দে এবং অধিকারি ভেদে মদ্যপানের বিধিও নি-ষেধ, অধিকন্তু, সকল শাত্রই মান্য হয়, বদ্যদি মৃতি পুরাণাদিই মান্য, ও তক্ত্র অমান্য হয়, তথাপি উভয়ের উভ্য রক্ষাপায়, মৃতি পুরাণ্-দির ম্ভাবলম্মিদিগের প্রণোক ও তক্ত্রমভাব-লম্মি দিগের ইহুলোক।

ত ভাকত ব্জানির উত্তরাধবনী কি অন্যজাতি পরদারমাত্র গমনে সর্বথা পাতক এবং দেব্যক্তি দক্ষ্য ও চণ্ডাল হইতে ও অধন কিছু তজোক শৈববিবাহের দ্বারা বিবাহিতা দেব্রী সে বৈদিক বিবাহের জীর ন্যায় অবশ্য গম্যা হয়। বৈদিক বিবাহের জী জন্ম হইবা মাত্রেই পত্নী হইয়া সঙ্গে ছিতি করে এমৎনহে বরক্ষ দেখিতেছি যাহার সংক্তিত করে এমৎনহে বরক্ষ দেখিতেছি যাহার সংক্তিত করে এমৎনহে পরিক্ষানা সেইজীয়ি বুজানর কথিত মজাবলে শরীরের অন্ধান্ধ তাগিনী অং

🗗 হয় তবে মহাদেবের প্রোক্তমক্রেরহারা গৃহীতা বেক্সী সেপত্নীৰূপে গ্ৰাছ কেন না হয়? শিবোক শাজের অমান্য যাহারা করেন সকলশাভ্রকে এ ক কালে উদ্ধ তাঁহারা করিতে পারণ হয়েন এ বংতবোকে মন্ত্রগৃহণ ও অনুষ্ঠান তাঁহাদের ব্-था रुहेया जाहार द्वा भवनार्थ नईशा विक्त रुय । थानाथारा ७ गन्यागम्य माजनुनात रस ला-শরীরের সাক্ষাৎরসযেদুগ সেশান্ত বিহিত হই-ब्राष्ट्र व्यञ्जव थारा इहेन व्यात गृक्षनारि याहा পৃথিবীতে জন্মে অথচ স্তিতে নিবেপ্পুযুক্ত সার্ভ মতাবলম্বি.দর তাহা ভোজনে পাপ হয় সেইক-প মৃতিবচনে সভ্যত্ত্বেভাদাপরে ব্রাহ্মণ চভুর্বর্ণের কন্যাবিবাহ করিয়াও সন্তান জন্মাইয়াও পাত-কী হইতেননা দেইকাপ সাক্ষাৎ নহেশুর প্রোক্ত व्यागम गुमारा मईबाडि मकि रेमरवादार गु-হণ করিলে পাতক হয়না এসকল বিবয়ে শান্তই কেবল পুমাণ ৷" যথাবেয়োজাতি বিচারোত্র শৈ-বোণাহেন বিদ্যতে। অসপিতা ভতু হীনা মুণুছে হৃষ্টু শাসনাৎ ,,।মহানির্বাণ । শৈববিবাহে বর্ষ ও জাতি ইহার বিচার নাই কেবলসপিণা নাহ-য় এবং সতর্কা নাহয় তাহাকে শিবের আজ্ঞা বলে শক্তিকপে পুহণ করিবেক। কিন্তু যাহারা আর্তমভাবলয়ী ও যাহাদের উপাসনা মতে শৈবশক্তি পুহণ হইতে পারেনা অথবা যবনী কিয়া অন্য অন্ত জ্বীকে গমন করেন তাহারা-ই পূর্বোক মৃতি বচনের বিবয় হয়েন অর্থাৎ সেইব আভি প্রাপ্ত অবশ্যই হয়েন। ইতি॥

ধর্ম মং ছাপনাকাশিকর পুতু এবর ৷ বদ্যপি
পূর্বোক মৃ ভিপ্রাণ ও তত্রশাত্রমকণ অত্রশত্রের মারাইশৈব বিবাহেরো নাশাকণ চিন্নইয়ালে, তথাপি এছানে কিঞ্জিং বিশেষ উজির নিমিত পুনর্বার পুতৃত্তি ছইতেছে, শিবোক তত্র
লাজ্য অমান্য করিলে তাজোক মত্তগৃহণাদি নির্থ হইয়া তাহারদিগের পরমার্থ ও নই হয় এথথাখ, কিন্তু, শিবোক অক্সিতত্ত্র বাঁহারা,
মান্য করেন, তাঁহারদিগের পরমার্থ হানির বিব্
রুকি, পরস্তু, শিবোক মোহনার্থ ক্সিত তত্ত্বে

শীহারা,নির্ভর করিয়া যথেষ্টাচারকরেন,ভীহার্ দিগের কি পরমার্থ হইবেক?, এবংখাদ্যা খাদ্য, ও গম্যাগম্য শাজানুসারেই হয়,অতএব বিশি• ই লোকেরা, যথার্থ শাস্তানুসারেই তাহার ব্য-वहात कत्रियाथात्कन, किचु, याँ हाता, अय्थाय ক্রন্থিত শাজে শুদ্ধা করিয়া খাদ্যাখাদ্যের ও গ-ম্যা গম্যের বিচার না করেন, তাঁছারদিখে স্লে-রু, কিপশু, কহা যাইতেপারে?, এবং এই **শৈ**ব-বিবাহে বয়স ওজাতির বিচার নাই কেবল সপি-खाख नष्या ना **र**हेरलहे हहेरछ भारत्र, किंडू, अञ्चारन रेग्गविवारङ्ज वरवञ्चाशक सङ्ग्रमञ्जरक এই ব্যবস্থা बिद्धाना कत्रि, (य्याँश्वात्रा, बदनी शम् নে ওব্যেশ্যাসেবনে সর্বদারত,ভাঁহারদিগের স্ত্রী ও বিধবাৰল্যা, যদি তাহারা, সপিণ্ডা না হ্যু ভবে ঐ সকলজীকে শৈববিবাহ করাযায় কিনা? পরস্তু, অসুর্গ্য লোকবিদ্বিষ্ট ধর্ম্য মপ্যাচরে মন্ত অর্থাৎ লোকের বিশ্বিষ্ট যে কর্ম,তাহাশান্তীয় হুই, লেও সুর্গের বিরোধি হয়, তাহা বিশিষ্ট লোকের আচরণীয় নৃত্বে, এইমনু বচনে বে কম্ লোকের

দ্বেয় হয়, সেজবশ্যই নরকের কারণ, অত এব বিশিষ্টলোকে, কদাচ তাহার অনুষ্ঠান করিবেন না, এই পুকার বোধ হইতেছে, অত এব শৈব বিবাহ যথার্থ হইলেও সজ্জনদিগের কদাচ ক-ওবি হয়না।

এব ভাকত ভ্রজানির অপূর্বধর্মস হিতার ২৪ প্ঠের ১৪ পংক্তি অবধি ২৫ প্ঠের ৪ পর্টক্ত প-র্যান্ত, আর ২৬ পৃষ্ঠের ৮পটিক্ত অবধি ১১পটিক .शर्याञ्ड,रय**म**कन कढुवाकाचार्ह्य,जाहाद्व**शु**ङ्गङद्गुं পূর্বেই করাগিয়াছে,পুনঃপুনঃকরণে কেবল পৌ-নৰুক্ত্য ও লোকের বৈরক্ত্য হয়। অলমতি পল্ল-বিতেন ইতি 🛭 শ্রীমন্ধর্ম দংস্থাপনাকার্ডিক্ষবিরচি তে পাৰওপীতননামক পুত্ৰুত্তরে কৌল্ফুল ছৎ কল্পনো নাম চতুর্থোল্লাসংসমাতঃ গ্রেছংকল্পু १ मकारा २१८८ । वाक्ला जन २२२२ । २० माव শ্ৰীমতা ধীমতা কেন ধৰ্ম সংস্থাপনাথিনা।নিবক্ষো **থ্য়** কৃতঃ কেন্ কৃতিনা সহকারিণা। সন্মতিং जन्नजिः, भाष्ठिः, मम्भविः, याषु शम्पि काः। वि-দুবস্থু দুত্ত পণ্ডা: পাৰ্ডা: কর্ম কটকা:। ইতি



































Karma Mandir Book and lers





